

## कंजूस का बैट्टा

एक बार एक कंजूस का बैट्टा,  
छात्रों में चानी की कड़क,  
मैंने नजर लगायी,  
जोशिम में डाली,  
दूसरे दिन कंजूस मेरे पास आया,  
मेरे मेरे को बचाने वाले  
बैट्टा फर्ज था।।  
जहाँ था वहाँ गया।  
मेरे बैट्टे की जैब से एक नोट कहीं गया।  
चानी में वह गया।।  
बैट्टा भट गया।।  
और अपनी छात्र,  
और उसे बचा लाया।।  
और बोला आप ही थे,  
कैसे कहा यह तो  
वह बोला फर्ज,  
पहले ये बलाखी



मोहन शिवगरी  
कम्पोज़ ८ अ



## वन का उपकार

वन न होता तो रान भी न होता, न होता किसी का घर द्वार।  
नोपन न होता, ईश्वर न होता, महल न होते न होते दीवार।।  
फूल न होते, फल न होते, अन्नध की लकड़ा या होता संसार।  
वेद व्यास और कालीदास भी न कर पाते संस्कृति प्रचार।।

अरे मूलतः वनी तो तू किया कर इस पर तनिक विचार।  
विपिन से ही हुआ करता है मानव का कितना उपकार।  
अनुपम मिथि इसी में निहित है स्वर्ण सुखों का संसार।  
वना एक सनी तृप्ति होते, पसला है सनी का अवहार।।

उदित हुआ मानव अविरत लकड़ा किया जिसने विपिन को प्यार।  
जड़ी बूटियों का संभालन्य है, करने का बैसाक उपकार।।  
शक्ति प्रदायी का स्वर्ण है यही और वनों का भी भण्डार।  
महान निर्माण करने में, केवल वनी है एक आधार।।

वेद-वेदल भी करता है सदा वन के ऊपर ही दुष्टि नोषार।  
अनादुष्टि के कारण को भी, अब समझ गई है भारत सरकार।  
वन वना के कितने ही उपाय अब किये जा रहे हैं वैचार।  
वन नहीं वह राष्ट्र वन है सदा करो इस पर विचार।।



प्रमोद झा  
कम्पोज़ कम्पोज़िटा  
कम्पोज़ ९ अ

## परिश्रम का महत्व



आजकल के बाग-बोड़ वाले युग में हमें अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। "चुनौतियों को खोजने के लिए हमें कड़ी जाननी है, वे पल-पल और पल-पल हमारे लक्ष्य द्रस्तुत रहती हैं।" प्रस्तुत कथन स्वामी चम्पलीय का है। यदि हमारे सामने कोई विषय चुनौती आ जाए तो हमें उससे डरना नहीं चाहिए वरन् उससे विजय प्राप्त करने का संकल्प कर उसका सामना करना चाहिए। तभी हम उस चुनौती पर विजय प्राप्त कर पाएँ।

सहनशील और परिश्रम के बिना हम अपने किरिती भी कार्य में सफल नहीं हो सकते क्योंकि सफलता प्रथि में परिश्रम का बहुत बड़ा महत्व है। एक परिश्रमी व्यक्ति को सफलता के लिए जिन चीजों की सबसे अधिक जरूरत होती है वो हैं हिम्मत, प्रबल विचार और आत्मविश्वास। वे सभी चीजें एक मनुष्य को सजीव बनाती हैं। परिश्रम करने से मनुष्य के भौतिक गुणों का विकास होता है और उसे कम कुशलता प्रष्ट होती है।

*"बोला: कर्मसु परिलतम्।"*

जब आदमी परिश्रम करता है तो उसे परिणाम की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। उसे जो भी कार्य मिले उसे पूर्ण करने में उसे अपनी समस्त शक्ति लगा देनी चाहिए। इतिमट ने कहा है, "परिश्रमी व्यक्ति इस बात का विचार नहीं करता कि श्रेष्ठ शास्त्र की रचना करने का समय है" परिश्रमी व्यक्ति की सफलता के प्रधान कारण है सहसा, सहनशक्ति, आत्मनिर्भरता और आत्मनिर्पण्य। सफलता पाने के लिए मनुष्य के मन में एक और चीज होनी चाहिए और वो है एक आशा। हेलेन कैलर ने कहा है "आशावाद ही वह बन्ध है जो सफलता की ओर ले जाता है।

यदि मनुष्य परिश्रम नहीं करेगा तो उसे अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। उसके मन का आत्मविश्वास डगमगा जाएगा और उसके मन में भय पकड़ने लगेगा। प्रसिद्ध रचनाकार जेक्सलीयर का कहना है, "मनुष्य के जीवन को नष्ट करने वाले विचारों का औजार है - भय, भय के कारण लोच आकांक्षाएँ नष्ट हो जाती हैं और सफलता की राह में बाधा पड़ जाती है"।

मनुष्य के लिए यह जरूरी है कि वह सफलता के न मिलने तक परिश्रम करता रहे। उसे एक लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए और उसे प्राप्त करने के लिए परिश्रम करना चाहिए। यदि मनुष्य ने निराशा और भय को त्याग दिया और लगातार परिश्रम करता रहा तो उसे अपना लक्ष्य अवश्य मिलेगा और सफलता उसके कदमों में होगी।

लखन सुमेर

P. 28





## हिन्दी है, हम बतान हैं, हिन्दोस्तानी हमारा



गीत की यह पंक्ति राष्ट्रीयता का, एकता, प्रेम और भाईचारे का संदेश देने वाली है। स्वर्गीय सावर अलग-अलग इकबाल ने इस पंक्ति को अपने भीतर समाने वाले प्रसिद्ध गीत 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा' की रचना उन दिनों की थी, जब महात्मा गांधी जैसे नेताओं के नेतृत्व में यह देश भारत ब्रिटिश साम्राज्य से छुटकारा पाने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर अपना राजनीतिक-सांस्कृतिक आन्दोलन चला रहे थे। स्वतंत्रता किसी एक प्रबल से नहीं मिल सकती, बल्कि उसके लिए सारे देशवासियों को मिलकर प्रयत्न करना पड़ता है। हम सभी क्योंकि हिन्दोस्ताँ में निवास कर रहे हिन्दी बानी हिन्दोस्तानी एक हैं, यह हमारा अपना बतान या देश है, अतः इसे स्वतंत्र बनाने के लिए हम सभी को मिलकर प्रयत्न करना चाहिए, यही पवित्र एवं भावनात्मक संदेश गांधी बापूजीश्रीवों तथा पहुँचाने के लिए सावर अलग-अलग इकबाल ने यह गीत और उसकी उपरोक्त पंक्ति की रचना की थी, जगमग लगी भारतीय इस तथ्य से परिचित हैं।

स्वातंत्र्य-संग्राम के इतिहास से थोड़ा-बहुत परिचय रखने वाले भी यह अच्छी तरह जानते हैं कि हमारा यह देश अनेक सम्प्रदाय-संस्कृतियों से मिलकर बना था और शासक 'बीरो और राज करो' की नीति अपनाकर, जाति-धर्म के नाम पर देशवासियों को अलग कर रहे थे। महात्मा गांधी जैसे नेता तो सभी जाति-धर्मों में एकता बनाए रखने का प्रयास कर ही रहे थे। हम स्वर्गीय सावर को कान्ता पड़ा—

*"सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा।*

*हम तुलतुलते हैं इसकी यह सुनिश्चता हमारा।"*

अनिल शर्मा

कक्षा 9 अ



## ईश्वर के लिए मेरा विश्वास



मैं ईश्वर के ऊपर बहुत विश्वास करता हूँ। इस ईश्वर के ऊपर विश्वास करने हैं और हम जानते हैं कि सभी के कारण यह संसार, मनुष्य, जानवर, नदियाँ और पेड़ बने। यह हमारी रक्षा और मार्गदर्शन करता है। वह हमारे पाप माफ़ करके हमारे अच्छे बनने की प्रेरणा देता है। वह सब मनुष्यों को एक सा शरीर और एक ही बुद्धि देता है। बस हम ही हैं जो पलक लाली पर चलते हैं। गाँव या शहर में कुछ अशुभ होने पर अकारण ही मनुष्यता की जाती है। वह सोचता है कि इस से भगवान खुश होंगे। पर ऐसा नहीं है — वह सोचता हमारा अच्छे विश्वास है। मैं ईश्वर पर विश्वास करता हूँ क्योंकि वह सबका सहायक है और सबकी मदद करता है।

अनशुभ अनशुभ

4 अ

## कक्षा नौ ब

नौ 'ब' है पेरी कक्षा का नाम,  
 बुद्धिमान, दया भवान् इत्येव नाम;  
 पर 'नेगेटिव क्वालिटीस' पर न जाये,  
 क्योंकि वह है छुपे हीरो की खदान।



राहुल के पास जाओ, 'कॅमेस्ट्री' में सी जैक जाओ,  
 निरुप के पास जाकर 'जगदल' पीलेज बढ़ाओ,  
 विन्ध्य के साथ बैठकर गणित में सर लपाओ,  
 इनकी संगत में बढ़ेगा तुम्हारा ही ज्ञान।

बैला वहीं का बैट्समैन, विवेक वहीं का मौलन,  
 दिम्बिज्या जैसा नहीं मिलेगा तुम्हें औलरांतरकर,  
 अमान और हूबिस हमारे फुलबालर,  
 दिल्ली में क्या जीतकर बढ़ाया हमारा सम्मान।

डेन सबसे छोटा, लो कोइली सबसे गीटा,  
 पर दिल का इनमें कोई, शिन्हुल नहीं है खोटा;  
 कक्कर रख चुका है इतिवै में, चीन का कीर्तिमान,  
 दुष्कांत गौनीटर बन के, बढ़ाये कक्षा की शान।

दिल के बड़े सच्चे हमारे बरत पेलेटाइन,  
 इस्तिफ गुजरे वाली से हजार राहग,  
 यही चीजे बनाये इस कक्षा को 'पेरी' काइन,  
 कुल मिलाकर वही कहिये, हमारी कक्षा बकरी महान।

हैमन्त उपाध्याय

p 'B'



किस्ती के गुणों की प्रशंसा करने में समय मत नष्ट करो,  
 उसके गुणों को अपनाने का प्रयास करो।

- कार्ल मार्क्स

## विद्यालय में दस वर्ष



सेंट जोसेफ कॉलेज, मैरीहाल में मेरा पहला वर्ष सन् १९८१ में कक्षा एक में प्रारम्भ हुआ था। इस विद्यालय में मेरी बहुत सी बचपन की यादें छिपी हुई हैं। जब वह समय आ गया है जब मुझे इस शिव विद्यालय से विदाई लेनी होगी। मुझे अपनी बी अग्रणी पुराने पत्र याद आते हैं जो कि कक्षा एक से ही शुरू हो गये थे। मुझे इस विद्यालय से बहुमुख शिक्षा की प्राप्ति हुई है और मैं हमेशा ही अपने एक साथ बचपनी का कि मैं इस शिक्षा से अपनी बी मदद करतीगा और भविष्य में अपनी बी इतना सुखपूर्वक नहीं करूँगा।

मुझे वह पत्र याद आते हैं जब मैं सुकृपाद में कक्षा एक की ऊँच रोका करता था और फिर मुझे मेरी अध्यापिका मेरे साथ मजाक कर के मुझे हँसाया करती थी। मुझे इस दौरान एक स्नेह का आवास होता था और इसी प्रेम, स्नेह और आशीर्वाद से ही प्रत्येक छात्र सफल होता है और अपने जीवन पर खुशी का आकाश होता है। इसी आशीर्वाद की मदद से प्रत्येक छात्र के अन्दर कठिनाई का सामना करने की क्षमता उत्पन्न होती है और उसे कठिनाई नहीं होती है। मैंने विद्यालय के अध्यापक बहुत ही अच्छे और गम्भीर स्वभाव के हैं। उन्हें प्रत्येक छात्र की सफलता के द्वार तक पहुँचाना आता है और वह छात्र की इस सफलता को अपना भी एक लक्ष्य बना लेते हैं और छात्र को सफल बनाने के लिए बहुत मेहनत करते हैं और एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अध्यापकों के इस मददगार और गम्भीर स्वभाव से मुझे इस विद्यालय में अपनाया का महसूस होता है।

मेरे विद्यालय की एक मुख्य बात यह थी कि यहाँ पर विद्यालय के अनुशासन और छात्रों के स्वभाव पर पूर्ण ध्यान दिया जाता है जिससे कि छात्रों का एक अच्छा एवं अच्छे आचरण से सज्जित छात्र बनता है। जो यहाँ से निगमों का प्रदर्शन करता है उसे सारा ही जाती है जिससे कि छात्र अपनी गलती को महसूस करते हैं और विद्यालयों के नियमों का आदर करते हैं।

सेंट जोसेफ कॉलेज के पूर्व दस वर्षों में मैंने यहाँ से बहुत सारा ज्ञान प्राप्त किया और यहाँ के छात्र और शिक्षकों के साथ मैं मुझे अपनाया का महसूस हुआ। यहाँ के प्रभावशाली और शिक्षण बहुत अच्छे हैं। यहाँ पर छात्र अपने शिक्षकों के साथ खुश रहते हैं और मजाक करती हैं और पढ़ाई के समय मैं वह पूरा ध्यान लगाकर पढ़ाई करती हूँ।

मेरे विद्यालय में बहुत सी सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं जिससे एक छात्र को अभिन्न पर बहुत फायदा पड़ता है। यहाँ पर बच्चों को खेलने के लिए एक मैदान है, पढ़ने के लिए पुस्तकालय है और खेलों के लिए पर्याप्तता भी है। इन सुविधाओं से प्रत्येक छात्र का बहुत प्रभाव पड़ता है और छात्रों को अभिन्न खुशहाल बनाता है। मैं भी इस विद्यालय से प्रसन्नतापूर्वक विदा हो रहा हूँ और आशा है कि एक दिन इस विद्यालय का और यहाँ के शिक्षकों का नाम कैबल करूँगा।

इस विद्यालय में मैंने अपने दस वर्ष खुशी से बिताए और मैं हमेशा ही अपने बीो हुए पत्रों की याद करता रहूँगा। मैं आशा करता हूँ कि यह विद्यालय हमेशा की तरह खुलता, उदित और प्रसिद्ध रहे।

सिद्धार्थ अग्रवाल

१० 'ए'

स्वातंत्रता दिवस की जेमनी वर्षगांठ की जल-वेला पर कला दस के यकासी द्वारा 'आजादी के पश्चात् भारत ने क्या पाया — क्या खोया और 'स्वातंत्रता की राधा' पर अपने कुछ विचारों को प्रस्तुत किया गया।

### स्वातंत्रता दिवस पर हिन्दी भाषण प्रतियोगिता

1. वीरव साम्बा,
2. अरुण भट्ट
3. पारस भट्ट
4. अशुत सिमवाल
5. विक्रम सिंह
6. रुधिर श्रीवास्तव
7. दीपान्न पंत

### प्रतियोगिता का परिणाम

- प्रथम : अरुण भट्ट  
 द्वितीय : दीपान्न पंत  
 तृतीय : विक्रम सिंह

## स्वतंत्रता की कहानी



स्वतंत्रता मनुष्य की स्वाभाविक इच्छा है। आरंभ से प्रथम व्यक्ति और छोटे से छोटा बालक भी अपने ऊपर किसी का नियन्त्रण प्रत्यक्षता से स्वीकार नहीं करता। अंग्रेज भारत में आए और भारतीयों को प्रत्यक्षता से शासित करने लगा। गुलामी की जंजीरों से बंधे हुए भारतीय उसी दिन से उस जाल की सादने के लिए अग्रजल प्रयास करने लगे। इस पुनीत संघर्ष का भी गणेश झाली की गाने लगीवाई के करकल्लों से सन् 1857 में हुआ था। तब से लेकर सन् 1947 तक अनन्त माताओं की रीढ़ से लाख, अगणत बलिषों के लीलाग्न सिन्दूर और अगणत बहनों के भाई स्वतंत्रता की बलि-वेदी पर बड़कन अमरगति को प्राप्ता हुए। परिवार के परिवार इस पवित्र यज्ञ की ज्वालि में मलमल हो गये। आत्मिककलियों के धरों में विन-बल्लहे अंग लगाई गई, उनके परिवार के सदस्यों को बूझा मारा गया और उनकी जानवरों की तरह मार पीटा गया। अंग्रेज अपनी ज़ुलुमा की रक्षा के लिए जो कुछ कर सकते उन्होंने सब कुछ किया। पर भारतीय वीरों ने भी पैर पीछे नहीं हटाया, डैकले-हैलवे बोलियों के तख्त पर झूठे, चापरायन की कौशल में कम डेका।

झोले-झोले अंग्रेजी शासनात्म की नींव हिली, कई बार खोले दिने, परन्तु भारतवर्सी अपने पूर्ण स्वतन्त्रता ज्वालि के निविष्टत प्र्ये से विचलित न हुए। सत्य और अहिंसा के ताल के सामने अंग्रेजी की बड़ोर शासना प्रकल्पित हो उठी। 80 वर्षों की लाला कल्लवती हुई और अंग्रेजी ने वहीं से जाने का निश्चय किया। 15 अगस्त की अर्थरात्रि को शासकियों की खोई स्वतंत्रता भारत को पुन ज्ञाप हो गई। सारे देश में स्वातंत्रता की सहर दीक गई। भारत जन्म ने बलिषों में भगवान की प्रार्थना की भर-भर में दीप जलाने गए, विद्यालयों में विष्णुन विठलन हुआ और रात्रि को राहनों दीपों की ज्वालि जगनता उठी।

भर अथ स्वतंत्रता दिवस का अर्थ लेन एक घुड़ी के रूप में लेते है जिस दिन हमें बलिषों खाने को मिलती है और दिन में स्वतंत्रता दिवस पर आने वाली खीकर फिल्म देखने का समय। पुराने जमाने में खीई इस दिन समारो होती थी। जुलूस निकाले जाते थे, राष्ट्रीय ध्वजवन्दन होता था, देश-भक्ति पूर्ण दीपों के भाषण होते थे और खी पुरतान प्रतिष्ठा फिर से बोलवाई जाती थी मगर अब ऐसा कुछ न रहा। इस दिन सलाबियों की दास्ता की शूकला से दुखी भारतीय एक स्वर में बलिदान की प्रतिष्ठा करते तथा जलाह से उनके यज्ञ कूल उठते थे। वह उन दिनों की यादें बिल्ला है जब देशभक्तों की भर-पकड़ होती थी, उनके पढ़ते थे और दे जेलों में भर दिए जाते थे, केवल इसलिए कि वह अपने देश की स्वतंत्रता चाहते थे।

बड़े बाद रखे या न रखें पर इस दिन छात्रों को अपना कार्यात्म समझ चुनियां को अपनी देशभक्ति का जवाबदन प्रस्तुत करना चाहिए विद्यार्थी राष्ट्र की अनुकृष निधि है। देश की समस्त आर्थीर इन्हीं पर निर्भर है। उन्हें अपने समय अपनी क्षमता, अपनी कार्यक्षमता और अपने वैदिक बल का देश की दुर्गन्धिपूर्ण राजनीति को कपय बनाने में बिलाना चाहिए। हमारा निविष्टत पूर्ण बलिदान से अद्यतन करना ही देश की प्रगति कल्प है।

*“जो मरता नहीं है भावों से, कहती जिसमें रसधार नहीं;  
यह झुका नहीं है, फलक है, जिसमें अवेक का पता नहीं।”*

स्वातंत्र्य दिवस खुशी, हर्ष व उत्साह से लबे मनाया जा सकता है जब हर हिन्दुस्तानी के दिल में देश-प्रेम की भावना जागृत होनी। वह दिल जिसमें देश-प्रेम के लिए जगह नहीं वह दिल एक भारतीयनी का नहीं कहा जा सकता। देश प्रेम को मानव मात्र का एक सार्वभौमिक गुण है। मनुष्य माता और मातृभूमि के मोह से कृपु पाश की कुल नहीं हो पाता। इन दोनों के इतने समकार होते हैं कि मानव समग्र आजीवन भ्रम में रहता है। मातृभूमि की मान-रक्षा के लिए अपने को बलिदान करने में जो चरण आनंद प्राप्त होता है, देशप्रेम के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने में जो सुख और शान्ति मिलती है, समकर मृत्यु कोई सच्चा देशभक्त ही जान सकता है। देश की उन्नति में ही देशभक्त अपनी उन्नति समझता है, देश नष्टि और फलसकार ही उसका धर्म है। देश-वासी की तो अन्तरात्मा स्वातंत्र्यहीन होती है।

*‘सुले मोह लेता बलमासी, उत पल में देखा तुम लीला।  
मातृ-भूमि पर सीस झड़ाने, जिस पल जावे वीर अवेक।”*

यह हमारा सीमाप है कि वर्षों की साधना के पश्चात् हमने यह स्वर्णिम अवसर प्राप्त किया है। हमारा कर्तव्य है कि हम इस राष्ट्रीय पर्व को उत्साह और उत्साह के साथ सदैव मनाई और देश की समृद्धि और देश की सशक्तता की स्था के लिए प्रयत्नशील रहें।

अजय भट्ट

10 'ब'



## स्वातंत्र्य के त्रेपन वर्षों में हमने क्या खोया और क्या पाया



मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसे संसार में स्वतंत्रतापूर्वक जीने का पूरा अधिकार है। संसार में सभी प्राणी स्वातंत्र्य रखना चाहते हैं, वहीं तक कि पिछरे में बंद पक्षी भी स्वातंत्र्य के लिए पिटार अपने पंख फड़कड़ता रहता है। उसे सोने का पिटल, सोने की कतौरी में रखा स्वादिष्ट भोजन भी प्रयत्न नहीं लगता। वह भी स्वातंत्र्य होकर मुक्त मन में स्वच्छन्द उड़ान भरना चाहता है और फिर मनुष्य तो मनुष्य है। उसे भी स्वातंत्र्य प्रिय है। वह भी स्वातंत्र्य के लिए संघर्ष करता हुआ प्राणी की बाजी लगा देता है। लोकमान्य तुलसीदास जी ने भी कहा है —

*“परवीण तपनीहु तुम नहीं”*

पर आज हम उस खंड पर खड़े हैं जहाँ भारत का कल-कल भी यह गता है :

*खिल उठी कली-कली, लखा बिलाल आ गया  
स्वातंत्र्य दिवस लीखे, लखा प्रभात आ गया।  
झर-झर लख लगे, सुली को सीप कल लगी,*

सीधे उस ओर सभी, तार-तार बज जाये।  
 एकता की राह पर, सीधे हीन जन जाये  
 स्वतंत्रता दिवस जिसे सदा प्रभाव आ गया।

प्रत्येक देश का इतिहास उत्थान-पतन से अनिवार्य होता है, जो आज पूरा ध्वस्त है वह कल पुनः हो सुवर्णित है, जिसने शिशिर की बर्फोंकी ओघों को सहन किया, वहीं गर्म की बहार भी देख सकता है। जिसने दुःख का अनुभव किया है, वहीं सुख की परीक्षा कर सकता है। समग्र-व्यक्त परिवर्तनशील है और खुदी गतिशील। समग्र एक निर्द्वेष की कलकल के समान आने बजने रहता है।

भारत की स्वतंत्रता की कहानी भी लगातार संघर्ष और बलिदानों की कहानी है। स्वतंत्रता संग्राम की शुरुआत रानी लक्ष्मीबाई की तलवार से हुई और नये वर्ष के संघर्ष के पश्चात् इस संग्राम का इति श्री महात्मा गांधी के हस्तों में हुआ। इस नये वर्ष का संघर्ष एक पयावत खन था। छोटे बालकों से लेकर बूढ़ों तक, सबने एकता के साथ ब्रिटिश साम्राज्य की नींव टिका दी थी। नये अनाथ हो गए, औरतें शिवा हो गई और माई अपने बालों को छो बैठी। पर इन स्वतंत्रता-संग्राम रंगमणियों की महावत रंग लाई जब पन्द्रह अगस्त सन् १९४७ को भारत स्वतंत्रता की बेकियों से मुक्त हो गया। ब्रिटिश लोक अंग्रेजों में रहने से पश्चात् अन्ततः विनश्यत नहीं भया। लगातार बसने हुए भागी की रादी के उपरांत निर्गत जाकरा किसे नहीं सुझा?

“बहुत समय को बाद हुई जब, इतिहास मज की फिर अभिलेखा।  
 इसका प्रचुरितना हुआ सभी का, पक्कर अमित कोस की आशा।”

इसने वर्षों से हम स्वतंत्रता दिवस मनाते आ रहे हैं, लेकिन फिर भी हम स्वतंत्रता का सही अर्थ नहीं समझ पाये हैं। स्वतंत्रता दिवस नवम्बर में एक छुट्टी ही रह गया है जिस दिन पूरे राष्ट्र में अवकाश होता है, मिठाई-चीटी जाती हैं, देश-भक्ति के बीच लबाए जाते हैं खुसुस निकले जाते हैं ब्रंडा कहलाया जाता है और राष्ट्रीय गान गाया जाता है। परंतु वह स्वतंत्रता दिवस का सही अर्थ नहीं है। भाषा, धर्म, जाति, ज्ञान आदि के नाम पर आज भी हम आपस में झगड़ते हैं। देश में गरीबी, बेरोजगारी, दुःख असीम मात्रा में है और जब इन सबका तपसा होगा तभी स्वातंत्र्य दिवस का सही अर्थ हम समझ पायेंगे।

“स्वतंत्रता हमको प्यारी है, हम ही इसको जिम्मेवारी।  
 सदा हम सब की बाजी मरी, इसे जम्बत बनायेंगे।”

प्रतिवर्ष पन्द्रह अगस्त अनेक पावन स्मृतियों को लेकर जाता है और हमें अपना दिव्य संदेश प्रदान करता है तथा हमें सदैव जागरूक रहने की प्रेरणा देता है। वह राष्ट्रीय पर्व हमें प्रतिवर्ष स्वातंत्र्य के संघर्ष और चमत्ते सहोद होने वाली की याद दिलाता है।

“अपनी आकांक्षों को हम हरमिज कुछ लम्बो नहीं,  
 सर सर उठते हैं लेकिन सर लुका सकते नहीं।”

दीपिकांत शर्मा

10 'B'

## भारत-पचास वर्षों में उपलब्धियाँ

स्वातंत्रता गनुष्य की स्वाभाविक इच्छा है। अन्ध से अन्ध व्यक्ति और छोटे से छोटा कालक भी अपने अपने किसी का निर्दोष पसन्द नहीं करता। अंग्रेज आए और भारत को परतंत्रता के पाश में जकड़ लिया। वहाँ 700 वर्षों तक कुगलती ने राज्य किया। वे काली इद तक भारतीयों से घुल-मिल कर नहीं रहे सके। परन्तु जब अंग्रेज आए तो उन्होंने भारत वासियों को घृणा से देखा तथा कुटा। इन्वारी आजादी स्वतन्त्रता के बाद पाई गई है।

भारत ने अपनी स्वातंत्रता प्राप्ति की पचासवीं वर्षगांठ 1997 में मनायी। सन् 1947 से 1997 तक स्वतंत्र भारत के प्रमुख क्षेत्र जैसे विद्युत, टेलीफोन, सड़कें, रेलवे आदि की उपलब्धि सराहनीय रही है। इन क्षेत्रों के अतिरिक्त भारत ने पचास वर्षों में आशा के अनुकूल प्रगति की।

सन् 1950-51 में जहाँ भारत की विद्युत उत्पादन क्षमता मात्र 1.7 हजार मेगावाट थी। वहीं 1995-96 में 43.3 हजार मेगावाट हो गई। भारत में सन् 1950-51 से घुल 160 टेलीफोन थे। इनकी संख्या 1995-96 में बढ़कर 9,817 हो गयी। 1950-51 में राष्ट्रीय/राज्य मार्गों की लम्बाई 22 हजार किमी० थी। यह 1995-96 में 170 हजार किमी० कर ही गयी।

इन क्षेत्रों के अतिरिक्त भारत ने सभी क्षेत्रों में प्रगति की। बैलों की संख्या 62,2681 हो गई। दूध के क्षेत्र में तो अब भारत विश्व का सबसे बड़ा उत्पादक बन गया है। कापड़, गेहूँ, दाल, कच्चास आदि के क्षेत्र में पिछा पचास वर्षों में आशा से अधिक प्रगति हुई है।

भारत ने सभी क्षेत्रों में प्रगति की है। स्वातंत्र्य के बाद हम एक प्रजातंत्र राष्ट्र बने, लोगों को उनके अधिकार दिए।

विज्ञान के क्षेत्र में भी हमने सफलता प्राप्त की। पोखरण के आण्विक परीक्षण के बाद हम एक आण्विक शक्ति बने। कम्प्यूटर के क्षेत्र में तो बस घुटने ही मारा। कम्प्यूटर सोफ्टवेयरों ने तो धूम मचा दी है।

हमारे मोक्ष पुरस्कार जाने वाले लोग जैसे :- श्री सुखदा, मदर टेरेसा, श्री सुब्रहमण्य स्वामी, श्री अमृत सेन, सभी ने भारत की प्रगति में सहयोग दिया है।

संल के क्षेत्र में भी हम प्रगति के मार्ग पर अग्रसर हुए। विश्ववैभवम आनन्द शतरंज को 90 एक के खिलाड़ी है, लीएण्डर पैरा और महेश भूपति की जोड़ी टेनिस की 90 एक जोड़ी है। भारत NAB, SAARC, UN, C.W. का सदस्य रहा है।

**कुछ महान लोगों के विचार कुछ इस प्रकार हैं :-**

ऐल्बर्ट आइन्स्टाईन जो कि एक वैज्ञानिक थे, ने कहा है - "हम नारतियों के अत्यन्त अन्धारी हैं जिन्होंने हमें गणना करना सिखाया शिलोंके बिना कोई भी समुचित वैज्ञानिक अन्वेषण नहीं किया जा सकता था।"



मार्क ट्वेन जो कि एक साहित्यकार थे, ने कहा है - "भारत मनुष्य जाति के मानने वाला है। मानव के सम्मान की जगहभूमि है। इतिहास की जगह है।"

भगवद्गीता करने वाली सितम्हरी के समान है और परमात्मा की परबिताम्हरी है।"

सिद्धिपाल राज सिद्ध

10 'अ'



## सिम से विदाई

सिखना मैं बहुत कुछ चाहता हूँ,  
पर कुछ भी सिखने में अपने आप की असमर्थता  
पाता हूँ,  
और जैसे ही सिखने को कलम खोलता हूँ,  
मैं सोचने लग जाता हूँ -  
सिखनी चलती रहेगी,  
कलम खोसि न आ पायेगा,  
एक बार सीम से मिलल गया,  
कस कावे ही रह जायेगी।  
इसी दर से अब तक सिखना टालता रहा,  
लेकिन आज उस राह में पहुँच गया,  
जहाँ से मुझे अपने जिन्दे एक नयी राह है चुनना,  
जीवन के कस पर अपने लिये है चस्ता चुनना।  
सिम से बिछा मुझे परिवार जैसा प्यार,

मस्ती में बीते मेरी जिन्दगी  
के बराबर,  
वहीं पर मुझे ऐसे दोस्त हैं  
मिले  
जिन से मेरे जीवन को कस  
है मिले।  
आज अपने दिल की आवाज में  
बोल नहीं सकता,  
अँधुओं की धारा बँक नहीं लगाता,  
सीम की कुछ खड़ी, कुछ नीली गाढ़े है दिल में  
बरी,  
जिन्हें दिल में लगावे हुए मैं अब सीम से बता।

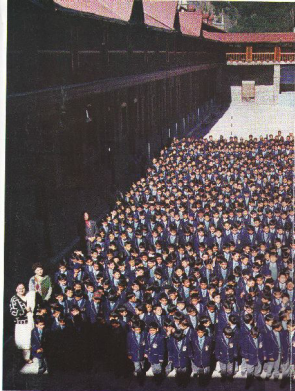


सर्वश्रेष्ठ गुरुदासी

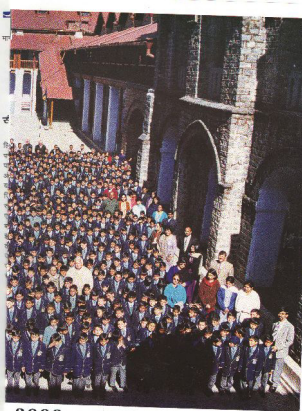
10 'अ'

धूर्त आध्यात्मिक का निरस्तकार करते हैं, सामान्य जग उत्पत्ती  
प्रशंसा करते हैं और हानी उसका उपयोग करते हैं।

- देवन



SEM



2000



**SCHOOL BELL**  
DUA'S SHOP

**LATE SLEEPS • 50 YEARS C**

**UNPREDICTABLE WEAT**

**CHRISTIAN BROTHERS**

**SHOOTING OF HIMALAYA PUTRA**

**COMPUTERS**

**MASS DRILLS**

**SILVER AND  
RED RAILINGS**

**DONALDABAD**

*Athletics*

**NEW STAFF  
QUARTERS**

**HAZELRUDDIN SHAH  
MR. JAMES PAUL**

**COALBER**

**Dr. MURRAY'S AIR GUNS**

*Barbec  
Bazaar Shop*

**EXAMINATIONS**

**COLLEGE WALLS**

**MR. K. G. PANT**

**SOFT BALL**

**ELOCUTION**

**HALDWANI**

**मल्लीताल**

**LAKE**

**TEACHER**

**STORM C**

**HATRON'S**

**POOL**

**CAPTAINS**

**SINGING**

**Dr. FITZPATRICK**

**SIX FIELDS**

**MRS. P. MEDLEY**

**QUIZ**

**SNOW**

**CRICKET**



**SEA**

**OPERA**

**MR. JAGDISH SAH**

**MRS. TAHIR**

**FATHER ARNOLD**

**teache**

**STORM C**

**HAIL**



OF INDEPENDENCE FREE PERIODS

HER  
STONE CROSS

Rice  
RULES

UNDERCROFT  
DISCIPLINE  
LEATHER  
PURIS

Dr. Rajesh

OPEN

's day

'98  
SPORTS  
DAY

CHAPEL

TOWERS  
UNIT TESTS

Mr. Ballentine. Vinod Khanna.

DHOBI BOX. QUADRANGLE

Corbett Park  
Brun. Patties

HELICOPTER  
EXCURSIONS

RAMNEE  
DEDICATED  
Monkeys  
ST A F F. MRS. K. PANT

HOCKEY  
"STUDY HALL"

Basketball  
TENNIS  
Football

Gymnastics

COLLEGE  
ANTHEM

Billiards

Mr. R. C. Dhandu

SNOW ON CHINA PEAK

POCKET MONEY

MUSIC AT NIGHT

FETES  
TUCK  
R-E-ZON

WOODEN FLOORS

TOWN WALKS

Juniors Minis

DHOBI BOX

Mr. Rajesh Adhikari

Mr. Ballentine. Vinod Khanna.

# PHOTOGRAPH SECTION

# STAFF

2000



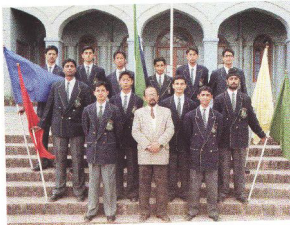
(L to R)

- 1st Row : Mrs. D. Shah, Mrs. C. Palmer, Mr. M. D. Palmer, Rev. A.O. Ballantyne, Mr. J. Paul (Principal), Mr. R. D'Raujo, Mr. J. Meneses, Mrs. A. Meneses, Mrs. R. Pani.
- 2nd Row : Mrs. J. Stevens, Mrs. J. Irwin, Mrs. P. Joshi, Mrs. N. Rana, Mrs. M. Bhatt, Mrs. A. D'Raujo, Mrs. N. Rawat, Mrs. L. Sob, Mrs. S. Franji, Mrs. S. Lohar, Mrs. B. Jagati, Mrs. P. Rathore.
- 3rd Row : Mrs. L. Simon, Mrs. J. Chapman, Mrs. B. Jain, Mrs. J. Mulcahy, Mrs. M. C. Fernandes, Mrs. A. Tomar, Mrs. J. S. Gill, Mrs. T. A. Singh.
- 4th Row : Mr. M. Chandra, Mr. D. Simon, Mr. H. S. Joshi, Mr. E. D'Gama, Mr. M. Bernard, Mr. M. Joshi.
- 5th Row : Mr. J. R. Dogra, Mr. D. Nalk, Mr. M. Gangola, Mr. S. K. Marra, Mr. R. Pandey, Mr. S. A. Nelson.

**SUPPORT STAFF - 2000****WITH****MR. J. PAUL, BRO. BEDDOE, MR D. SIMON**



**MR. J. PAUL (PRINCIPAL)**  
**CAPTAINS AND VICE - CAPTAINS**  
**2000**



(L to R)

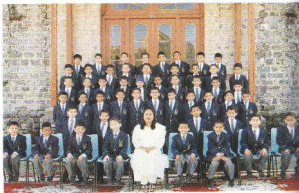
- 1st Row : N. Malhotra, Mr. J. Paul (Principal), K. Negi.  
 2nd Row : F. Khan, W. Dora, G. Dangwal, B.P.S. Gill.  
 3rd Row : G. Saigal, Sverank, S. Shrestha, R. Syal, J. Crest, H. Chawla.

ICSE - 2000  
WITH THEIR TEACHERS



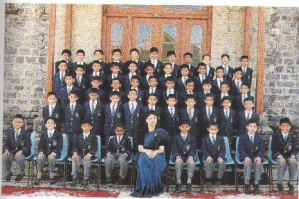
## CLASS - I

2000



(L. to R.)

- 5th Row : S. Khan, M. Kavilayal, H. Bishi, N. Bishi, Z. Raza, A. Dhapola, P. Sah, J. Prasad.
- 4th Row : S. Bishi, A. Tawari, U. Dhalakoti, T. Marhpal, S. Bishi, C. Negi, H. Pandey, K. Rawat, D. Lalwal.
- 3rd Row : S. Deora, B. Singh, P. Bishi, G. Negi, N. Nagpal, Y. Gangwar, K. Singh, R. Mehra, E. Dangwal, S. Khan.
- 2nd Row : M. Pain, K. Vishwakarma, U. Sah, K. Gossain, C. Sharma, D. Narang, A. Shukla, A. Tawari, A. Kandpal, S. Singh, J. Bishi.
- 1st Row : G. Joshi, V. Pande, A. Bishi, S. Rautela.
- Sitting : A. Oili, M. Bishi, D. Bishi, G. Shah, Ms. S. Lohar, S. Berry, V. Kandpal, A. Tawari, B. Bishi.
- Absent : U. Tripathi.

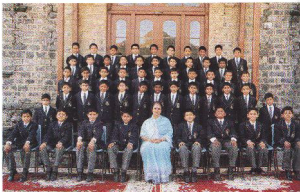


(L. to R.)

- 4th Row** : A. S. Rautela, T. Kandpal, K. Ahmed, D. S. Bishi, Y. Tomar, V. Kapoor, A. Singha, D. Sood, Y. S. Bishi, H. Iqbal, N. Pandey.
- 3rd Row** : M. Joshi, S. Joshi, A. S. Bhakuni, H. Joshi, A. Chandra, T. Bharti, A. Bishi, A. Kohli, S. Joshi, S. Joshi.
- 2nd Row** : G. Bishi, P. Gargola, S. Kholla, N. Bishri, A. Singh, N. Lohani, N. Bishi, U. Karmarkar, N. Bishi, Y. Nagdali.
- 1st Row** : D. Upreti, D. Pandey, K. Maslekhi, T. Ghildiyal, M. Sah, A. Rawat, V. Bargala, S. Bishi, K. Sah, A. B. Pandey, P. S. Bishi.
- Sitting** : U. Pandey, S. Dandia, A. Joshi, S. Ahmed, Mrs. A. D'Ramjo, S. Ahuja, K. Adhikari, A. Chona, N. Sah.
- Absent** : D. S. Sarason.

## CLASS - III 'A'

200



(L to R)

- 5th Row** : D. Dhyani, M. Jagati, V. Sijwal, K. Akashdeep, R. Rayush Kumar, U. Ahuja, D. Bish  
S. Bhatt, K. Sah, S. Shah.
- 4th Row** : K. Nanda, A. Chandra, G. Irwin, H. Bisht, A. Agarwal, K.V. Sah, S. U. Naqvi, A. O  
S. Sah, J. A. Massey.
- 3rd Row** : A. Paliwal, A. Kapoor, A. S. Taragi, V. K. Singh, A. Bish, R. Singh, A. Pand  
D. S. Pangley, V. Shah, A. Joshi, A. Barfal.
- 2nd Row** : S. Agarwal, A. Nehra, S. Lala, M. Luthra, S. Phartiyal, S. Lakra, G. Bohara, A. Karu  
K. Joshi, Y. Rana, P. Sammal.
- 1st Row** : T. Tewari, M. Rawat.
- Sitting** : K. Misra, T. Martolia, S. P. Campbell, S. Sharma, Mrs. L. Sah, N. Pandey, D. Pas  
H. Panna, P. Bhatt.

## CLASS - III 'B'

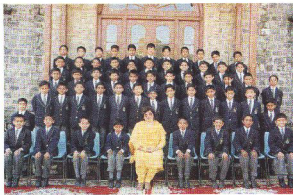
2000



(L. to R)	
4th Row	: N. Pochak, A. Pande, J. Chaudha, P. Chawla, C. Kapoor, A. Sahni, A. Pant, G. Shrestha, M. Sarwal, A. Shankelhar.
3rd Row	: P. Bindra, R. Jethi, U. Gangwar, A. Rautela, M. Bhutia, J. Verma, P. Pande, R. Jaisl, V. Sharma, J. Punian.
2nd Row	: A. Bisht, S. Jain, H. Loshali, S. Bansal, D. Gill, V. Mann, B. Joshi, A. Kartik, S. Rastogi, N. Bhatt, T. Tripathi.
1st Row	: A. Virmani, H. Pande, S. Dureja, D. Joshi, S. Shah, L. Verma, D. Garbiyal, A. Sah.
Sitting	: N. Pandey, V. Sajwan, T. Tewari, S. Bohra, Mrs. B. Jain, S. Bisain, A. Bhatt, Z. Ahmed, T. Saxena.
Absent	: H. Sah, N. Bhatnagar.

# CLASS - IV 'A'

2000



(L to R)

- 5th Row : A. Arya, H. Sharma, M. Sah, A. Kumar, P. Pande, T. D. Bhotia, S. Kumar, A. Potha, V. Kumar, P. Arora, N. Agarwal.
- 4th Row : N. Pande, G. Dharmashikha, C. S. Bisht, D. Pande, N. Gargan, V. Sah, A. Bha, A. Kandpal, A. Joshi, N. Y. Shrotrifa, A. Pabwa.
- 3rd Row : D. Joshi, G. Rawat, A. Bhan, V. Upadhyaya, A. Kishore, P. Dhull, D. Hsu, R. Sen, P.R. Gargan's, A. Shaba, A. Ahmad, T. Pant.
- 2nd Row : S. Joshi, N. Jain, R. Seth, S. Maith, T. Alam, A. Bhakuni, S. Punian, U. Mah, A. Pande, R. Joshi, K. Mouri, C. Rangyal.
- 1st Row : P. Kohli, S. Jan.
- Sitting : D. Pant, R. Bisht, S. Lohani, S. Rastogi, Ms. N. Rana, S. Sah, A. Pervez, N. Bantel, M. Pande.



(L. to R.)

- 5th Row : N. Singh, M. Sah, T. Pandey, R. Ranshoo, T. Chaturvedi, S. Jagati, S. Thakur, A. Hadi, A. Kumar, M. Singh, M. Bhatt.
- 4th Row : A. Nanda, A. Khora, A. Kumar, P. Pandey, G. Pandey, T. Sah, A. Verma, A. Rehman, H. Dharwan, S. Sah, P. Sarthi.
- 3rd Row : M. Kumar, D. Mehra, U. Bishr, C. Pandey, A. Madan, S. Gururani, N. Mehta, P. Buch, N. Joshi, T. Jaiswal, S. Bhagat, M. Bishr.
- 2nd Row : A. Saxena, S. Shah, A. Pandey, A. Pant, A. Khandelwal, S. Marwal, P. Agarwal, S. Joshi, V. Sah, V. Sahni, A. Sah, A. Singh, A. Pande.
- 1st Row : A. Bora.
- Sitting : P. Dadeja, U. Agarwal, A. Sah, M. Tandon, Mrs. N. Rawat, K. Gulati, D. Khurwal, Shivam, A. Gururani.



## CLASS - V 'A'

2000

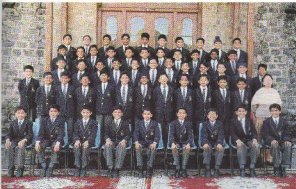


(L to R)

- 4th Row : A. Ahuja, S. Ahmed, A. Joshi, N. Jain, P. Pathak, A. Shah, S. Biche, V. Maheswar  
IL. Amin, S. Dasgupta.
- 3rd Row : A. Thandi, N. Shrestha, A. Phartiyal, R. Joshi, T. Kavayal, J. Sachar, D. Pathan  
A. Pratap, T. Bhatt, N. Tewari, S. Gupta.
- 2nd Row : A. V. Joshi, D. Shah, N. Yadav, S. Bohra, R. Ureja, P. M. Chaturvedi, C. Liu, R. Kumar  
S. Kumar, A. Mallick, M. Gokani, O. Amin.
- 1st Row : K. Gupta, N. Puri, P. Shah, N. Chhabra, V. Sah, A. Sharma, S. Srivastava, S. Indhi, J. Chandra  
S. D'Souza, I. Sah, U. Choudhary, A. Chawla, D. Dangwal, M. C. D. Palmer.
- Sitting : A. Negi, A. Morgan, N. Sammal, S. Harsh, S. Chaudhary, K. Dodeja, K. Sah, A. Tewari  
A. Khan.

## CLASS - V 'B'

2000

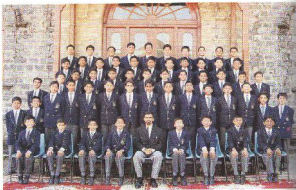


(L. to R.)

- 4th Row** : R. Bhassin, B. Seth, M. Bhandula, J. Sandhu, A. Sah, H. Sah, V. Sanwal, A. Kumar, S. Bindra, A. Sah.
- 3rd Row** : P. Sanwal, A. Sah, S. S. Bisht, V. Soed, S. Khanna, A. Barua, A. Gururani, A. Gupta, A. Gangola, Yagyawalkya, K. Arora.
- 2nd Row** : J. Ahluwalia, A. Hyariki, A. Pant, M. Farde, G. Sah, A.P.S. Bisht, R. Kandpal, K. Tewari, A. Haque, A. Bisht, R. Singh, P. Kandpal.
- 1st Row** : G. Nayal, T. Bhartiya, A. Bishu, K. Belwal, S. Qalati, A. Khanna, D. Singh, P. Dalakoti, Md. Saad, P. Gurbyal, K. Kanchik, N. Seh.
- Sitting** : H. Utreja, P. Nagpal, N. Negi, D.P. Singh, N. Paul, N. Khos, S. Bharti, P. Mangali, S. Tewari.
- Absent** : N. Negi.

## CLASS - VI 'A'

2000



(L. to R.)

- 4th Row : A. Shah, A. Rawal, N. Siddiqui, P. Joshi, A. Hai, R. Kumariya, A. Gupta, A. Singh, D. Joshi, D. Ahmed.
- 3rd Row : F. Mirani, V. Chandel, V. Singh, K. Gangwar, S. Bohra, A. Kumar, E. Panthome, A. Chaudhary, M. Bisht, P. Choud, V. Sah.
- 2nd Row : P. Choudhary, S. Lala, K. Massey, S. Sharma, R. Palaria, A. Ali, A. Mehta, N. Sah, N. Kharschiwal, J. Sandhu, P. Sandhu, V. John, A. Joshi.
- 1st Row : S. Ghoshal, V. Bisht, V. Mehta, R. Mishra, A. Kishore, H. Garbiyal, M. Aluja, G. Mehta, A. Singh, R. Karnal, R. Raj, A. Kandpal, M. Kandpal, A. Rastela, P. Chadda.
- Sitting : J. Lico, S. Khetarpal, U. Sah, V. Bhakuni, Mr. R. D'Rainjo, K. Bhatt, R. Bhatt, M. Karis, K. Manglam.



(L. to R)

4th Row : S. Patryyal, R. Choudhary, A. Kumar, M. Pal, H. Chudha, S. Mahotra, S. Ahmed, T. Kapoor, L. Dorji, S. Mantra.

3rd Row : S. Manucl, A. Chudha, M. Divit, G. Kang, M. Iqbal, S. Fernandes, A. Tulshan, K. Dorji, E.Li, S. Syal.

2nd Row : A. Bhusin, M. Karpal, S. Joshi, L. Tripathi, S. Sah, R. Dahi, T. Sharma, S. Sah, V. Sharma, S. Mehra, H. Torar, J.P. Shahi, D. Sharma.

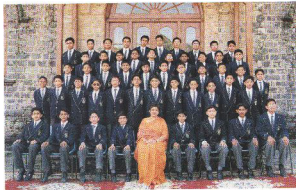
1st Row : R. Sharma, K. Dohal, S. Kachwal, P. Sah, B. Bhaisora, P. Pant, A. Sah, S. K. Arya, G. Singh, A. S. Karki, A. S. Karki, A. Sah, P. S. Bisht, A. Dhat, P. Bisht, U. Joshi.

Sitting : A. Bhatia, N. Avora, P. Pant, D. Wu, Mrs. R. Jagani, P. Verma, A. K. Bhatt, H. Jain, S. Sah.

Absent : S. Rawat, K. Negi

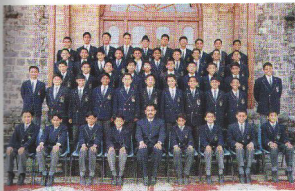
## CLASS - VII 'A'

2000



(L. to R.)

- 4th Row** : A. Doktori, H. Pandey, S. Agarwal, A. Sanguri, G. S. Gill, K.V.S. Gangola, B. L. N. Joshi, P. Shah, A. Chauhan.
- 3rd Row** : A. Kapoor, A. Rajpuri, P. Chaudhan, A. Sharma, V. Bhatt, N. Mehta, G. Sinha, A. Bhat, S. Bhaini, S. Sah.
- 2nd Row** : R. Rawat, N. Deep, V. Negi, V.P.S. Bhakuni, P. Negi, A. Joshi, V. Sah, A. Jureja, R. Chandel, P. Shah, B. Upreti.
- 1st Row** : R. Joshi, A. Shah, S. Karmakar, K. Mallick, P. Tripathi, S. Dhaswan, A. Karan, N. Singh, S. Gangola, S. Bhaini, V. Sah, E. Samra.
- Seating** : A. Abbas, M. Kandpal, A. Sharma, N. Jolly, Mrs. P. Rathore, M. Arish, A. S. Bora, K. Agarwal, S. Rawat.

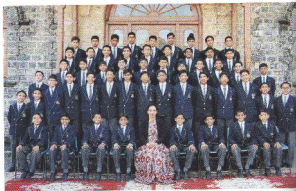


(L to R)

- 4th Row : A. Kohli, M. Bhatt, K. Chaturvedi, G. Sah, J. Singh, A. Mittal, M. Ahmed, S. Kapoor, V. Upadhyay, R. Verma.
- 3rd Row : H. Sharma, R. Mishra, S. Bhattacharya, S. Kumar, S. Datta, U. Ahmed, A. Mehta, A. Seth, P. Pandey, J. Bohra.
- 2nd Row : G. Kargeti, R. Kapoor, R. Kumar, S. Gulati, D. Sarwal, P. Bhatt, A. S. Hyonki, D. S. Hyonki, M. Chaudhary.
- 1st Row : A. Shah, D. Joshi, A. Joseja, P. Agarwal, R. Daid, P. Garbiyal, K. Bisht, H. Agarwal, M. Singh, R. Dangwal, P.K. Saxena.
- Sitting : S. Kherwal, P. Ahmed, K. Pandey, S. Sharma, Dr. R. Pandey, V. Sah, T. Bhatt, A. Jagati, P. Sah.
- Absent : C. Joshi, N. Massey, K. Pandey, B. Pant, A. Tiragi.

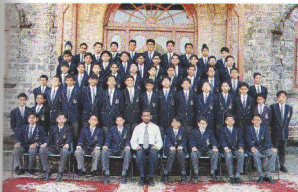
## CLASS - VIII 'A'

2000



(L to R)

- 4th Row : K. Anora, S. Q. Rishi, R. Bhat, A. Rawat, P. Bhat, A. Prasad, I. Oberoi, M. Verma, C. Shah.
- 3rd Row : S. Mangali, P. Dube, A. S. Gill, K. Darnwal, K. Bhatt, A. Jha, S. Kaushik, N. R. F. Khan.
- 2nd Row : A. Pande, H. V. Pari, S. Maurya, G. Singh, A. Tandon, B. Sochdeva, D. Rawat, J. P. Singh, J. S. Rawat, S. Saraf, R. Sati, S. Kandpal.
- 1st Row : A. Shah, S. Shah, A. Goel, F. Matloob, S. Jain, P. Shah, K. Pandey, A. Singh, J. Tewari, E. A. K. Lal, K. Jishi, M. Gussain, K. Trehan, A. Chauhan, B. Pande.
- Sitting : A. Jaiswal, A. Gupta, S. Bhartiya, M. Dattani, Mrs. J. S. Gill, H. Surya, V. G. A. Jishi, M. Shah.
- Absent : A. Dhillon, B. Pandey, M. Tripathi.



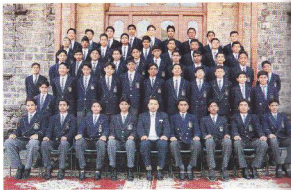
(L. to R)

- 4th Row** : T. Chakira, A. Sheikh, T. Lodra, J. La'porto, P. Dalakoti, D. Khatt, V. Talwar, V. Shukh, S. P. S. Sandhu, M. Chaddha.
- 3rd Row** : L. Dua, S. Gupta, N. Ansari, S. Dalakoti, A. P. Singh, C. Jagti, A. Chandel, D. Bhan, C. Pothak, A. Joshi.
- 2nd Row** : A. S. Makhija, M. Bhatt, R. Bisht, P. Pandey, R. Lohari, A. Sah, R. Shah, N. Dayal, J. Augustine, D. Dhumi, A. Joshi.
- 1st Row** : D. Sah, S. Ahmad, Y. Kathayat, S. Dinni, H. Rawat, V. Jain, H. Nahiyaal, S. Rathore, C. K. Bhargava, A. Sah, D. Pant, P. Bhandari, Y. Sarwal, A. Rawat, P. Joshi, L. Wu.
- Sitting** : A. Singhal, S. Jethi, A. Phartiyal, V. Nairwal, Mr. R. Shastri, D. Spitz, V. Gupta, A. Akshat, C. Tewari.
- Absent** : Y. Shukh, G. Adhikari.



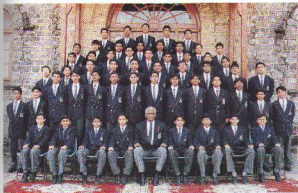
## CLASS - IX 'A'

2000



(L to R)

- 4th Row** : F. Hoi, R. Tandon, A. Jaiswal, G. Bajwa, A. Mehrotra, S. Bai, A. Malik, A. Abbas, A. Adhikari.
- 3rd Row** : S. Z. Naqvi, G. Singh, P. Mehra, M. Singh, A. Tandon, D. Bharti, A. Verma, C. Pan, S. Chinnwal.
- 2nd Row** : A. Shah, A. Tewari, A. Sah, A. Kandpal, D. Dahi, K. Palania, A. Pandey, A. Rana, M. Sain, S. Mohila, K. Tewari.
- 1st Row** : V. Kataliya, A. Nayal, P. Samwal, R. Sah, S. Chait, K. Singh, R. J. Spitz, S. K. Arora, U. Mehrotra, A. Sah, M. Bhat, T. Jagoti.
- Sitting** : J. Paul, A. Rehman, R. D'Raujo, M. S. Ansari, Mr. M. J. Bernard, A. Bhat, A. Kaur, Z. Khan, A. Bhatia.
- Absent** : A. Dhar, I. Rehman, V. Upreti.



(L. to R.)

5th Row : E. Desai, S. Shah, V. Upadhyay, B. Virk, A. Khan.

4th Row : A. Jaiswal, J. Tewari, D. Singh, P. Bhat, S. Siddiqui, N. Kukkar, S. Bisht, K. Nanda.

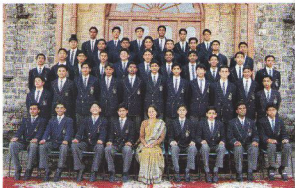
3rd Row : J. D'Souza, R. Sonley, V. Desai, A. D. Khali, R. Bhat, Y. Ambedkar, U. R. S. Bis, B. Shah, V. Tewari.

2nd Row : M. Mehra, V. Shah, G. Karki, A. Kandpal, B. Shah, G. Jethi, A. Sharma, T. Joshi, H. S. Dindra, D. Shah.

1st Row : P. Tripathi, K. Arya, J. Jethi, N. Pande, V. Pande, S. Kumar, V. Joshi, S. Shah, V. Tewari, A. Mallick, T. Sweney, T. Bhargava, S. Purohit, V. Shah.

Sitting : H. Bhatt, A. Tandon, V. Khosla, D. Bora, Br. O. A. Ballantyne, R. Anand, S. Phartiyal, C. Ahuja, A. Joshi.

# **CLASS - X 'A'**

**2000**

**(L. to R.)**

- |                |   |  |
|----------------|---|--|
| <b>4th Row</b> | : | A. Singh, G. Sengal, Sontank, F. A. Khan, G. Singh, H. Chawla.   |
| <b>3rd Row</b> | : | M. S. Tiwari, I. M. Ali, S. Tewari, J. Creet, S. Dani, A. K. Chaudhary, A. Chhimwal, J. Thomas.                                      |
| <b>2nd Row</b> | : | H. Bhakuni, W. Dorji, K. S. Negi, Y. Sah, S. Virmani, S. Dolra, A. Verma, A. Chaudhary, R. Sati, A. Prasad, V. Kholla.               |
| <b>1st Row</b> | : | U. S. Rathore, A. Harbola, D. Sharma, J. Dhindsa, A. Gupta, R. Srivastava, N. Oberoi, S. S. Khetwal, G. Dangwal, T. Pant, A. Narwal. |
| <b>Sitting</b> | : | A. Agarwal, H. Gurmiani, S. D. Bala, S. Rathour, Ms. D. Shah, A. Sah, S. Harbola, V. R. Singh, S. Sah.                               |
| <b>Absent</b>  | : | L. Joshi   |



(L. to R.)

4th Row : A. Bhatt, A. Arora, A. Morjal, R. Rautela, T. Surya.

3rd Row : P. Paliwal, A. Bishi, R. Bhatt, S. Kandpal, P. Bhatt, J. Mehta, S. Shah, N. Malhotra.

2nd Row : H. Joshi, J. K. Singh, N. Pandey, J. Sah, N. Liza, D. Joshi, P. Shah, P. Sah.

1st Row : G. Lamba, R. Arora, A. Zaid, A. Mansey, P. March, G. S. Chodha, S. Neerav, R. Sah, R. Shah, R. Agarwal, C. Rawat.

Sitting : S. Thardi, D. Part, R. Syal, B.P.S. Gill, Mr. J. Meneses, A. J. S. Sethi, U. Sharma, K. Sharma, S. Shrestha.

Absent : A. Sodhi, V. Kumar.

## COLLEGE FOOTBALL 'A' TEAM 2000



(L to R)

- 1st Row : T. Lodoo, S. Anwar,  
A. Chhironwal, R. Soti, V. Kumar
- 2nd Row : W. Dorja, R. Shah, G. Dargwal,  
Y. Shah
- 3rd Row : H. Gurumani, T. John, S. Tewari,  
B.P.S. Gill, Mr. M.D. Palmer
- 4th Row : G. Saighal, F. Khan
- Absent : K. Sharma

## COLLEGE FOOTBALL 'B' TEAM 2000

(L to R)

- 1st Row : B. Ryal, A. Sethi,  
B. Rastola, P. Shah
- 2nd Row : D. Dabhal, K. S. Negi,  
D. Sharma, S. Bohra,  
V. Desai, K. Bhatt
- 3rd Row : P. Paliwal, U. Sharma,  
D. Pant,  
Mr. M. D. Palmer



## COLLEGE FOOTBALL JUVENILES 'A' TEAM 2000



(L to R)

1st Row :

H. Surya, S. S. Bishu,  
S. Dhanwan, T. Dooji,  
M. Shah, K. Pankaj

2nd Row :

Mr. J. R. Dogra,  
P. Agarwal, P. Shah,  
Y. Kathayat, D.  
Shah, R. Baid,  
Mr. M. D. Palmer

3rd Row :

R. Rawan, P.  
Gorhwal, N. Shah,  
A. Pandey

## COLLEGE FOOTBALL JUVENILES 'B' TEAM 2000

(L to R)

1st Row :

A. Anuja

2nd Row :

S. Bhartiya,

A. Gangola,

A. Shah, M.

Tripathi

3rd Row :

P. Sandhu,

A. K. Singh,

B. Pandey,

H. Gorhwal,

K. Massey,

Mr. M. D. Palmer

4th Row :

A. Jalwal,

T. Sharma,

M. Ansh, P. Shah

5th Row :

P. Joshi



## COLLEGE FOOTBALL MINIS 'A' TEAM 2000



(T. to R)

**Kneeling :** B. Dharwad, D. Sharma.

**1st Row :** K. Dodeja, A. Khanna.

**2nd Row :** A. Gururani, A. V. Joshi,  
M. Jeehani, A. Pant,  
N. Pant, A. Bishit.

**3rd Row :** A. Gangola, J.P. Shahi,  
Mr. M. D. Palmer,  
S. Bhatia, P. S. Bhat

## COLLEGE FOOTBALL TEAM WHICH TOOK PART IN THE TOURNAMENT AT ST. COLUMBA'S SCHOOL, NEW DELHI



(T. to R)

**1st Row :** G. Bajwa, A. Bishit

**2nd Row :** S. Chait, S. Aitwal,  
T. Sweeney, T. Lodhar.

**3rd Row :** D. Dohal, V. Desai,  
V. Tewari, V. Talwar,  
A. Bhatia.

**4th Row :** D. Sangi, D. Shah,  
L.R.S. Bishit.

**5th Row :** Z. Khan, A. Rekman,  
A. Khan.

## A TRIP TO KILBURY

*Nirish Samrat - Five-A*



It was on 6th October when we were told that we would be going on an eco-tour and picnic. We were very excited. On 17th October we gathered at the St. Joseph's College Host House. There were three buses to take us to Kilbury. We were divided into groups named after birds. Our group's name was Henshill. We started our journey at 8:30 a.m. We sang and enjoyed ourselves during the trip. On reaching Kilbury we played for some time. Then we went on a three km trek to Pangot.

I enjoyed the trek very much. We collected sedimentary rocks and many other kinds of rocks. We also collected many kinds of herbs and flowers. While returning from Pangot we got cold drinks. After we returned to Kilbury we ate our lunch. Then we played and after that at 3:30 p.m. we got our tea. At 4:30 p.m. we drove back to school. It was the best tour I had ever been on in my life.

## CLASS SIX TRIP TO KILBURY

*Harsikandhan Jais - Six-B*

On the 4th of October we went on a picnic-cum-eco tour organised by the forest department so that we could get enjoyment together with knowledge about plant life and wild life.

In the morning we left school at about 8:30 a.m. for the St. Joseph's College Host House where we met the day scholars. We climbed into our buses and made our way to Kilbury. We rested for a while. Mr. Pandey, our







guide, told us about plants and animals and off we were for a trek to Pangot. On the way Mr. Pandey informed us in a most interesting manner about the different kinds of

plants. As we reached Pangot after a three Km trek we were served soft drinks. We then got into our buses and went back to Kilbury where a delicious lunch awaited us. We had a large variety of things to eat : Dal, Cholas, Pulao, Papad, Salad, Paneer, Puris and Raita. After our lunch we relaxed for about an hour. Some of us had the most exciting time playing hide and seek on the hill side.

All too soon we got instructions to go to our buses as we were to proceed to Khurpatal. It was an enjoyable journey, passing lovely waterfalls. We stopped and walked down to the Khurpatal lake. Mr. Pandey told us about underwater life which was extremely interesting. We returned to our buses where we were served hot tea. Our beautiful and eventful day soon came to an end. We thanked Mr. Jain, Mr. Pandey and Mr. Paul for organising such a wonderful and memorable trip for us.



## CLASS SEVEN VISITS MAHESHKHAN

*Kaishap Agrawal- Seven-A (With inputs from: Aditya Jagati and Tapish Bhatt- Seven-B)*



The 14th October was a very special day for class seven as we were to go on a trip to Maheshkhan, near Ramgarh, 25 kilometres from Nainital. We were fortunate because this year we were on an ecological tour organised by the Forest Department. This venture was initiated by the Forest Department to promote awareness about the ecology of our beautiful hills, as well as to promote eco-tourism.

You can imagine the flurry of activity which ensued! When we learned of the trip hectic preparations were made. Though the catering was done by the Department, we stocked ourselves with snacks and soft drinks to munch on the journey. Mr. Pande, Mrs. Rathore and Ms. Rana accompanied us on this trip. We were a group of 102 excited, enthusiastic BOYS! The rendezvous point was St. Joseph's Boat House. We got into three buses and off we went!

Our first halt was Gagar, where we got a breathtaking view of the snow clad mountains. One could hear cameras clicking furiously to capture the beautiful view.

At Ramgarh, we alighted from our buses and trekked to Maheshkhan through thick forests. It was a five-kilometre trek, which was extremely enjoyable and informative. Mr.



Pandey (from the Forest Department) told us about the flora and fauna around us. Also, we were made aware how, because of sheer selfishness, we were instrumental in destroying what nature had created for us. Enroute we halted at the ruins of Rabindranath Tagore's house. The view was fantastic and the soft drinks provided, quenched our thirst. We were instructed to walk silently so that we could enjoy the music of the jungle.



After a two-hour trek, we reached Maheshkhan and were welcomed by the aroma of delicious dishes being prepared. It was the most beautiful nest house-surrounded by thick forest. The lunch was sumptuous and we devoured everything hungrily.

The next stop was Shyamkhet where we visited a tea garden. A demonstration was given on how tea is grown, plucked and processed. Our last stop was the beautiful wooded Satal - where we were served hot tea and snacks while we enjoyed the beautiful lake.

We returned to Nainital at 6:30 p.m. - happy but tired. It had indeed been a very enjoyable and enlightening trip and we had plenty of stories to share with our friends. The memories of this memorable trip still linger in my mind.

## A TRIP TO KALAGARH

*Madh Gansai -Eight-A*



Our jaunt to Kalagarh was finalised in the first week of October. The trip was for the fourteenth of October. Every boy was slated, as this was an overnight journey. Under the supervision of Mr. Ravi Shankar we left for Kalagarh in a

deluxe bus.

The vehicle provided us with all the possible luxuries and the boys enjoyed the journey. Singing competitions helped us pass the time. The bus made a halt at the organizer's flourmill. Refreshment; drinks and bananas were served. The four-hour





journey ceased at the Duck Bungalow. It was a great sight to see the boys swinging on the tough branches of a banyan tree, like little Tarzans. Lunch was then served at the bungalow. The hearty lunch was very filling and the boys felt energetic again.

We quickly got on to the buses and off we went to visit the saddle dams. The sight of the Ramganga River on the dam was breath taking.

After some more sight seeing, an animal movie was arranged. The movie was great. Story-telling preceded bedtime: mainly horror ones but this did not prevent us from sleeping soundly. We woke up thoroughly rested and refreshed the next morning.

Under the watchful eyes of Mr. Ravi Shankar and Mr. Dogra we safely made our way into the jungle. The boys were excited at the chance of seeing a tiger or a lion at close quarters but much to their chagrin failed to do so. Exhausted, we made our way back to the bungalow. A



lavish lunch preceded our return to St. Joseph's College. With a prayer we started our return journey. We had experienced and thoroughly enjoyed the rudiments of overnight camping.

## AN ECO TRIP TO BINSAR

*Arshad Khandpot and Tajam Eshfaq - Noida*



After considerable pondering over the annual pre-ICSB excursion it was finally decided that class nine would visit Binsar on the first of October. Every soul was brimming with excitement, as this was to be an over-night outing - an eco-trip organised by the forest department.



Escorted by our teachers, Mr. Shankar, Mr. S. Munna and Mrs. B. Jain and some of the officers of the Forest Department - who were there to enlighten us about the beauty of nature as we encountered them- we boarded our buses at 9:00 a.m. and proceeded to our first stop: the Kanchi Temple.

Following refreshments, we proceeded along the river Kosi, seeing many birds, such as the pheasant. In the middle of the river was a huge rock in the shape of a frog. We passed Garumpani and some of us visited the Deer Park at Almora. We saw a duck, two rabbits, a bear, several monkeys, but unfortunately no deer.

Between Kathkian and Binsar, we caught breathtaking glimpses of the Himalayas and we stopped at a place where fresh spring water was available. The scenic beauty of Binsar was spectacular! We could recognise the Trishul. After lunch, we were allotted

our rooms. Some of us stayed at the TRC and others in the Forest Rest House.



In the evening we went on a nature walk. We reached a quiet place where there was a spring and a temple. No one visited the temple because they were attracted to two bulls fighting - a more intense sight!

The evening came to an end with a wonderful campfire. Singing and dancing, we enjoyed ourselves to the fullest.

The rays of the sun on the Himalayas in the morning refreshed us. Then followed another walk to the zero point, the highest point in Binsar. The scenery there was



brehtaking and sent our spirits soaring. Our guides enlightened us about the need to conserve flora and fauna, the wildlife and forests. We learned that if we care for nature, it will care for us.



On our way back to Nainital, brief stops to enjoy the famous Bal Mithai and Singodar at Almora and to enjoy soft drinks on the banks of the Kosi completed our happiness. This wonderful trip had left us totally exhausted but full of satisfaction.

## A MEMORABLE ICSE EXCURSION

Taran Surya - *Ten-B* (With inputs from Aditya Chaudhary, Mohit, Imran Ali and Ruchir Sahi)



October 5th, 2009 marked the start of the ICSE excursion to Agra and Jaipur. The ICSE batch - a bunch of 'big burly fellows' - was as excited as a small boy on receiving a brand new milk bottle! Aramika Travels arranged the trip and we left Naiatal with the blessings Mr. Paul, for what was to prove a memorable experience for one and all of us. Mr. M.C. Pandey, Mr. A. Nelson and Mr. E.D'Gama accompanied us.

We took off at three-thirty with cries of joy adding flavour to the already excited atmosphere. Soon, our bus was buzzing with activity! Some boys were singing out the lightness of their hearts, some were dancing, and others - that other kind who hardly let emotions overpower them - were simply enjoying the scene. Walkmen peeked from every waist but they had been rendered useless by the continuous hail of songs - in deep, rumbling voices!

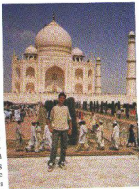
Time seemed to fly and soon we found ourselves at the Laluan Railway Station. The train took off at seven-thirty and we were pleased to be relieved of the intense heat.

Before we knew it, we were at the Agra Fort Railway Station waiting for a bus to pick us up. Time was really on the move!

We were provided very comfortable accommodation at the Hotel Agra Ashok, a short distance from the Taj. The Taj! the magnificence of this great monument held us spell-bound. We realised that true love could provide unimaginable acts - like making a divine thought like Taj Mahal come true! Ironically, the following lines flashed in our minds:

*"Ek shohanshab ne dawlat ka sahara le kar,  
Jahan garibon ki musabbat ha uske haat mein"*

(Shah Jahan has displayed the might of his wealth by making the Taj and has, almost purposely, looked down upon the love of the poor).



The evening was spent in shopping at the Sadar Bazaar. The following morning we left for the Pink City. Jaipur lay at the end of a very long drive. Most of us slept through this because excitement had barred us from getting enough sleep so far on the trip. Jaipur was like a walk down the annals of history. Oh, to have lived in the beauty and grandeur of the princely yore!

That day, we went to the Birla Mandir. Cameras now started flashing in quick succession. (It had been too bright for them to flash in Agra!!) We were given some time for shopping later. After this, we were really tired. A nine-to-twelve show 'Hamara Dil Aapke Paas Hai' at the Raj Mandir - one of the best movie halls in Asia - revived our oh so weary spirits!



The next day was packed to capacity. We were groggy when we got into our respective buses and braced ourselves for another long and weary drive to Pushkar- the site of the only Brahma Temple in the world. A visit to the temple and off we were to Ajmer. The city did remind us a little of our hometown, Nainital. We scampered to the famous Dargah of Ajmer dedicated to the great Sufi Saint, Khwaja Moinuddin Chisti and went through the sacred rituals of tying a thread and making a wish. By the time it was over, we were all exhausted and crawled back to our buses.

On October 9th we paid a visit to the Hawa Mahal- the building with no foundations. the City Palace and the Jantar Mantar. Of these, the latter caught the imaginations of everybody. The precision of the ancient architects was certainly praiseworthy.

On the way back to Agra, we visited Fatehpur Sikri. The guide over here was so well informed, that we literally re-lived those glorious days of the past.

We had lunch in Agra and struck Sadar Bazaar again. After some final shopping (which largely consisted of 'pethas'), we were all set to head home- we did, at nine-thirty from Agra Fort.

A hearty breakfast awaited us at the Lalgunj Railway Station. During the final part of our trip, we reflected on the fresh deep carving on our hearts- the fond memories of which shall always persist.



## THE EASTER PICNIC

*Abhishek Anand - Eighth-A*



The 7th of April brought a whole lot of excitement amidst the boarders; for our Principal, Mr. James Paul, had decided to take us all on our Easter Picnic to the scenic hills of Ranikhet. Easter being short holidays did not hold the attraction of going home for many of us. After a month-long stay within the walls of Sem during the month of March we were in desperate need of diversion.

On the 8th we started out dressed in crisp clothes. Our buses departed at 9 o'clock with boys in a gala mood. Our principal saw to all our comforts. We stopped at the Kainchi Temple. We were enchanted by the picturesque beauty of the place amidst which lay the historic temple dedicated to Goddess Durga and is recognized for the knowledge of Sanskrit literature imparted there.

At about one o'clock we reached Ranikhet. We visited the Kumaon Regiment Centre Museum. The medals won for the valour displayed by the Indian soldiers filled us with temporary patriotic zeal. Then we had a sumptuous meal at Hotel Chervon. Later we visited the lush green golf courses on the outskirts of Ranikhet. The terraced gardens of Ranikhet caught our eyes on our way back.

To add to the beauty of the place we saw birds of different hues and colours soaring amidst clouds drifting in the sky. They seemed to be returning home as we were.

We arrived at Nainital by 6:30p.m., tired but fulfilled. We had an appetizing dinner and soon retired to bed. We really did have a memorable Easter Picnic.



## A TREK TO GORAKHAL

*Form: Matrub - Eight-4*



God has his own technique of giving little surprise gifts to children like us. Not gifts that are wrapped up with paper with a ribbon tied upon them, but something more interesting and meaningful.

This time, in the Dashera holidays, God entered Mr. Ravi Shankar and tickled his beard till he was compelled to take us for a nature trip. Many boys did not favour the idea thinking that it would be another long walk in the heat of the sun. It was surely a long walk but not long enough to cripple us, as some boys had suggested. Thus in high spirits we on the 6th of October began our trek to Gorakhal.

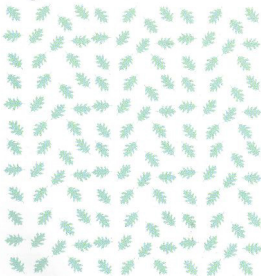
It was decided that the boys would gather at the Nainital bus-stand where they would load themselves into a "Roadways" bus which would take them to Bhawali. The boys enjoyed the first 12 kilometres of the trip but later a sudden silence fell upon them. They had started feeling sick. I saw many of them snoring on their partner's shoulders or lap which was quite inconvenient.

After getting off at Bhawali we rested for a while to overcome our dizziness and then started uphill for our trek, a four-kilometre walk to Gorakhal. As we moved along we saw green fields and shrubs, which swayed in the breeze. These gave the area a very lush look. It was quite late for flowers and blossoms but we saw trees with unidentified flowers. We also passed the air force base of Ramson.

On the way to Gorakhal we stopped at a temple where the boys sprayed themselves with holy flowers. You could see flowers in their hair. After partaking of prasad we started trekking again towards the temple of Gorakhal. The view that greeted us there was like a movie set-up, with the lake of Naukuchital falling right in between two hills. The horizon was tinged with a yellowish - orangey shade, which gave the mountains a wonderful background.

After buying the Prasad and other offerings, the boys went into the temple to pray. There they were greeted by the Pujari. The boys washed themselves from the temple tank and drank water to their fill. After the praying was over the boys came out and began their feasting. Many boys went down to a snack shop and helped themselves to delicious 'samosa' and 'choley', which were available at cheap rates. The feast ended with the apples which had been provided by school. Later the boys were allowed to rest in the fields of 'Sainik School'. The trees provided good shade from the harsh rays of the sun.

God's gift had indeed turned out to be a wonderful experience.



# CREATIVE EXPRESSION

## MY FAVOURITE LESSON



*Harsh Bishr - Class One*

My favourite lesson is P.T. I like P.T. because I have a period everyday. I am the champion of the class. Sir plays games with us. I like the P.T. room.

## MY FAVOURITE LESSON



*Rohitkumar Mehra - Class One*

My favourite lesson is Maths. I like Maths because I can think very fast and write very fast. My class-teacher teaches me Maths. I like Maths very much because it has numbers and tables.

## OUR PICNIC TO THE ZOO



*Haroon Iqbal - Class Two*

There were many animals and birds in the zoo. First I saw ducks and then I ran up to the monkeys. Then I saw the cheetah and leopard. They were really dangerous. When I saw their teeth they were sharper than my pencil. There were no lions but there were very strong tigers. I also saw monkeys, which were jumping like I do. When we were told to move out of the zoo I felt very sad because I love animals and would have liked to stay with them. But we cannot stay there because God has made us humans and God does not want us children to be in a cage. I really enjoyed the picnic very much.

## THE COMPUTER EXHIBITION



*Kavi Nanda - Class Three-A*

In the month of April the junior school had a Computer Exhibition. Mr. S. Manra and Mr. E. D'Gama asked the boys from classes one to five to take part. Everyone got busy preparing for it. Finally the exhibition was held in the audio-visual room. The entire junior school

went to see it. There were various models of computers showing us the importance of computers in our lives. The thermocol models with lights in them were attractive. Many beautiful charts relating to computers were displayed on the walls. The best three contributions were awarded prizes. We really enjoyed the computer exhibition.

## THE COMPUTER EXHIBITION

*Parvaz Deep - Class Three-B*



The computer exhibition was held in the month of April because Brother Beddoe was leaving the school. There were beautiful charts made by the children. They made very nice computers with the help of thermocol. Our computer teachers Mr. F.D'Gama and Mr.S.Manna showed the charts and computers made by children. Each class had made at least two or three charts with many beautiful colours. When Brother Beddoe saw the charts he liked them very much. He even gave prizes to the children who had made the best charts. Many

classes came to see the exhibition in the audio-visual room where the exhibition was held.

## MY COMPUTER

*Akshay Pathak - Class Three-A*



I have a computer at home. My father bought it for us, just three months ago. It is a fantastic machine. My elder brothers and my father usually work on it. Sometimes my brother also makes me work on it. But the thing that I enjoy most is playing games on it. Sometimes we watch movies on the computer. My brother calls it a 'Multimedia'. But I don't know what it means!!

## THE AUDIO-VISUAL ROOM

*Siddharth Jain - Class Three-B*



The audio-visual room is in the Junior Building between classes 3A and 3B. Inside the audio-visual room there is a big television on which we see programmes. There is a VCD player near the television and on Sunday we see movies. There is a carpet in the audiovisual room and we can sit on it and watch television. That is why I like the audiovisual room very much.

## OUR CLASSROOM



*Prateek Dhall - Class Four-A*

My classroom is at a very interesting and beautiful place. The quadrangle is just next to our class. We run out and get the best place to play in the break time. We can drink water quickly because the water-taps are also near our classroom. My classroom has many colourful charts and posters. It is big and airy. From its windows we can see the high mountains and the clear blue waters of the school swimming pool.

We can see the parents and visitors coming into the school because there is an entrance to our school near our class. We also have very beautiful plants in our class, which surrounds the statue of 'Our Lady'. We pray in front of her statue. The sunlight comes in through the open windows. My classroom is a very beautiful and friendly place to be in.

## OUR P.T. PERIODS



*Dhruv Khattar - Class Four-B*

Our P.T. periods are in the last periods on Monday, Friday and Saturday. We do our P.T. in the gymnasium and sometimes in the undercroft. Our P.T. teachers are Mr. Palmer and Mr. Dogra. In our P.T. periods we play many games and have different kinds of races. Sometimes in May and June in the P.T. periods we have swimming. I like our P.T. periods very much.

## THE LUNCH BREAK IN ST. JOSEPH'S COLLEGE



*Sagar Lohani - Class Four-A*

The lunch break in our school is the happiest time for the students. It is a one-hour break after five periods of hard study. As soon as the bell rings, the teachers stop teaching. They leave the classrooms and the students rush out after them. They run all around. The tack shop is crowded with students. They enjoy the sweets, chocolates and drinks we get there. The school ground is full of life and activity. Students

play various games. They are in a happy mood. Some students go to the reading room and read newspapers. Some students study or complete their work during this time. The peon rings the bell after one hour. The students go to their classrooms. The teachers start teaching again. The break is over!

## THE SEMINAR



*Haris Azim - Class Five-A*

There was an atmosphere of excitement in classes 4 and 5 when we heard about the Seminar. It was held on the 29th of July 2000. The thing I liked best about the Seminar was when we had to get in groups according to the colour on the chits we were given. There was a word written on the chits and when we had got in our groups, we had to join the words together to make a quote. Then one representative of the teams had to go to the stage and read the quote.

I learnt many useful things. I learnt to be kind and gentle to everyone, not to be someone else and many more things. I learnt to share with everyone, be polite, honest and not to tease anyone.

Yes, I have tried to be kind, polite and gentle to everyone. Many boys are trying to follow what they told us in the Seminar. I have been quite successful. I will try this habit for 18 days then it will become a new habit. Thanks to the Seminar we learnt many useful things.

## FRIENDSHIP



*Abhinav Seth - Class Five-B*

This year we students of classes five and four had a different experience. A Seminar was held in our school. It was held in the month of July. It was organised in a very systematic manner.

There were distinguished guests from America who were responsible for the seminar. It was for one day. We learnt many things in this one day - especially about friendship. I also learnt that we should call people by name. I learnt that we must be friendly to everybody. What I liked best was a play about friendship acted by one of our guests.

I have tried my best to apply what I learned in my everyday life. I also learnt that friendship is the only cement that holds the world together. To an extent I have been successful.

## THE SPRING

*E. Panthome - Std-4*



Ohi the pleasant delights,  
The early morning lights,  
And the birds in their flights:  
It's all in the spring.

The early morning sounds,  
The dew on the grounds,  
The rays of the sun as they move in bounds:  
It's all in the spring.

The birds a-tweeting,  
The butterflies a-fluttering,  
They sing so beautifully  
In the spring.

The flowers bloom  
Without a groom  
They bloom just to beautify our room.  
In the spring.

We go for a picnic  
Or a lollipop we lick  
But we'll never get sick  
No, not in the spring.



## A VISIT TO THE GOVERNMENT HOUSE

*Kushal Joshi - Std-8*



The Friday afternoon of 14th October was a very exciting time for classes 6A and 6D. In the last two periods of the afternoon they visited the Government House. The Government House, which is also called 'Raj Bhavan', is one of the oldest and most important landmarks in Nainital. It is even older than the 'Rashtrapati Bhavan' and has recently completed a century of its existence. Its compound is spread over 220 acres. The house itself is spread over 8 acres. It is shaped like an 'E' and was built in 1899 by Anthony McDonald. It was designed by F.D. Orage and was constructed in a year.



As we entered the grand building we were all struck by the magnificent rooms. The dining room, the study, the drawing room and the archery room were very large, beautiful, well furnished and a mixture of old and modern styles. The chandeliers and flower arrangements were lovely. The walls of the gallery were decorated with the photographs of all the Governors of Uttar Pradesh, and the past Prime Ministers and Presidents of India.

The huge dance floor inside the Government House has been converted into a badminton court. After coming out of the majestic building we were allowed a leisurely stroll in the garden and then returned to school. I thank our teachers and Principal for this wonderful learning experience.



## ANIMALS : A TARGET OF MAN'S CRUELTY

*Sameer Puriyal - Std-8*



Since the Stone Age man has been progressing continuously and has now reached the era of robots and super computers.

Human civilisation has evolved so much, but one thing remains unchanged; and that is our cruel attitude towards animals. Right from olden times, man has subjected animals to misery. The reason is his need for food, self-protection and pleasure. As time passed, social and religious customs involving animal sacrifice became a dominant feature.

Animals are killed in a cruel way to satisfy our desire for non-vegetarian food. We often see snakes, elephants and monkeys performing in the streets at the command of their cruel owners. How much do you think they earn? These people do not have enough for themselves. Can they feed the animals? The poor animal is subjected to severe beatings and starvation and finally death.

Should we not take steps to improve the condition of animals? Should we not help them by eating vegetarian food? Just by freeing the animal from the trainer or charmer the whole matter does not come to an end. The Government also needs to give employment to the trainers so that the evil practice comes to a full stop. If any animal is ill-treated, we should inform the authorities concerned. An awareness is also needed to be developed among the people, that by sacrificing the innocent animals we cannot please God Almighty. The people who kill animals for the sake of pleasure should be put behind bars and finally every person should follow the maxim "All are creatures of God, and so no one except him has the right to take their lives."

## FACTS ABOUT INDIA THAT MAY SURPRISE YOU

*Sameer Ahmad - Site-3*



- ✱ The Indus Valley Civilization was the oldest civilization of India that flourished around 3000 B.C.
- ✱ Aryabhata, an Indian astronomer, discovered that the earth rotates round the sun.
- ✱ Kathasaritsagara is the oldest collection of stories in India.
- ✱ The Indian festival Kumbhamela is celebrated once in 12 years.
- ✱ India has the world's largest amount of privately hoarded gold.
- ✱ Only a few thousand (probably 4000) tigers roam wild in India as compared to 40,000 at the turn of the century.
- ✱ The Indian King Cobra is the only snake in world that builds its nest.
- ✱ India never invaded any country in her last 10,000 years of history.
- ✱ India invented the number system. Aryabhata invented zero.
- ✱ The world's first university was established in Taxila in 700 B.C.
- ✱ Ayurveda is the earliest school of medicine known to humans.
- ✱ Sanskrit is the most suitable language for computer software.
- ✱ Bhaskaracharya calculated the time taken by the earth to orbit the sun in the 5th century - 365.258756484 days.
- ✱ Algebra and Trigonometry came from India.
- ✱ Chess (Shatranj or Ashta Pada) was invented in India.
- ✱ The place value system and decimal system were developed in India in 1800 B.C.
- ✱ Sushruta was the father of surgery and conducted complex surgeries 600 years ago.
- ✱ Karate, which teaches self-defence originated in India.



# LADAKH : THE COLD DESERT

*Aditya Singh Barn: Seven-4*



Last winter I had the opportunity of visiting Ladakh, since my father was posted there. My stay there was an experience of a lifetime! I wish to share some facts about this beautiful land.

Ladakh is indeed a wonderland in the sweet lap of the Kashmir Himalayas. It is a land where earth and sky seem to meet and it looks like the roof of the world. It is one of the loftiest and remotest inhabited regions of the world. It is a high-altitude cold desert, bounded by two of the world's mightiest mountain ranges, the Great Himalayan and Karakoram. Ladakh lies at altitudes ranging from 9000 feet (2,750 m) at Kargil to 25,200 feet (7,670m) at Saser Kangri in the Karakoram.

The summer temperature rarely exceeds 27°C while in winter it may plummet to -30°C. Surprisingly, though, the thin air makes the heat of the sun even more intense than at lower altitudes. It is said that only in Ladakh can a man sitting in the sun with his feet in the shade suffer from sunstroke and frostbite at the same time!

Ladakhis are very honest and straightforward people. They are polite, gentle and hospitable. The incidence of crime is the lowest in the state.

The drinks of the Ladakhis include the salted and buttered tea, which is very popular. The other popular drink is 'chong' (barley beer) which is a mild intoxicant. Their favourite dishes are Momong, Zan and Thupka.

Most of the handicrafts found in Ladakh are made either wood or metal. There are many shops dealing in precious stones and other artifacts.

Nature has bestowed upon Ladakh an unlimited supply of natural energy. Solar energy usage has considerable scope in Ladakh. Ladakh's climate and the direction of its mountain ranges induces wind currents especially in valleys like Drass. Therefore it could be an ideal place to tap wind energy.

In 1974 when the Indian Government threw open Ladakh to tourists, it acquired a permanent place on the tourist maps of India. The region has gained by tourism tremendously in the last 25 years. In time to come Ladakh will emerge as a major tourist haven!



## THE PERSON I ADMIRE MOST

*Aprar Kaurav - Seven-4*



Great men and women of the past have set examples before us and it is up to us to learn from their lives.

The person I admire most is Mother Teresa. She was one of the greatest missionaries that was ever born. She dedicated her entire life to the service of the poorest of the poor. She was an apostle of the unwanted. Though a foreigner, Mother Teresa settled in Kolkata and made it her home. She visited the slums in and around Kolkata and nursed those who suffered from leprosy and cancer. She cared for the feelings of those who were unwanted, uncared for and deserted by everybody. The sick and the suffering found in Mother Teresa the love and affection of a real mother. She did not neglect even the handicapped children. Therefore, she was accepted and loved by Indians of all castes and creed. She believed that the service of man is the service of God.

Mother Teresa's ancestors were hardworking peasants and this showed itself, both in her stamina and in her common sense. She was the founder of an organization called 'Missionaries of Charity'. This organization has many institutions not only in India but also in other parts of the world. Money to run these institutions was no problem for her. She felt that whenever she was in need of money, God gave it to her through his people. Her spirit of sacrifice was shown by the fact that when she was given a car used by the Pope during his visit to India, she sold it and used the money for the betterment of her organization.

For her selfless service to humanity she was awarded numerous honours both national and international. All the money she got from these awards went into her work.

Her passing away was deeply mourned.



## MY BEST FRIEND

*(Why I like him and why he sometimes bugs me)*

*Vinod Bhakuni - Seven-4*



I have many friends but only one best friend. These days it is very difficult to have a good, sincere and dependable friend. All the people whom we casually call friends are only acquaintances.

However, I am lucky in this matter. Nitin Jolly is my best friend. He is my class fellow and also a neighbour. We have been studying in the same school together for the last five years. Most of our time is spent together in studies, games and other activities. We both enjoy cycling together in our spare time.

Nitin has many good qualities. He is intelligent, kind, loving and cooperative. He is also a good speaker and our class team won the debate because of him. He is a very valuable friend. We share each other's joys and sorrows. He is good in studies. I love Nitin for he is not a fair-weather friend. He is a frequent visitor to our house. It is said that friends are thieves of time! But Nitin is an exception. He helps me in spending my time more fruitfully. In our spare time we pursue common interests like target shooting and playing computer games.

The only way to have a good friend is to be one. I return his friendship with equal sincerity, love and care.

However, there are times when Nitin bugs me. He is in the habit of sneaking. On one occasion when I had done badly in Science, I did not wish to tell my parents about it! Nitin promptly went and told my parents. You can imagine the dressing down I got from them! I didn't speak to Nitin for days! Nitin is full of poor jokes and that irritates me no end!

Nitin is still my closest buddy- and with the passage of time our friendship has only become more strong and abiding.



## EXAMINATIONS ARE A BOTHER

*Brandon Li - Seven-4*



Examinations spell trouble-  
And they sure know how to burst your bubble!  
You have to study like mad  
And if you don't do well, you'll end up sad!  
You have to sit and cram for hours.  
It's like being behind jail bars!  
There are always endless lessons to learn,  
One wonders when one's luck will turn.  
Oh! Why do we have to learn about the past in history?  
To me it has always remained the biggest mystery!  
During exams we have to put on our thinking caps.  
While preparing for Geography, we are surrounded by maps.  
The confusion of an angle and a triangle  
Has made my mind tangle and jungle.  
Miss says learn civics and economics  
But I'd rather read Archie comics.  
In Physics we have to learn about heat and light  
But I'm so bogged and confused- that I could start a fight.  
Exams are a bother-but there is no way out  
So get down to work- and don't scream and shout.  
You can't run away, all you can do is pray,  
Study hard and after the exams are over shout Hooray!

## FATHER OF THE NATION

*Niraj Deep - Seven-A*



Gandhi was born at Porbandar in Gujarat on October 2, 1869. His father Kaba Gandhi was the diwan of Rajkot. His mother was a noble and religious lady.

At the age of seven he was sent to school for his early education. At school he did his lessons regularly but took no interest in games. After passing the Matriculation examination he went to England for higher education. In 1891 he returned home as a barrister.

He started his practice at Bombay. When he went to South Africa in connection with a case, he opposed the tyrannies of the white people and started Satyagraha for improving the conditions of the Indians living there. He succeeded in his aim.

When he returned to India he started the non-cooperation movement for the freedom of his country. The whole of India stood behind him as a nation. He was arrested and sent to prison many times. He worked as the chief guide of the Congress. Under his leadership, we became free on 15th August, 1947.

Truth and Ahimsa were the guiding principles of his life. He hated the sin and not the sinner. As a follower of truth he was always ready to own his mistakes. He had no ill will towards anybody. He was a great saint and moral reformer. Complete Swaraj was the ruling passion of his life.

On 30th January, 1948 he was shot dead by Nathuram Godse when he was going to his evening prayers. The whole of the world was sad at his death. George Bernard Shaw said, "It is an irony of fate that he who preached non-violence became a prey of violence".

Mahatma Gandhi said, "A clean confession, combined with a promise never to commit sin again, when offered before one who has the right to receive it, is the purest type of repentance."



## COLLEGE MAGAZINES AND THEIR USES

*Abhay Shah - Seven-B*



A college magazine contains articles, stories, poems, riddles contributed by the students and the staff. The topics dealt within the magazine are not of an ordinary type. They are selected after due consideration and are of special nature. It's matter concerns the students. It is chiefly educational and interesting. Writing articles helps the students in widening their outlook as their thoughts are expressed in their own language.

Nowadays it is generally seen that every school or college encourages the circulation of its magazine as it is believed that without a magazine a college does not function well.

The uses of college magazines are many. They develop thinking and give practice in writing to the students. Before writing an article, a student has to think about the subject-matter. He consults some books or reads some articles. After due consideration he begins to write. There is also another reason why everyone takes interest in such a magazine. Everybody likes to see his name printed. So every student tries his best to select such articles as may be approved by the staff and principal.



## THE CHANGING INDIAN FAMILY

Nitin Jolly - Seven-A



India has a long tradition of joint families. All the members of a family live together in harmony, supporting each other emotionally and financially. However joint families have both advantages and disadvantages.

India is an agro-economy, where approximately 70% of our population still resides in villages and depends on agriculture for their livelihood. In a joint family farming becomes easier. The land holding is consolidated and all the members contribute in the use of farming implements, tractors and so on.

Even in the urban areas, where both parents are working the institution of the joint family has a very important purpose to serve. The presence of grandparents in the house is very reassuring for little children. Grandparents shower the little ones with their love and their presence is a boon for working parents.

In such families where the old and infirm are taken care of, children develop qualities of sharing and caring. If there is a crisis in the house all the members rally together. In case of a misunderstanding, there are elders to support, mediate and bring about harmony. There is no question of loneliness or lack of company in such families. Moreover, all property and wealth is jointly owned, which adds to the prestige of each family member.

However today, the institution of the joint family is dying out. The 21st century brought in the era of the nuclear family. There is no doubt that this kind of family enjoys certain types of advantages. Generally these families are small, and so the children get the best of opportunities vis a vis education, food, clothing and so on. A close bond is developed among the family members, each helping the other to grow and blossom. As compared to joint families, in the nuclear families parents have more time and resources. Every family member gets the space to grow. Children grow up to be more responsible and independent. Parents are able to give their offspring more quality time.

## INDIA OF MY DREAMS

*Aniruddh Shah - Eight-4*



India is my country and I have several dreams for my country. I would like my country to be all that is true and just, nurturing a principle of equality. India would be a happy and perfect place to live in. It would be a land of peace and prosperity. India of my dreams would be modern, scientific and technological.

Every one in India will have the essential amenities of life: food, clothing and shelter. There will be no casteism, linguism, communalism, regionalism, separatism and violence prevailing. Social evils would be eradicated from the country.

No one in India would be left illiterate. Education system would be improved. Educational institutes would no longer be an arena for dirty politics, corruption and nepotism. The political set-up would be further improved. We would try our utmost to restore India's heritage. There will be progress in all spheres.

India of my dreams would thus be an apostle of peace, prosperity progress and brotherhood and she would again re-establish itself as a 'Paradise on earth'. I hope that my dream will come true.



## THE BEST ADVICE I HAVE EVER RECEIVED

*Aniruddh Singh - Eight-4*



Work hard, and leave unto God the rest. This is what my father said when I was young and he has been repeating these words over the past few years. The sentence mentioned above means that we should work hard and not think of the result or output. This is the sentence, which relieves me when I am drowned in the depths of despair.

This is the saying my father follows when his business is not going well. This helps him to bring up the business to profit level. I have seen my father working hard and soon I too took up this motto of his and now I find it very helpful. I have always remembered this saying and it always comes to my mind when the air present around me is filled with despair too deep for words. These words make my thinking liberal. When I am on the right path and facing a problem, then keeping those words in mind I never worry about the consequences.

As I study in a boarding school, I am often forlorn and I can't concentrate on my studies. Then, remembering my father's advice, I realise that I have to work hard and not think of the result and I am confident that in the end I will achieve my aim.

This advice has surely helped me and I am sure you won't be disappointed when you start following it.



# HOW POLITICIANS ARE RUINING OUR COUNTRY

*Fareez Mattoo - Eight-A*



It is estimated that a single rodent can ruin food enough for one year for a family of five members. But politicians in our country prove to be worse.

They befoul us in broad daylight and are like bandits who do not need masks. The percentages of scandals are soaring. These politicians are completely submerged in the depths of corruption. One lie leads to another; bribes have become a common feature in their existence.

Where their needs aren't fulfilled by persuasion and lies, force and vandalism take the forefront. Let's take elections as an example. Leaders who know that they can't be sitting on the seat of power or what is more popularly called 'Kursi' use the famous policy of booth capturing. The politicians have really proven themselves to be dishonest good for nothings. They organise big rallies in which false promises are made and are later broken. Nothing except paper work stacks up day by day. No plans are really ever put into action. None of these people care for the welfare of the people. Problems such as poverty, illiteracy and corruption are not dealt with sincerely.

There are some honest politicians but they often follow wrong policies, which lead to unsatisfactory results. They do not focus on major problems and are only out to show their progress in technology and other such irrelevant fields. Anyway, no honest leader can cooperate with a corrupt staff.

Agendas of parties and five-year plans are never successful. The economy of India is drained and is pocketed by the unpatriotic citizens who are not at all interested in the gains of the country but for themselves and their clan.



*People never improve unless they look to some standard or example higher or better than themselves.*

- TYRON EDWARDS

## THE AUTUMN FESTIVAL NAINITAL

*Bhaskar Pandey - Eight-A*



The advent of autumn - birds soaring high in the cloudless sky. The marigolds bloom in grace to adorn nature with their multi-coloured hues. The whole landscape wears a new look. This unmatched beauty of the autumn season enhances the scenic beauty of the town of Nainital - a tourist splendour lying amidst soaring hills and a kidney shaped lake with colourful boats and yachts sailing, and temples greeting the sun from the East.

To celebrate this grand natural season Nainital organised the "Kumaon Mahotsava 2000" with a motive of acquainting the people with the Kumaoni traditions, customs and values.

Weeks before the festival several trucks were seen parked in the stadium unloading the requisites for the spectacular occasion. A few days before the festival a large, grand dome-shaped stage was erected on the field.

The festival commenced on the 9th of October with a magnificent display of fire-works that illuminated the night. This festival scheduled for four days was highlighted by the performances of artists of national and international standard.

On the first day a magic-show was organised by a famous magician from Lucknow. It left the audience gasping in wonder. His skills and tactics were awe-inspiring. Followed was a much-awaited display by the famous actress Hema-Malini and her troop. They presented a divine act called - 'Jai Mahalaxmi'. It won the appreciation of the large audience for its presentation and special effects. A play directed by Feroz Khan added a humorous touch to the festival. Performances by local artists also entertained the people. The festival thus acted as a stage for the young talents to display their skills.

Along with the Kumaon Mahotsava many other events were also held in which 'The Gram-Shri Mela' is worth mentioning. It was a fair where the traditional articles of use in Kumaon were on display. It was an encouragement to the local handicraft industry to improve their production to meet the challenges of the global market today.

The grand festival ended on the 13th October with a presentation of Da Arun the famous Indian pop-folk singer. It was the most sensational of all. Everyone enjoyed seeing their favourite artiste in a live performance. The audience could not help dancing to the tune of her thrilling songs.

The Autumn Festival thus proved to be a great success and added to myriad colours of the Autumn Season.



## AN EYE OPENER

*Aravind Rajul - Niles A*



Poverty is still prevailing,  
In many cities of the world.  
If it should go unchecked,  
I'm afraid to say that humanity has been cold.  
People who don't have a house, sleep on the streets.  
In conditions so utterly miserable.  
For a wealthy man, the conditions are quite unthinkable.  
What a shameful world we are seeing today!  
People are dying under our noses.  
The money given in for charity is given in miserly doses.  
Human greed has given birth to poverty.  
I think there still can be a cure.  
The innocent poor children still play,  
While their parents are out to beg in the streets.  
They don't know the meaning of poverty  
They probably don't know what they need.  
So let us help the poor, every human young or old,  
And let us make poverty extinct and gone,  
From the entire face of the world.



## IF WE FAIL

*Tarvir Jagpal - Niles A*



What will we do  
If we fail?  
When we fail  
Tears will run down our cheeks.  
If we fail  
Some people will mock at our grief.  
If we fail  
What will we do?  
If we fail  
We will wait for the next opportunity.  
If we fail  
We shall make use of the next opportunity.  
If we fail  
No fear will ever stop our path to success.  
The determination shall always be there  
And we shall never fail.

## DR. B. R. AMBEDKAR

### FATHER OF THE INDIAN CONSTITUTION 1893-1956

Ankit Sharma - Nine-8



As the unquestioned leader of the depressed classes and the principal architect of the Indian constitution, the name of Dr. Bhimrao Ambedkar will always be remembered in Indian history. He was the main inspiration behind the inclusion of special provisions in the constitution of India for the development of schedule caste people. Dr. Ambedkar was the law minister of India from 1947 to 1951. During 1942 -1946, he also served as the member of viceroy's executive council and from 1926 to 1934 he was a nominated member of the Bombay legislative council. He attended the round table conferences in London as a representative of the depressed classes of India. Dr. Ambedkar also took part in the satyagraha of untouchables at Nasik in 1930 for opening the Hindu temples to them. To strike at the conscience of the orthodox Hindus, Dr. Ambedkar, together with his 2-lakh followers, embraced Buddhism on 14 October, 1956.

Bhimrao Ramji Ambedkar was born on 14th April 1893 in a very poor untouchable family of Madhya Pradesh. Being an untouchable, the young Ambedkar had to face all the indignities suffered by the rest of the members of his class. The then ruler of Baroda was highly impressed with his talents and he helped Ambedkar to travel to U.S.A. for higher studies. In U.S.A. he did his M.A. in 1915 and Ph.D in 1916. From 1918 to 1920, Dr. Ambedkar was a professor of law. In 1925, Dr. Ambedkar set up his legal practice of a lawyer at the Bombay high court.

This widely learned man and liberator of the downtrodden passed away on 6th December, 1956.



## AN ALIEN IN MY BEDROOM

Tajam Kapadia - Nine-4



Just lying in bed, not fully awake and not completely asleep: this was my state. I was in no mood of sleeping, so I had put on the stereo system. The music was delightful; the atmosphere was pleasing as I was alone and listening to a symphony on the stereo. Drowsiness overpowered me and I felt a drifting sensation, gliding me downwards and sideways as I slid into oblivion.

I heard the faint echo of the repeated sentence, "O! for the wings of a dove" that seemed to echo repeatedly in my ears. I don't know whether I was

dreaming or I was really experiencing something beyond the realms of physical probability. The fact remains I had the impression that some mysterious being was standing near me. I had to look back. It was a creature - but surely not human. I kept on guessing for some time. My mind started working properly when I realised he was an alien. I was shocked! "An alien - and in my bedroom!"

Then a voice, whose source was the alien's mouth, seemed to drill into my ears. It seemed as if he needed some help. He uttered some words but they were of no use either to him or to me, because I was not able to understand his language. He then pressed a button on a machine that was tightly fit to his hand. He could then speak in my language. The alien recited a long and sad story. As if it was stored in a computer's memory.

While reciting his story he said something strange which was beyond my comprehension. It looked as if he was weeping. The highlight of his story was that the spacecraft in which he had landed on the earth was surrounded by many humans and he was afraid to go there. He requested me to escort him to his craft. I promised him to do the job early in the morning.

When I woke up in the morning, the alien was not present there but he had left a paper in which he required me to express two wishes which he would make come true. I filled up the two wishes which were as follows:

- i) The alien would come once again to visit me.
- ii) The alien would grant world peace.

Thereafter the pen and the paper disappeared. I was happy by the things I had wished and I am still waiting for both the things to come true.



## INDIA'S TWENTY-SEVENTH STATE - UTTARANCHAL

Malay Eshir - Nine-11



After a long period of turmoil and agitation, the bill for the twenty-seventh state, Uttaranchal, was passed by the monsoon session of the Parliament. The new state was born on the 9th Nov 2000 amidst a lot of fanfare and celebrations. After the initial euphoria was over, the residents of Uttaranchal welcomed their new state with mixed emotions. Politicians from all walks of life jumped into the fray to make the most of the situation. However, the common man realises, he is going

to be the worst hit but we have a very long and arduous path to travel on, to achieve success.

As a student, I realise my state has tremendous potential for development - the most vital factor for building the new state would be thorough planning at the grass root level. Uttarakhand abounds in natural wealth - which needs to be exploited effectively.

There are many possibilities of promotion of industries in Uttarakhand. Hydroelectricity can be generated in plenty and there will be no dearth of power in the state. We have vast reserves of raw herbs. The ayurvedic medicine industry can be a boon to the new state. Cottage industries can be set up easily. The local handicrafts (wood crafting, candle making ) are very popular all over the country.

Two thirds of the forest reserves of Uttar-Pradesh have come into Uttarakhand. If these rich forest reserves are exploited systematically and scientifically they can provide a good source of revenue. Besides, agro based industries have a good prospect in this area. Horticulture and floriculture are commercially viable ventures in this area.

Tourism, of course, would be the mainstay of the economy of Uttarakhand. Our state abounds in natural beauty and encompasses some of the most beautiful hill stations in the country. It also possesses, one of the world's best skiing grounds in Auli. River-rafting, mountaineering, trekking, skiing - these facilities can be developed and this area can be made a haven for holiday makers - attracting both domestic and foreign tourists - and thereby providing a major source of revenue for the state.

Once our state is on the path of economic development, public awareness will increase, which in turn would lead to educational development. If the people of Uttarakhand adopt a broad-minded attitude, and if our politicians are loyal to the people; if we avoid red-tapism and bureaucracy and attain unity among ourselves, we would definitely be heading towards an UTTARAKHAND OF OUR DREAMS!



## INDIA OF MY DREAMS

*Deepak Khatt - Noida*



I am very proud of my country, India, that is Bharata. It is named Bharata after the name of a king of solar dynasty called Bharata. He was a very famous monarch. King Dushanta and queen Shakuntla were his parents. The ancient history of India is very rich, glorious and far famed.

India has been a great and wonderful land, but during the middle ages, it fell on the thorns and bled under foreign invasions and domination. Now, India is a free, sovereign democratic republic, and yet it has not been able to touch even the fringes of its ancient glory and splendour.

The India of my dreams will be a very strong, united and powerful nation. Financially it would not depend on any foreign aid and assistance, rather it would help other developing countries with finance, technical know-how and gains of research of deep and abiding nature.

Militarily India would be self-sufficient, strong and powerful, a great world power to be reckoned with. Then no neighbouring country would dare to interfere in our internal problems by inciting feelings of separatism and extremism. But India would remain a peace-loving country. Her relations with her neighbours would be very cordial, friendly and co-operative.

I want to make India a fully developed nation. Then there would be no poverty and unemployment. These create desperation, frustration and indiscipline among the people, specially the youth. Every capable person would be provided with a suitable job. India's manpower is great, it is second only to China. This valuable power would be fully utilized by expansion of trade, commerce, industries and all other avenues of employment and wealth generation. There would be no power shortage of any kind.

The mills and factories would work day and night, for 24 hours, at full capacity. There would be no reservations of any kind, no concept of minority and majority. The nation would be above every thing. Everybody will have his or her desires fulfilled according to his merits. Merit, quality, honesty and capability will not be compromised at all.

The people of weaker sections like women, and the exploited would be given better jobs and education opportunities by offering them liberal scholarships and loans to empower them. Self-employment would be encouraged.

I want to implement thousands of my ideas to see India of my dreams come true, but for want of space and time, it is not possible to enumerate them all here. In India of my dreams there would be a proper balance between rights and duties, privileges and obligations because one cannot exist without the other. It would be a Bharata of Ghandhiji's dream of Ram Rajya and that of Rabindranath Tagore's vision :-

Where the mind is without fear  
And the head is held high,  
Where knowledge is free,  
Where the world has not been broken up  
Into fragments by narrow domestic walls



## THE JOYS OF FLYING

Udai V.K. Rathore - Ten-4



*A beautiful day with a clear sky and the sun was beating its hammer on the oval of the brown earth. All this didn't matter that much to me; maybe because I had been seeing the same landscape for the past couple of weeks, or maybe because I was cruising through the famous 'Galilee-Heights' at around 200 knots, 250 feet above the treacherous ravines very close to the Israeli border.*

*All seemed to be calm and serene, except for the gentle hum of the twin-engined Mig-29 (fulcrum) and the occasional crack over the radio to confirm the required manoeuvres from my wingman, a Mig-21 (fishbed), strike-support aircraft. Our mission: to avoid detection from the Israeli SAM's (Surface to Air Missiles) and seek out and destroy the Israeli Air-Force Base at Ramon.*

*All had gone as expected when suddenly the cockpit of my craft lit up with red-flashing warning lights. The tall warning was consistently blaring out the same message again and again, "Warning! Missile Launched ....". I had been detected, and two Israeli SAM's were hot on pursuit of two unidentified and hostile Aircraft. No amount of anti-missile manoeuvres or flares and chaff helped. The missiles kept on closing in at over 3.5 mach (approximately 2975 mph). I was doomed. Finally the moment came. First it was my wingman who was hit and the plane was instantly converted in to a large inferno of fire and metallic debris, strewn all over the placid sky, followed by a large boom. Then it was my turn. The missile was closing in fast, and a second later I met the same fate as my comrade had previously. All this was finally followed by a message that popped on my computer screen that read, "MISSION FAILED", and I unwillingly let my hands slump off the simulator joystick.....*

In reality, this is as close as I will ever get to fly in action for another couple of years. Ever since I can remember I have never wanted anything as much as the desire to fly fighter planes. It has always been my fantasy to participate in a real life 'dogfight' (term used for air-to-air interception), to feel the adrenaline rush as one squeezes the trigger to release the lethal dose of lead into the enemy.

No matter how many times I see a fighter-plane cruise by, it still fascinates me with the same enthusiasm as the first time I had seen one in reality. Ever since I was a small toddler planes and helicopters, or, in fact, anything that flew intrigued me. But it was that decisive day in October that my father for the first time took me to the Annual Air-Force day parade in Hindon. The moment I set my eyes on the dazzling fleet of newly arrived Mig-29's and other assorted military planes, I just knew what I was going to do when I grew-up.



That passion for the skies has still lingered on in me, if not increased. Even when I occasionally dream, I can't see myself doing anything else but joining the Indian Air Force. It is the only career for me that shall wholly satisfy my thirst for high speeds and high thrills. I find nothing more exciting than stepping into the cockpit of an Indian Air force jet. That shall be the most memorable moment in my whole life, but till then there are still many obstacles to overcome and a many more foes to defeat.!!



## I AM ONLY BLIND

Animesh Prasad - Ten-4



I would like to see a cuckoo singing sweetly on a tree,  
To see the ships sailing on the blue sea.  
I would like to see the sun setting beyond the blue horizon  
To see the lightning during thunder-storms due to clouds collision.  
I would like to see a rose-bud blooming into a beautiful flower,  
To see the earth drenched with sunlight and rain water, after a shower.

But all these joys are forbidden for me,  
As I am a blind person you see.  
Dear God I sometimes wonder why thou hast made me.  
When Thou hast not given me the gift to see.  
O God please help me, so that I do not have such thoughts in my mind,  
So that I can have a cheerful heart, by leaving my miseries behind.

Thank you God for all that you've done for me,  
Even though I cannot see the wonders of this earth made by Thee,  
At least I can hear the cuckoo singing,  
The melodious sound made by a bell ringing  
The sound of the waves splashing against the shore.  
And all the other sounds the earth has in store.  
I am neither deaf, dumb, nor lame,  
So I should have a bit of shame,  
For being so fretful,  
And not so grateful,  
As to thank Thee for being so kind,  
And making me ONLY BLIND!



## A SONG SUNG TO PERFECTION

*T. Surya - Ten-8*



Are you not intoxicated?  
Are you not driven  
To a world of fantasy?  
A song sung to perfection.

Do you not set sail  
On the ship of your thoughts?  
Are you not transported to  
A world where peace prevails?

In which world there is no jealousy.  
No anger, no hatred, no desire!  
Peace rules that world  
With an iron hand.

A slight flow and the ship sinks  
To dump you where you belong, .....  
The human world that overflows  
With anger, hatred, jealousy, desire

Oh! How one longs for such  
transportation.  
A song sung to perfection.



## BORN TO SUCCEED

*Arun Bhar - Ten-8*



I am a born winner, and I am going to succeed.  
Not by chance, nor by luck- but surely through my deeds.  
'God will see me through' is the motto of losers,  
for they have nothing else but luck to curse.  
I love to be at the top, to be the number one,  
Because I am not the dull moon but the brighter sun.  
Being the one who gathers crowds is my perfect aim.  
Because I take life to be a serious conquering game.  
Over confidence and complacency are my only fear.  
For getting this attitude in me makes my defeat clear.  
'Take defeat in the right spirit' are words which I hate,  
Because to be defeated is not in my fate.  
Success is at my doorstep, modesty is my heart,  
And from this attitude I never want to part.  
You can be the winner, the one who has success,  
And don't get this thought that you are always less.  
From someone or something which looks to be smart,  
Because 'Idem of Steel also have a heart'.

# PROSPECTS OF INDIAN DEMOCRACY IN THE NEW MILLENNIUM

Abhinav Verma - Test-4



The 20th century saw Asia - and India - emerge from their deep slumber to shake off the colonial yoke. It is no accident that one of the greatest men of the century, Mahatma Gandhi, who may well be an icon for centuries, was born in India. It was because of his compassion, and his disciples faith in liberal views that Indian democracy has proved all prophets of doom wrong and stands today as a glorious example in a continent where communist and military dictatorship and virtual one-party authoritarian rule are widely prevalent.

The nationhood which India acquired in the 20th century, has brought it in the 21st century to the threshold of great power. It is now widely accepted that the new century will be an Asian one.

India is expected to surge ahead economically as the earlier lead gained by the European powers from their exploitation of colonies is lost. As economy prospers and society exhibits its unity because of the traditional values, all the hindrances to India becoming rich and powerful are bound to melt away. What will be India's most significant contribution to the new century? It may well be the triumph of multiculturalism. Elsewhere, the concept has been less than successful.

However, in certain areas things are not so bright and rosy. As India neared the new millennium, the political process reached new lows. Criminals got themselves elected to Parliament in large numbers, and MLA's tried to attack another inside the U.P. Assembly. Democracy wept.

However for some nothing has changed. Their problems are eternal: The pain of hunger, the shame of illiteracy, yet another mass funeral after yet another caste killing, and the savage reality of communal attacks. Millions of Indians continue to live diminished lives, far from succour, deprived of minimum human dignity. There is nothing so tragic as a starving baby.

But the concept and reality of life and living have altered. For the middle class, having expensive fun has become socially acceptable. As the net amused and informed, a new generation came into being richer and globalised. A confident India took on the world.

India, however, with its unbelievable 4,365 communities and 325 languages has not only survived but is poised to emerge as a Global Power in the 21st century. It continues to derive immense pride from the fact of the wonderful diversity enriching its culture. It has a heritage without a parallel anywhere else in the world. The reason why it has sustained is because of our vibrant democracy, which, in turn, has been bolstered by an age-old tradition depicted by this passage from Arthashastra "A single wheel cannot turn and so government is only possible with assistance. Therefore, a king should appoint councillors and listen to their advice". This wisdom should guide the Indian administrators of the new millennium.

# THE INDIA OF MY DREAMS

Abhishek Gupta - Ten-4



Since Ancient times, India has been one of the greatest countries of the world. Long before man learnt how to lead a civilized life in the West, India gave birth to one of the greatest civilizations in the world : The Indus Valley Civilization. Although its growth was halted by the advent of the Aryans, a new era started in the history of India. The Aryans gave birth to the Vedic Age and helped in bringing the northern part of India under a single ruler. They developed such scientific inventions in those days, hearing about which, the Westerners mocked even in the nineteenth century. It is easy to conclude that the vehicle used by Lord Rama, to escape with Lakshman and Sita from Lanka was none other an aeroplane, and the Divya Drishti given to the servant of Kind Dhrithamesthira was none other, than Virtual Reality Glasses.

India is equally indebted to the Mughals for having built masterpieces of architecture. They also helped greatly in the development of dance and art in our country and were successful in establishing something, which is lacking even today: Hindu-Muslim unity.

And yet this great country fell slave to none other than Her Majesty's soldiers. For two hundred years, without any development whatsoever, we lived under the British, but finally on the 15th August 1947, we broke free of the chains, and awoke to freedom. But what did we actually make of this freedom? Although our country has made rapid advancement in various fields such as Science and Technology, the effects are yet to be felt by the common man, due to the ever-increasing scales of population and corruption.

The India of my dreams would be an India, not only where everyone would be financially well off, but an India where there would be love and unity amongst it's fellow citizens. Our population has now reached such a level where it is not necessary to stabilize it, but to reduce it's number drastically. Education needs to be spread through out the country, and corruption has to be done away with.

We being the next generation have a lot to do on these issues. We need to set an example for others to follow. On the topic of education and population, we can educate our servants and other poor people living nearby. We might feel, that a drop in an ocean will have no effect, but we must also remember that each part of the ocean, is a drop in itself and it is by remaining together, that the ocean has been formed.

Corruption can be stopped by us only. We are going to become the industrialists and officers of tomorrow. We can take a silent oath, never to offer or receive a bribe in future and thus, if not finish them, at least reduce corruption.

I am sure that if we make a commitment today, the day when India will take it's place among the super powers of the world, is not too far away.

# हिन्दी खण्ड

## बाबा घर कब आओगे



वह गन्हा का बच्चा, रोज की तरह आज भी अपने घर के दरवाजे पर खड़ा अपने बाबा की दुँडता है। सोचता है— उसके बाबा न जाने कहीं खो गये इतनी बड़-बड़ की दुनियाँ में। बस यही चाह है कि खत आया का एक दिन, लिखा का गुन्ना बिना गा करण, जंग छान होगे ही घर आऊँगा और तुम्हारे लिए केर सारे छिलीये लाऊँगा। नन्हीं की जान जंग का बल्लब भी नहीं समझ पाता बस उसे पाव है बाबा गये थे सिर पर टोपी पहनकर। जंग जारी है। आज भी भी बरेसान है। बच्चा सोचता है क्यों होती है जंग, क्यों लड़ते हैं पाव मेरे, और सों जाते भी के औचल मे। सुकड़ उठते ही फूट बैठता है। बाबा नहीं आवे ? और मिलने रहता है बाबा घर कब आओगे।

विशाला अंतपाल

5 अ



## गुरु महत्व



*"गुरु ब्रह्म गुरु विष्णु, गुरुर्देवीं महेश्वर।  
गुरु तत्त्वार्थ प्रदायक, तस्मै नमः ॥"*

अर्थात् — गुरु ही ब्रह्म, गुरु ही विष्णु व गुरु ही महेश्वर हैं।

गुरु ही भगवान का असली रूप है। ऐसे गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ। गुरु का स्थान सर्वोच्च है। गुरु को भगवान के मुख्य माना जाता है। जबकि कबीर दास जी ने भगवान से बड़ा स्थान गुरु को दिया है —

*"गुरु जोखिय होऊ अहे, सबी लाग्य पाव।  
कलिलारी गुरु अगुनी, जोखिय दिखे बलाव ॥"*

धर्म ग्रन्थों में ईश्वर वन्दना से पहले गुरु वन्दना का स्थान है। यथार्थ में गुरु महिमा अतर्कनीय है। एकलव्य, राम व कई अन्य महापुरुषों की गुरु वक्ति एक उदाहरण है। गुरु को ही अज्ञान सभी अन्धकार से निवृत्त करने वाला व ज्ञान सभी प्रकार फैलाने वाला कहा गया है —

*"अज्ञान विजितान्धकार, ज्ञानान्धकार शलाक्या।  
अगुनानीनिन होत तस्मै नमः ॥"*

अधुनिपता की दुँड में हम सब गुरु महिमा को गुल रहे हैं। उपरोक्त लेख में मैं एक प्रयास है कि हम सभी गुरु महत्व को समझ, उनका सम्मान करें।

अधुनीय जोशी

5 अ

## नींद



होले, होले आती नींद,  
तुमके सौ आ जाती नींद,  
छाटे-छाटे, अच्छे अच्छे।  
कल्पने कई दिखती नींद।

बुनू-बुनू दिन ने सो जाते,  
छाटे जग आ जाती नींद  
सैरसपाटे जो करते हैं।

तुमको इन्टरनेट आती नींद

रोहित कश्यपशर्मा

5 अ



## डॉ० भीमराव अम्बेडकर



डॉ० भीमराव अम्बेडकर, मध्य प्रदेश के बहू नगर की धरती पर 14 अप्रैल, 1891 को एक 'महान' परिवार में जन्मे। पिता रामजी कलकल की आज चौदहवीं सन्तान के रूप में, डॉ० भीमराव जी के तुलार व प्यार के ममता रानी जीवन में मात्र 6 वर्ष तक ही खेल पाए। बदले में पिता - चाची भीमराव जी का लदार प्यार, अम्बेडकर को चाची प्यार में 'भीम' नाम से पुकारा करती थी। काकावर में यही बालक 'भीमराव रामजी अम्बेडकर' कहलाया। अंग्रेज हिन्दुओं में 'कुआबू' शब्दी बीज को छलकर 'पूत' जाले और सातन करो की कसल कर रहे थे। अध्यात्मक तुमकी अवास पुस्तिका तथा 'कलम' तक भी यही पू सकते थे। उन्हें पूरे दिन स्कूल में प्यासा रहना बड़ता था, क्योंकि अछूत होने के कारण वह यहाँ पानी भी नहीं पी सकते थे। इसलिए महाराज कोलापुर की महाशला से डॉ० साहब ने 1920 में 'बूक बापक' नामक पत्रिका का प्रकाशन कर अपने समाज की शोचनीय दशा का वर्णन किया। हिन्दू समाज-व्यवस्था पर लोभे जाग्यो को छोड़े छोड़े, क्योंकि यह (हिन्दू समाज) अंग्रेजों की बलहीनता रानी पिछड़े में कौद पड़ी थी तरह फड़फड़ा रहे थे। डॉ० साहब ने हिन्दुओं को जगते हुए 'तुम्हें केतना रानी प्रकाश कर कर कहां 'सत्यमेव जयते' नाम में मिलने वाली बस्तु नहीं है, इसके लिए हमें संघर्ष करना पड़ेगा।' 1927 में डॉ० भीमराव ने 'बहिष्कृत भारत' नामक मराठी पत्रिका का प्रकाशन किया। 15 अगस्त, 1947 को भारत के स्वतंत्र होने ही पौ जयंती का जल मेहरा के नेतृत्व में नयी सरकार ने स्वतंत्र भारत के प्रथम बलून मंत्री का पद संभाला। विश्व का चलेता यह महा मानव 8 दिसम्बर, 1956 को महाशयान की ओर प्रस्थान कर गया।

विपुल आधुनिकी

6 अ

## पिकनिक, एक अविस्मरणीय दिन



हर वर्ष की भाँति, इस वर्ष की अन्य कक्षाओं की तरह, कक्षा छ: की बच्चों की विषयगत वृत्त आयोजन किया गया। जैसे ही गैरिजल नगर अनेक पिकनिक योग्य स्थानों के लिये प्रसिद्ध है। जहाँ एक ओर स्नायु, चीन्हा कील, लेम्बुस एन्ड, रिचिन टॉप, कैम्पना बौक व किलबरी जदि मनेहरी व स्मरणीय स्थान है वहीं निकटवर्ती जंगल जैसे बीमताल, चौकुचिदाताल, खाताताल व खुर्शीताल जदि कम की पू देने वाला जगन्म देते हैं।

हमारी कक्षा के लिये 'किलबरी' व 'खुर्शीताल' को पिकनिक के लिये चुना गया। पार अस्मर वी हजल को समस्त छात्र ज्ञात 8.30 बजे सेन्ट जेन्सक कलेज के बोट हाउस में एकत्र हुए। अनुशासन व मार्ग दर्शन हेतु हमारे साथ श्री आर. डी. रेण्डो, बीमली अवर, जगन्नी, श्री अ. गेल्लन भी थे। उन विभाग के कुछ अधिकारी भी नहीं उपस्थित थे। विन्हीने हमें वहाँ के विषय में ज्ञान दिया।

एकपरास, हमने किलबरी के लिये ब्राह्मण किया। वाता का सेबोंक बना हुआ था। मार्ग में जलूतिक रोम्यर से परिपूर्ण दृश्यों ने हमें बंध मुग्ध बन दिया। वाड़ी से कुछ क्षण के लिये हमने जलत्वन शिवलय की बरों से मरी चोटियों को निहार, बहुत सुन्दर लग रही थी। पुनः हम लंबों ने किलबरी के लिये प्रस्थान किया। किलबरी हरिवाली से आवसहित एक स्मणीक स्थल है। वहाँ ओक, पेग्यार, गुल्म और जंगली पाँपर के वृक्षों का बहुल्य है, जिलने विभिन्न रंगों के सुन्दर पक्षियों का कोलहल जवाहलन को मनोहरी बना देता है। वहाँ पर मनविमल का विमल नृह है, जहाँ पर हमें वहाँ के कम अधिकारी जो ने प्रकृति की कथा के लिये कुछ इस प्रकार बताया कि प्रकृति में सब कुछ एक दूसरे पर निर्भर करता है। बहालनार्थ — भौतिकता में पक्षी जाने वाली छोटी कामक पक्षियों की जगति के सुखा से जाने से 'बैलबरेरा मेजर' नामक पक्षी की प्रजाति भी लुप्तप्राय हो गयी।

तन्हीने जगें बताया कि हमें बीचो साइवरीटी कन्सलेशन करना चाहिये। उन्ही थोड़े हमें प्रकृति को बखाना है तो उसने हमने वाले प्रत्येक प्राणी तथा वनस्पति को बखाना है। इस प्रकार प्राकृतिक सुखा हेतु ज्ञान प्राप्त कर हमने वहाँ से पबोट वापस प्राप्त के लिये पद यात्रा आरम्भ की। मार्ग में बाँस के वृक्ष तथा लहरीले नलरुप देरें। संगेट जगन्नी से पूर्ण, खेतीहर जान है। वहाँ पर लैडीशर सेन्ट हैं तथा कहीं-कहीं चौड़ी जगहें वाले वृक्ष भी नजर आते हैं।

वहाँ से हम पुनः जग में बैठकर किलबरी जाये क्योंकि वहाँ हमारे लिये दिन के भोजन की व्यवस्था की गयी थी। अपने रहवाशियों के साथ स्वस्थित भोजन का आनन्द लेते हुए मनोरंजन कक्षा के साथ खेल का भी आनन्द लिया। तत्पश्चात् हमने अगिन कलाश 'खुर्शीताल' जाने के लिये प्रस्थान किया। मार्ग में 'तदेववात' नामक प्राकृतिक स्थल पड़ा जहाँ पर छोटी-छोटी पहाड़ियों के साथ एक झरना बह रहा था जिसने वहाँ के सौन्दर्य में बल जोड़ लगा दिया। इस प्राकृतिक परागमन में वहाँ का निर्मल जल सुन्दर नहीं लूकता। स्वप्न, पारदर्शी जल का आनन्द लेते हुए हम लोग खुर्शीताल पहुँचे। यह भी जमीन क्षेत्र है लेकिन जहाँ की वन जलपुनिक रूप से बनाये गये हैं। जल और तलछट दोनों हैं जल में जग पर पानी रहता है। लेकिन जलज में नीरानी पानी रहता है। जहाँ का वातावरण बहुत शांत लग रहा था।

इस प्रकार ज्ञान और सेबोंक से परिपूर्ण हमारी पिकनिक अवसरणीय रही। पिकनिक से समस्त हो गयी लेकिन लक्ष्मी बाह हमारे दिलो-दिमन में जाई रहेगी।

अरुण भाट

कक्षा छ: 'अ'



## कुमाऊँ शरदोत्सव



लौहातों का हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान है। लौहार कई प्रकार के होते हैं। कुछ लौहार गले मौसम की चुनौती में बनाये जाते हैं। शरदोत्सव भी एक ऐसा लौहार है। शरदोत्सव का अर्थ होता है 'गो लौहार जो सर्दी के मौसम के आगमन पर बनाये हैं।' हर साल यह उत्सव कुमाऊँ में भी मनाया जाता है।

इस साल शरीर नगरी मैनीताल में कुमाऊँ शरदोत्सव 6 अक्टूबर से 13 अक्टूबर तक मनाया गया। 6 अक्टूबर को शाम को मालरोड पर कुमाऊँगी सांस्कृतिक झाँकी निकाली गयी। यह झाँकी अन्त में मालीताल फौरेडस पर पहुँची। इस झाँकी में कायर इन्डर ओलिया नृत्य और हवाई कलात्मक मुख्य थे। फिर करीब 6 बजे मैनीताल में शरदोत्सव का उद्घाटन प्रदेश के मन्त्रीय राजपाल श्री सुरजमान ने किया। यहाँ सभ्यता मैनीताल प्रतिष्ठान की तरफ से एक सुन्दर 'अभ्यन्ता' गैट की गयी। फौरेडस पर एक मज्जा मंच तैयार किया गया था, जहाँ कुमाऊँगी लोक संस्कृति में जुड़े झोका, चाचरी, ओलिया, हुडकिया झील, गुँगी तथा वीरय नृत्य का प्रदर्शन किया गया।

इसके तुरन्त बाद मैनीटाल में दीर्घरात्रि का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इन सब कार्यक्रमों के कलाकार कुमाऊँ के विभिन्न जिलों से आये थे। 7 अक्टूबर का दिन शुभ रहा। इसी दिन विजय दशमी मनायी गयी। जब एक तरह काका जल रहा था तब दूधारी तरह मैनेवी डिस्कॉट बुंधला में रास्ता में आस्ट्रेलिया के ऊपर विजय प्राप्त की। इस दिन एक नयी कलाकार तबला वादक जवनदीप राजन (4 वर्ष) ने तबला खदम से सब दर्शकों को प्रस्तुत कर दिया। 8 अक्टूबर को दिन में कई दर्शकों ने 'पासल जिमखाना' में भाग लिया, और सभ्यता मनोरंजन किया। करीब 10 बजे साद्वर, नदन सुंद ने दर्शकों को जादू दिखाकर आश्चर्य प्रकट कर दिया।

9 अक्टूबर को शिनेस जगत की अभिनेत्री हेमा मालिनी ने अपनी नृत्य नाटिका 'महालक्ष्मी' में साजगार गान किया। 10 अक्टूबर को किराज खान की नृत्य नाटिका 'आल व केर' देखकर लोग हंस-हँस कर लगे हो गये। इसमें मुख्य कलाकार राजू थे। 11 अक्टूबर को लोगों ने महाद्वार नजल गावक पंकज खदास की गायते सुनी। 12 अक्टूबर को महाद्वार वीर नाटिका इला अलम का पोप को हुआ।

इनके अलावा फौरेडस में डीडी मिलिङ, काल्केटडोल, डीडी, बडिसिंग व कलटे की प्रतिनिधित्व हुई। इन सब कार्यक्रमों के दौरान पूरे मैनीताल को विजली के सुन्दर झोंकों ने सजाया गया। मैनी झील, कई ईमारतों और पेड़ों की भी रा-विर्गें बल्बों से सजाया गया। इस दौरान में ट्रैफिक का भी ध्यान रखा गया ताकि लोगों को कोई असुविधा न हो। लोगों के सीट में बैठने के लिये 'पासल जखाना' की उपयोग में लाया गया। पर्यटकों के लिये भी एक सुविधाजनक व्यवस्था की गयी।

इस उत्सव के दौरान कई लोग मिले कई अनुभव हुए जो हमें ज़िन्दगी में काम आयेगे। इस तरह यह लौहार हवा और प्रकृति से सम्पन्न हुआ।

उल्लेखित जिला

कक्षा 6 व

## बरमूदा त्रिकोण जहाँ जहाज गायब हो जाता है



आज भी पृथ्वी पर कुछ ऐसे रहस्य हैं जिन पर से चर्चा नहीं हटा है। ऐसा ही एक अजस्र रहस्य है – बरमूदा त्रिकोण।

उत्तर अमेरिका के दक्षिण पूर्वतट के पास पश्चिम अंग महासागर का एक हिस्सा है, जो बरमूदा से लेकर फ्लोरिडा तथा पूर्व में बहामास और पोर्टो रिको से लगभग 40 अंश पश्चिम देशांतर तक फैला हुआ है। यह सागरीय क्षेत्र बरमूदा त्रिकोण के नाम से प्रसिद्ध है।

1945 की एक शाम को अमेरिका ने सेना के पाँच विमानों की सम्मिलित "उड़ान 19" बरमूदा क्षेत्र के ऊपर थी, तीन बजकर पन्तीस मिनट पर जब लोग इन विमानों के वापस आने के प्रतीक्षा कर रहे थे, तभी एक अजीबो गरीब सूचना आयी, "निर्धन्य कक्ष" ने उड़ान के कप्तान चार्ल्स टेलर की बीबी व्यापक चुन्नी की, "हैलो कन्ट्रोल", जब हम बरमूदा क्षेत्र में थे, उसी समय हमें लगा कि हमारे विमान हमारे निर्देशों का पालन नहीं कर रहे हैं, हमें जमीन नहीं दिख रही है और लग रहा है कि हम अपने निर्धारित रास्ते पर नहीं बढ़ रहे हैं" ... दुर्घटना ही निवन्धन कक्ष टावर ने आकाश में उनकी स्थिति जाननी चाही, तो टेलर का जवाब आया, "हमें कुछ नहीं फाट चल रहा है कि हम कहाँ हैं, हर चीज अब गड़बड़ हो रही है। हमें अब सागर भी सागर की तरह नहीं आ रहा है, ठे भगवान! यह क्या ..." और इसके साथ ही "उड़ान 19" का सम्पर्क सदा के लिये निवन्धन कक्ष से कट गया। उड़ान केन्द्रों पर खलबली मच गयी और पूरे नौ-सैनिक अद्भुत में यह खबर जग की तरह फैल गयी, तत्काल आपदा विमानों की खोज के लिये एक चतुर्त विमान "फार्टिन कैप्टनर" उड़ा। बोडी रैर बाद "फार्टिन कैप्टनर" से आखिरी सन्देश आया; हम जहाँ चाह रहे हैं वहाँ अजीब तरह की हवाएं चल रही हैं। उसके बाद वह विमान भी लापता हो गया।

उड़ान-19 के बारे में एक रहस्यमय सत्य इस समय सामने आया, जब एक संवाददाता ने अपनी पुस्तक में लिखा कि टेलर द्वारा भेजा गया आखिरी सन्देश था "अब हमारे पीछे मत आओ ... लग रहा है वे किसी दूसरी दुनिया के लोग ..." इसके बाद एक-एक करके कई विमान बरमूदा त्रिकोण क्षेत्र में गायब होते रहे, खोज चलती रही, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला, इनमें से एक था सी-उत्खाली विमान और उसके कप्तान का आखिरी सन्देश था, "हम तेजी से भूमि की ओर बढ़ रहे हैं और हमें नियन्त्री शहर की रोहियाँ भी दिखाई देने लगी हैं।" क्या इसके बाद ना तो वह विमान गिरावनी की हवाई बंदी पर चतुर्त ना उतराक पता चला। ना तो उसका पता मिला और न ही सागर की सतह पर लेल फैला।

### कहानी जलवायों के गायब होने की :-

जलवायों के गायब होने की कहानी आरम्भ हुई थी "जू एन्ड पिर्केटिंग" से जो 20 अगस्त 1800 में एकमात्र गायब हो गया था। इसके बाद 1880 तक चार अन्य जहाज गायब हुए। 1899 के अन्त

में "कुराएचल्ल अटलाटा" जहाज बरमुदा से इंग्लैंड की ओर रवाना हुआ। बरमुदा तट छोड़ने के थोड़ी ही देर बाद यह नावच ही गया। लोगों को पूरा विश्वास था कि जहाज डूबा नहीं क्योंकि आज तक ऐसा कब न हो चलता प्राप्त हुआ और न ही बाद में उसका वासी जीवित देखा गया।

कुछ वर्ष पूर्व ब्राजील के मुन्-पोत "साओपाउलो" के साथ हादसा हुआ। यह युद्ध पोत बरमुदा क्षेत्र के एकएक नावच हो गया। इस जहाज पर दो मोटर नौकाएँ खींचकर तट की ओर ले जा रही थीं। रात को एकएक सागर बहुत अशांत हो गया और सबसे मोटर नौकाओं ने पाया कि "साओपाउलो" नावच है। रात में इस क्षेत्र में चक्कर भरने वाले बानुसानी ने जो सूचना दी वे कम धीराने वाली नहीं थी, उनके अनुसार रात को जहाज नावच होने वाले क्षेत्र में अजीब तरह की रोशनियाँ देखी गयी थीं। जिनके वहाँ होने का कोई औचित्य नहीं था।

"बरमुदा रिकोम" ने कुछ जहाज एकएक नावच हुए, परन्तु फिर प्रकट हो गये लेकिन वासी उनमें नहीं पाया गया। "ऐलेन-आस्टिन" जहाज ने बरमुदा क्षेत्र में तैरते समय एक जहाज को देखा था, जिसके सभी वासी नावच थे। "ऐलेन-आस्टिन" के कप्तान ने तुरन्त कुछ अनुभवी कर्मचारी भेजे। उन्होंने जहाज घेराया ही था कि बमकर तुफान छाया और दोनों जहाजों का सम्पर्क टूट गया। दो दिनों की कोश के बाद "ऐलेन-आस्टिन" के कप्तान ने उस जहाज को फिर देखा, लेकिन वह पता लगाने पर ईश्वर सह गया कि उसके भेजे गये सभी अधिकारी और कर्मचारी नावच थे। पूरे दिन उस जहाज की निगरानी की गयी। लेकिन रात होते-होते एक बार फिर जबरदस्त समुद्री लीबी आयी और जहाज नावच हो गया। उसके बाद न तो जहाज दिखा न ही वासी।

"बरमुदा रिकोम" के लक्ष्योच्छादन के लिये वैज्ञानिकों ने कई वरीतें दी। कुछ लोग इस रहस्य का कारण भू-पुनरुत्थन जैसी घटनाओं को मानते हैं। कुछ लोगों का कह भी अनुमान है कि किसी बहुत खगोलीय पिण्ड के निवासी जो हावद मनुष्य से अधिक बुद्धिमान हैं। इस स्थान से जलवायु को मानव कर देते हैं। बहरवाज, "बरमुदा रिकोम" का रहस्य अभी भी रहस्य है।

संश्लेषित सम्पादन

खण्ड 7 अ

यदि आदमी सीखना चाहे तो हर एक भूल उसे शिक्षा दे सकती है।

— गांधी

## बापू जी

कबे कमलते बापू जी,  
जिसने घाली साज अहिला,  
मी की लकड़ी बेड़ी खोली,  
अधेरी के सामान्य ने,  
अधेरी प्यारे बापू अब दुम,  
काम अगरे रहे तुम्हारे,  
अगर नहीं आ सकते अब दुम,  
तो हमको ही यह बताओ,  
बापू हम सब कच्चे मिलकर,  
साधु थिला मोदी बापू की,

बापू की उस सान की,  
और मिथ्या जान को,  
भारत को आजाद किया,  
भारत जब बलावद किया।।  
भारत में फिर आ पड़ो,  
उमको पूरा कर जाओ।।  
स्वर्ग तुम्हें अति प्यारा है।  
सेवक घड़ी सदा है।।  
तुम्हें मोरी मन्ना है।  
जय-जय कर मनाते हैं।।



मिथिला जहाँ

कथा 7 अ



## फूल

फूल को लोड़ने के लिए  
आदमी ने जैसे ही हाथ बढ़ाया।  
तो फूल ने सफुर खर में गड़ा।  
‘मई आदमी, दूदने से पहले मुझे अपनी बात कहने दो  
और अभी जिन्या रहने दो।  
कच सुन्दर होना चाप है?’

‘फूली का आदमी से यह क्यों कहा है।

फूलों को लोड़ने से वह फूला नहीं समझता है,

दूदने फूलों को वह जिन्या जोड़ता है।

तो कभी खिल-खिलते फूलों की गर्दन कलाई की तरह जोड़ता है।’

यदि तुम्हें मुझसे प्यार है,

तो मेरी तरह कौटो में घिसो और खिलखिलाओ,

पर्यावरण में सुलभ की सुलभ भिलाओ,

और पर्यावरण में जगह-जगह फूल लगाओ,

क्योंकि फूल भी प्यार की तरह

लोड़ने की नहीं, बलिक जोड़ने की चीज है।



जयजयजय मित्र सफल

कथा 8 अ

ST. JOSEPH'S COLLEGE  
NAINITAL

*College Review*



2000



# COLLEGE REVIEW

## 2000



ST. JOSEPH'S COLLEGE  
NAINITAL

CONDUCTED BY THE CHRISTIAN BROTHERS

MAY	13TH	: St. Mary's Convent Sports Rehearsal Attended by Principal and classes 5 -10.
MAY	18TH	: Holiday - Buddha Purnima.
MAY	19TH	: St. Mary's Convent Sports Day.
MAY	20TH	: 11th Annual Athletics of St. Joseph's College, Chief Guest : Vice-Admiral (Retd) A. R.Tandon. EXEAT for boarders - Sports weekend.
MAY	21ST	: Boarders attended Airtel's sports. Chief Guest : Mr Bishan Singh Bedi.
MAY	24TH	: ICSE results from the Internet - thanks to Narmal Observatory.
MAY	25TH	: Scholastic Jacks Book Fair inaugurated at SFM. Held for three days. Parents and students of other schools attended.
MAY	26TH	: Official ICSE results received. 100% success!
MAY	29TH	: 80 boarders attended a concert at Sherwood College.
MAY	30TH	: 89 boarders attended a concert at All Saints College.
MAY	31ST	: A heavy storm all morning. Cleared up in the evening. 50 boarders (9 and 10) to Sherwood's senior concert.
JUNE	2ND	: Class 8 boarders attended All Saints' PT display.
JUNE	3RD	: Boarders of 9 and 10 to Sherwood's Gymnastics.
JUNE	6TH - 8TH	: Heavy, continuous rain. Classes held. Good attendance
JUNE	9TH	: District Magistrate declared schools closed for two days, because of rain.
JUNE	10TH	: Sunny and clear. The unexpected holiday enjoyed by all.
JUNE	12TH	: SPECIAL ASSEMBLY. AMIT PRAKASH SINGH received the Bhargava Trophy for the best ICSE result of 2100.
JUNE	15TH	: 1ST term examinations (classes 6-10) began.
JUNE	24TH	: Examinations ended. Summer break.
JULY	10TH	: Boarders returned. Classes resumed next day.
JULY	12TH	: Albert Barrow Memorial Inter-school Creative Writing Contest held in school - Best entries sent to the Council for the ISC examinations for judging.
JULY	17TH	: Parent-Teacher meeting (classes 4-10).
JULY	20TH	: Class ten viewed THE MERCHANT OF VENICE with Sir Laurence Olivier in the role of Shylock.
JULY	29TH	: David Mooney and THE FAMILY conducted seminars on leadership and on friendship.
JULY	28TH	: Boys enjoyed St. Mary's singing contest.
AUGUST	4TH	: No classes. Bandh in Narmal to protest the killing of Amarnath pilgrims in Jaranu by extremists.

AUGUST	10TH	: Heavy rain the previous night and in the morning. Nevertheless, the inter-class Computer Quiz and the General Knowledge Quiz were run off successfully.
AUGUST	15TH	: INDEPENDENCE DAY The rain held off briefly to allow the flag-hoisting ceremony to take place. Class Ten Public Speaking contest in Hindi held in the school auditorium RAKSHA BANDHAN - boarders allowed out to visit their sisters.
AUGUST	17TH	: Singing contest - 1st round and eliminations.
AUGUST	20TH	: Singing contest finals. Four principals and 100 students from Anand and St Mary's convent attended.
AUGUST	22ND	: Holiday - Jannantami. Rained all day.
AUGUST	25TH	: Brothers Christopher and Alvares of the school's Governing Council arrived on an inspection.
AUGUST	26TH	: Brothers Alvares and Christopher met the staff and emphasised the dignity of a child.
AUGUST	27TH	: Senior football team beat Anand 5-1 in the finals of the Under - 18 tournament on the Flat.
AUGUST	28TH	: Visiting brothers met students and teachers of value Education.
AUGUST	29TH	: No electricity. Water shortage. Classes continued.
AUGUST	30TH	: No classes. Water shortage. Electricity restored 6pm.
AUGUST	31ST	: Mrs Moonishti Bhas of the Teachers Centre Delmasan conducted a three-day academic audit of the Primary school and provided a useful report with suggestions for the improvement of teaching in this section.
SEPTEMBER	1ST	: Deepjyagan Paul awarded second place in the Albert Barrow Memorial Creative Writing contest.
SEPTEMBER	5TH	: Teachers' Day celebrated with a special assembly conducted by class ten, class parties and a lunch for the teachers. Retired staff members were invited to share the occasion with us.
SEPTEMBER	7TH	: Eloquence Contest - Primary school.
SEPTEMBER	8TH	: Eloquence Contest - Senior School.
SEPTEMBER	11TH	: The team for the Computer Fair and Seminar left for Lucknow with Mr A. Nelson.
SEPTEMBER	14TH	: Second Term examinations for 9 and 10 began.
SEPTEMBER	16TH	: COFAS boys return from Lucknow with no prizes but lots of experience and contacts.
SEPTEMBER	25TH	: A two-day Career Counselling Workshop for class ten conducted by The Institute of Career Studies, Lucknow.
SEPTEMBER	28TH	: Inter-school basketball finals: SUM beat Anand 38-36.
SEPTEMBER	29TH	: Inter-house table tennis finals held.



OCTOBER	1ST	: Overnight Eco-tour to Binsar - Class nine. Boarders visit Annal's fire.
OCTOBER	2ND	: Holiday - Ganesh Jayanti.
OCTOBER	3RD	: Classes 1-4 visit the Nainital Zoo. Classes 9 and 10 boys participate in an inter-school essay contest on spiritual themes conducted by the Shri Ram Chandra Mission.
OCTOBER	4TH	: Eco-tour to Kilbury - class six. Catholic boarders attended Holy Mass conducted by The Bishop of Bareilly, the Reverend Anthony Fernandes, on the occasion of the Foundation Day of St. Francis Homes.
OCTOBER	5TH	: 14 Catholic boarders received the Sacrament of Confirmation in the school chapel from the Bishop. Their parents attended the ceremony and were invited for breakfast. Dussehra leave began. Class ten left on their tour of Jaipur and Agra.
OCTOBER	9TH	: Boarders returned from Dussehra leave.
OCTOBER	10TH	: Class ten boys returned from their annual tour.
OCTOBER	13TH	: Henry Canning - ex-student 1945-47 visited the school.
OCTOBER	14TH	: Eco-tour to Maheshkheda - Class 7. Overnight trip to Kalaghar - Class 8. The rest of the school visited the St. Mary's Foss.
OCTOBER	16TH	: Inter-house badminton finals held.
OCTOBER	17TH	: Eco-tour to Kilbury - Class 5.
OCTOBER	19TH	: Class 9 football, table-tennis and badminton teams left for St. Columbas Delhi with Brother Ballantyne to participate in the 5th Edmund Rice Sports Meet. Remaining boarders of 9 and 10 went down to the flats to witness a sound and light presentation on Indian history presented by the Department of Song and Drama Government of India.
OCTOBER	24TH	: School Fete. Boarders attended St. Mary's exhibition. Edmund Rice Sports team returned with the overall trophy.
OCTOBER	25TH	: Divali leave. 47 boarders remained in school.
OCTOBER	26TH	: Divali - Fireworks on the 2nd field.
OCTOBER	29TH	: Picnic at Tiffin Top - Principal and remaining boarders.
OCTOBER	30TH	: Boarders returned - in spite of chukka-jam!
NOVEMBER	11TH	: Holiday - Guru Nanak's birth anniversary.
NOVEMBER	13TH	: Christmas Concert in the auditorium.
NOVEMBER	14TH	: Childrens Day. Teachers entertained the boys with a hilarious variety programme in the undercroft. Class nine organised the traditional farewell for the outgoing ICSE class. Deepjangan Part was selected as MR. SEM 2000.

NOVEMBER 15TH	:	Final examinations for classes 4 and 5 began. Dr. Amrita Datta of the Institute of Career Studies, Lucknow, conducted a one-day follow-up session with the class ten boys.
NOVEMBER 17TH	:	SPECIAL ASSEMBLY. Farewell to Mr. Joe Meneses who retired this year.
NOVEMBER 20TH	:	Distribution of prizes for co-curricular events. Deepthangam Pant awarded the STUDENT OF THE YEAR award.
NOVEMBER 21ST	:	Final examinations for classes 6-10 began.
NOVEMBER 22ND	:	Winter vacations for classes 1-5 began.
NOVEMBER 25TH	:	New computers installed in the senior computer lab and in the school office.
NOVEMBER 29TH	:	Christmas Mass in the school chapel. Staff dinner to bid farewell to Mr. Meneses.
NOVEMBER 30TH	:	Winter vacations began for all.

#### Rainfall and Temperature as recorded at SEM in the year 2000.

	Max. Temp.	Min. Temp.	Rainfall
January	16	2	1.30 in
February	12	1	1.98
March	21	3	1.42
April	23	8	0.95
May	26	10	5.36
June	25	14	23.08
July	22	14	17.79
August	23	15	20.75
September	22	13	11.41
October	17	13	Nil
November	18	04	0.32
December	20	04	Nil
TOTAL RAINFALL			96.00

INSTALLATION TEACHERS' DAY  
 EXHIBITION TENNIS FETE COFAS  
 DEBATE SINGING basketball  
 ELOCUTION BOOK FAIR EXAMS  
 DRAMATICS badminton QUIZ  
 Career counselling SEMINAR  
 SWIMMING PUBLIC SPEAKING  
 ATHLETICS CHILDREN'S DAY  
 FOOTBALL TABLE TENNIS  
 INSTALLATION TEACHERS' DAY  
 EXHIBITION TENNIS FETE COFAS  
 DEBATE SINGING BASKETBALL  
 ELOCUTION BOOK FAIR EXAMS  
 DRAMATICS BADMINTON QUIZ  
 CAREER COUNSELLING SEMINAR

# REPORTS

**TABLE - TENNIS**  
**WINNERS AT DELHI - 2000**



(L to R) : A. Abbas, D. Dihal,  
 S. Kapoor, R. Soti.

**BADMINTON : DELHI TEAM - 2000**



(L to R)

1st Row : V. Desai, S. Aitwal

2nd Row : A. Khan, Z. Khan

## COLLEGE BASKETBALL TEAM - 2000



(L. to R)

1st Row : J. La'Porte, T. John, T. Lodon,  
W. Dorji.

2nd Row : A. Singh, S. Shrestha, J. Cruz,  
A. Chhimwal.

3rd Row : R. Soti, S. Tewari, V. Talwar.

4th Row : G. Saighol, F. Khan.

Absent : K. Sharma

## COLLEGE HOCKEY TEAM - 2000

(L. to R)

1st Row : A. Sohi, R. Soti,  
B.P.S. Gill.

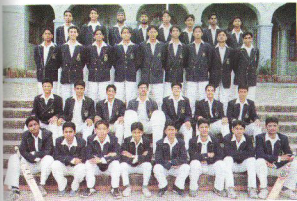
2nd Row : W. Dorji, R. Shah,  
K. S. Negi,  
T. Lodon,  
G. Dongwal,  
Y. Shah, T. John,  
D. Sharma.

3rd Row : T. Surya, P. Shah,  
S. Tewari, P. Shah,  
D. Pami.

4th Row : F. Khan, G. Saighol,  
Mr. M. D. Palmer.



## COLLEGE CRICKET TEAM - 2000



(L. to R)      **Sitting - College 'A' Team**

**1st Row** : F. Khan, T. John, T. Lodoo, S. Rathore, R. Shah, R. Sati, P. Shah, S. Tewari.

**2nd Row** : P. Dabkoti, D. Singh, U. Sharma, O. Saigal, S. Virmari, J. Paul, R. Bishi.

(L. to R)      **Standing - College 'B' Team**

**1st Row** : R. Sah, G. Dangwal, D. Sharma, A. Khan, S. Bohra, A. Marjai, S. Shrestha, Z. Khan, R. Syal.

**2nd Row** : D. Pant, H. Chowla, A. Sethi, B.P.S. Gid, J. Cret, S. Thandi, A. Singh, A. Chhimwal.

## COLLEGE LAWN TENNIS WINNERS - 2000



(L to R)

1st Row : S. Ahmed, A. Rawat, D. Spitze

2nd Row : A. Khan, B.P S. Gill

## COLLEGE BADMINTON WINNERS - 2000



(L to R)

1st Row : A. Azizul, S. Ahmed, Y. Kalafina

2nd Row : G. Saighal, F. Khan

## COLLEGE TABLE TENNIS WINNERS - 2000



(L. to R)

1st Row :

S. Neriw, A. Phartiyal, R. Sati,  
D. Sharma.

2nd Row :

G. Saighal, T. John.

## COLLEGE 'A' AND 'B' RELAY WINNERS - 2000



(L. to R)

1st Row :

A. Dhar, G. Dangwal,  
S. Bhatia, D.P.S. Gill.

2nd Row :

G. Saighal, S. Choudhary,  
T. John.



# **RELAY WINNERS 'A' DIV - 2000 SETS NEW RECORD!**



(L to R) :  
F. Khan, S. Bhora, T. John,  
S. Desori.

## **HINDI PUBLIC SPEAKING CONTEST WINNERS - 2000 (INDEPENDENCE DAY)**



(L to R) : V. R. Singh, D. Patel,  
A. Bhatt.

## INTER CLASS GENERAL QUIZ CONTEST

### ORGANIZERS - 2000



(L. to R)

1st Row : G. Lamba.

2nd Row : D. Pant, S. Chowdhary.

3rd Row : A. Agarwal, Mr. J. Paul  
(Principal), A. Verma.

4th Row : A. Bhatt.

## INTER CLASS GENERAL QUIZ

### WINNERS - 2000

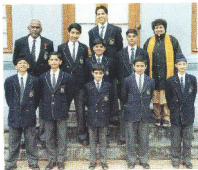


(L. to R)

1st Row : M. Kandpal, V. Bhatt,  
P. Tripathi, A. Sengupta.

2nd Row : J. Paul, M. Sati, A. Nayal,  
S. Zubair.

## INTER CLASS SINGING CONTEST WINNERS - 2000



(L. to R)

1st Row :

A. Juneja, S. Manra,  
S. Khosrushi, A. Jagati,  
A. Juneja.

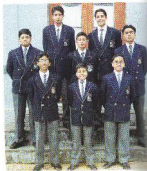
2nd Row :

Dr. O.A. Ballantyne, A. Prasad,  
S. Fernandes, J. D'Souza,  
Mrs. J. Stevens.

3rd Row :

J. Paul.

## INTER CLASS ENGLISH DEBATE WINNERS - 2000



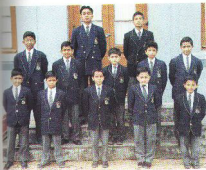
(L. to R)

1st Row : M. Gustin, N. Jolly, B. Pandey

2nd Row : L. Tewari, S. Rawat, A. Bisht.

3rd Row : J. Croet, J. Paul

## INTER CLASS ELOCUTION CONTEST WINNERS - 2000



(l. to R)

1st Row :

K. Nanda, S. Chaudhary,  
S. Lahani, A. Virmani,  
P. Disha.

2nd Row :

S. Phartiyal, V. Kathoyal,  
G. Noyal, R. Bhatt, A. Jagoti

3rd Row :

A. Bhatt, S. Rawat

## ART COMPETITION WINNERS - 2000



(l. to R)

1st Row :

M. Pandey, S. Shah, A. Bhakari,  
N. Pandey, R. Kaurpal

2nd Row :

K. Joshi, P. Shah, V. Kafaliya

3rd Row :

S. Rawat, M. Kaurpal.

## INSTALLATION OF CAPTAINS AND PREFECTS

*Felix Khan - Ten A, Gautam Saigal - Ten A*



At a simple but impressive ceremony on 9th March, the Principal, Brother M. Reddoo, formally inducted the Captains, Vice-Captains and Prefects for the year 2000. It was a special day for these



class ten boys for to be considered worthy of responsibility is indeed a great honour. The day was aptly chosen, for on this day the new class one boys joined SIM. They were there to witness the installation of the last batch of office-bearers of the millennium. The principal urged the new captains and prefects to carry out their responsibilities with dignity and honesty, serving as role models for the rest of the school.

### CAPTAINS:

KARAN SILARMA  
RAJAT SYAL  
JONNATHAN CREET  
SAURAV SHRESTHA

### VICE-CAPTAINS:

BIRPRATAP SINGH GILL  
HARSHIT CHAWLA  
FAIZ ALI KHAN  
GAUTAM SAIGAL

### PREFECTS (JUNIORS):

KUNDAN S. NEGI  
WANGCHEN DORJI  
NAMAN MALHOTRA  
(inducted later)

### PREFECTS (DAY-SCHOLARS):

GAURAV DANGWAL  
SVETANK

## INTER SCHOOL QUIZ WINNERS - 2000 (HINDI)



(L to R) :

A. Singh, A. Pandey,  
Y. Kathayat, K. Joshi,  
H. Pant.

## JUNIOR COMPUTER EXHIBITION - 2000



(L to R)

1st Row :

C. Sharma, D. Lalwal, K. Rawat,  
K. Kanda.

2nd Row :

M. Sah, M. Sand, D. P. Singh

## COMPUTER QUIZ WINNERS - 2000



(L to R) :

T. Jagati, M. Sati, Y. Kafila,  
U. Mehertra, R. D'Saingo

## COFAS TEAM - 2000 (AT LUCKNOW)



(L to R)

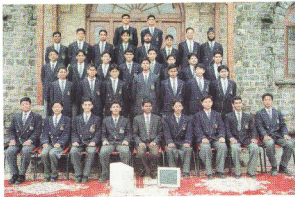
1st Row :

A. Verma, Mr. S. A. Nelson, R. Sati

2nd Row :

A. Bharti, D. Paul, S. Choudhary

## COMPUTER CLUB - 2000



(L to R)

- 1st Row** : L. Joshi, R. Bhut, G. Dangwal, B. Sati, Mr. S. A. Nelson, R. Shah, N. Jju, P. Pathwal, S. Shrestha.
- 2nd Row** : C. Rawat, A. Zaid, S. Rathore, A. Chhimwal, A. Agarwal, S. Singh, G. Lamba.
- 3rd Row** : R. Srivastava, N. Pandey, S.S. Hoshi, P. Bhatt, J. Shah, A. Shah, U.S. Rathore, P. Shah.
- 4th Row** : A. Verma, T. Surya, D. Pant, S. Thandi, B.P.S. Gill, P. Shah, A. Arora, A. Sethi.
- 5th Row** : S. Chaudhary, A. Dhall.



## NEW COMPUTERS FOR THE SENIOR COMPUTER LAB



# DEEPTANGAN PANT



**STUDENT OF THE YEAR**  
*AND*  
**MR. SEM 2000**



**AMIT KUMAR SINGH**

**WINNER OF THE**

**ANIRUDH BHARGAVA**

**TROPHY**

**FOR THE BEST PERFORMANCE**

**IN THE**

**ICSE EXAMINATIONS OF - 2000**



**RESULTS OF  
ACTIVITIES CONDUCTED  
IN 2000**

## ATHLETICS (INTER HOUSE)

### BEST MAN

A. DIV .....	SVETANK	D. DIV .....	P. PANDEY
B. DIV .....	R. SYAL	E. DIV .....	P. SAH
C. DIV .....	P. DUBE	F. DIV .....	S. MASSEY
BEST ATHLETE.....	SVETANK	MARCHING SHIELD.....	GANDHI
WINNING HOUSE.....	NEHRU	DUA SPECIAL.....	S. MASSEY C. DIV

### MARATHON, 2000

DIV	FIRST	SECOND	THIRD
A. DIV	P. SHAH	G. DARGWAL	A. BHATT
B. DIV	R. SYAL	B. BHATT	K. DARMWAL

ARDRA CUP MARATHON : P. SHAH

### HOCKEY (INTER HOUSE)

FIELDS	WINNER	RUNNER UP
FIRST	NEHRU	GANDHI
SECOND	TAGORE	PANT
THIRD	PANT	TAGORE
FOURTH	PANT	TAGORE
WINNING HOUSE :	PANT	
RUNNERS UP :	TAGORE	

### CLASS DEBATES IN ENGLISH

CLASS SEVEN	WINNERS : 7 A	BEST SPEAKER :	S. RAWAT
CLASS EIGHT	WINNERS : 8 A	BEST SPEAKER :	B. PANDEY
CLASS NINE	WINNERS : 9 A	BEST SPEAKER :	A. RISHI
CLASS TEN	WINNERS : 10 A	BEST SPEAKER :	J. CREET

### PUBLIC SPEAKING IN HINDI (CLASS 10)

(ORGANISED ON THE OCCASION OF INDEPENDENCE DAY)

FIRST	A. BHATT (10 B)	SECOND	D. PANT (10 B)
THIRD	V. R. SINGH (10 A)		

### INTER-CLASS QUIZ CONTEST

CLASSES 6 AND 7	WINNERS : 7 A
PARTICIPANTS :	M. KANDPAL, A. SANGURI, P. TRIPATHI, V. BHATT
CLASSES 8 AND 9	WINNERS : 9 A
PARTICIPANTS :	A. NAYAL, S. ZUBAIR, J. PAUL, M. BATHI

### INTER-CLASS ELOCUTION

JUNIOR : 2-5	FIRST	SECOND	THIRD
CHORAL	3B	3 A	2
CHORAL	4 A	4 B	5 B
INDIVIDUAL	A. VIRMANI (5 B)	K. NANDA (3 A)	P. BISHT (2)
INDIVIDUAL	G. NATAL (5 B)	S. LOHANI (4 A)	S. CHAUDHARY (5A)
<b>SENIOR : 6 - 9</b>			
CHORAL	7 A	8 B	7 B
CHORAL	9 A	9 B	8 A
INDIVIDUAL	R. BHATT (5 A)	S. RAWAT (7 A)	A. JAGATI (7 B)
INDIVIDUAL	A. BISHT (9 A)	V. KATHAYAT (8 B)	S. PHARTIYAL (9 B)

### INTER-CLASS SINGING COMPETITION

#### INDIVIDUAL WINNERS

GROUP ONE	CLASS 5 & 6				
FIRST	S. KHETRAPAL AND S. FERNANDES			THIRD	S. MANNA
GROUP TWO	CLASS 7 & 8				
FIRST	AYAL JUNEJA	SECOND	AMAN JUNEJA	THIRD	A. JAGATI
GROUP THREE	CLASS 9 & 10				
FIRST	J. PALL	SECOND	A. PRASAD	THIRD	J. DHOLAKA

#### CLASS WINNERS

GROUP ONE	CLASS 6	GROUP TWO	CLASS 7
GROUP THREE	CLASS 9		

### INDOOR GAMES, 2000

#### CHINESE CHECKERS

	WINNERS	RUNNER UP		WINNERS	RUNNER UP
GROUP A	S. SHRESTHA	H. CHAWLA	GROUP B	J. AUGUSTINE	K. DORJI

#### CARROMS

GROUP A	WINNERS	RUNNER UP
SINGLES	R. SATTI	A. SINGH
DOUBLES	A. SODHI & J. DHINDSA	A. BRAR & A. BRIDMAN
GROUP B		
SINGLES	J. AUGUSTINE	S. BOHRA
DOUBLES	S. BOHRA & A. BHATTIA	H. NABHYAL & F. MATTHEW

**CHESS**

	<b>WINNER</b>	<b>RUNNER UP</b>		<b>WINNER</b>	<b>RUNNER UP</b>
<b>GROUP A</b>	S. BOHRA	A. SINGH	<b>GROUP B</b>	M. DATTANI	D. WU

**SCRABBLE**

<b>GROUP A</b>	A. CHOUDHARY	J. PAUL
----------------	--------------	---------

**FOOTBALL (INTER-HOUSE)**

<b>FIELDS</b>	<b>WINNER</b>	<b>RUNNER UP</b>
FIRST	TAGORE	PANT
SECOND	PANT	TAGORE
THIRD	PANT	NEHRU
FOURTH	NEHRU	TAGORE
<b>WINNING HOUSE</b>	PANT	
<b>RUNNER UP</b>	TAGORE	
<b>CHALLENGE COLOURS</b>	S. TIWARI	

**THE EDMUND RICE SPORTS MEET NEW DELHI, 2000****FOOTBALL FINAL**

ST. JOSEPH'S COLLEGE (NAINITAL) BEAT ST. COLUMBAS SCHOOL (NEW DELHI) SCORE : 3-0

**TABLE TENNIS FINAL**

ST. COLUMBAS SCHOOL (NEW DELHI) BEAT ST. JOSEPH'S COLLEGE (NAINITAL) SCORE : 2-0

**BADMINTON FINAL**

ST. JOHNS SCHOOL (CHANDIGARH) BEAT ST. JOSEPH'S COLLEGE (NAINITAL) SCORE : 2-1

ST. JOSEPH'S COLLEGE (NAINITAL) RECEIVED ALL - ROUND TROPHY.

**VOLLEY BALL (INTER-HOUSE)**

	<b>WINNERS</b>	<b>RUNNER-UP</b>
<b>FIRST FIELD</b>	GANDHI	NEHRU
<b>SECOND FIELD</b>	PANT	NEHRU
<b>WINNING HOUSE</b>	PANT	

**SOFT BALL (INTER-HOUSE)**

	<b>WINNERS</b>	<b>RUNNER-UP</b>
<b>FIRST FIELD</b>	GANDHI	NEHRU
<b>SECOND FIELD</b>	GANDHI	TAGORE
<b>WINNING HOUSE</b>	GANDHI	

## FAREWELL MRS. TAHIR AND MR. J. P. SAH

Saurav Shrivastha - *Ten B*



The entire school gathered for a very special assembly on 17th March to express our appreciation to two members of staff who had devoted their entire working lives to SEM and were now about to retire.

The assembly began with a short prayer led by the Principal, Brother Beddoe. He then went on to thank Mrs. Tahir for the sincerity and dedication with which she had served the school ever since she joined it straight out of Art College 36 years ago. Under her able guidance the artistic talent of generations of SEM students had flourished.

Brother Beddoe also expressed his appreciation to Mr. J. P. Sah who was retiring after years of selfless service to the school as chief accountant. The Principal stressed that Mr. Sah had had an extremely responsible role to play and he - a simple and god-fearing man - had performed it with the utmost loyalty and integrity.

The assembly ended with the Principal presenting the outgoing members of staff with mementos on behalf of the entire SEM family.

## AU REVOIR BROTHER BEDDOE

Karen Sharma - *Ten B* - reports on the farewell functions



Our joy at returning to school for a new academic year was dampened by the thought that our beloved Principal, Brother Beddoe, was to leave us at the end of the month. Saturday, 23th March was declared a non-instructional day and was dedicated to expressing our love and appreciation for him.

The day began with a special thanksgiving Mass in the school auditorium at 9:00 a.m. attended by all members of the staff and the boarders. An exhibition football match among our "minis" and "juniors" teams followed.



## LAWN TENNIS (INTER-HOUSE)

### SINGLES

A DIV.  
B DIV.  
C DIV.  
D DIV.

### WINNER

B.P.S. GILL  
A. RAWAT  
S. AHMED  
D. SPITZ

### RUNNER UP

A. KHAN  
S. NEERAW  
F. MATLOOB  
S. SETHI

### DOUBLES

A DIV.  
B DIV.  
C DIV.  
D DIV.

### WINNER

K. SHARMA & N. MALHOTRA  
S. NEERAW & U.R.S. NIGIT  
T. MATLOOB & A. SINGHAI  
D. SPITZ & R. CHADHA

### RUNNER UP

A. KHAN & Z. KHAN  
R. AGARWAL & S. AITWAL  
S. AHMED & S. SANDHU  
N. MEHTA & G. RANG

### OPEN

SINGLES  
DOUBLES  
JLIA SPECIAL  
WINNING HOUSE  
COLLEGE COLOURS

B.P.S. GILL  
B.P.S. GILL & A. KHAN  
S. SANDHU  
PANT  
B.P.S. GILL

N. MALHOTRA  
A.P.S. SETHI & N. MALHOTRA

## BILLIARDS

FIRST TABLE  
SECOND TABLE  
THIRD TABLE  
COLLEGE COLOURS

### WINNER

W. DORJI  
Z. KHAN  
A. KOHLI  
W. DORJI

### RUNNER-UP

R. DRAUNID  
V. TALWAR  
H. SINGRA

## SNOOKER

### WINNER

Z. KHAN

### RUNNER-UP

N. MALHOTRA

## BASKET BALL (INTER-HOUSE)

WINNING HOUSE  
COLLEGE COLOURS

TAGORE  
I. A. CREET

### RUNNER-UP

GANDHI

## CRICKET (INTER HOUSE)

### WINNING HOUSE

TAGORE

### RUNNER-UP

NEHRU

## BADMINTON (INTER-HOUSE)

### SINGLES

A DIV.  
B DIV.  
C DIV.  
D DIV.

### WINNER

G. SAIGAL  
S. AITWAL  
S. AHMED  
Y. KAPALTIA

### RUNNER-UP

T. JOHN  
N. OBERAI  
A. TANDON  
D. SHAH

**DOUBLES**

A DIV.

B DIV.

OPEN SINGLES

WINNING HOUSE

COLLEGE COLOURS

**WINNER**

G. SAIGAL &amp; Z. KHAN

S. AITWAL &amp; R. BHATT

G. SAIGAL

TAOORE

G. SAIGAL

**RUNNER-UP**

B.P.S. GILL &amp; D. PANT

D. SHARMA &amp; N. GHEBRI

F. KHAN

**TABLE TENNIS (INTER-HOUSE)****SINGLES**

A DIV.

B DIV.

C DIV.

D DIV.

**WINNER**

G. SAIGAL

S. NEERAW

A. PARITYAL

R. SATHI

**RUNNER-UP**

T. JOHN

D. SHARMA

P. BHANDARI

L. WU

**DOUBLES**

A DIV.

B DIV.

**OPEN**

SINGLES

WINNING HOUSE

DUA SPECIAL

COLLEGE COLOURS

N. MALHOTRA &amp; G. DANDWAL

A. ABBAS &amp; R. AGARWAL

D. SHARMA

GANDHI

D. SATHI

DHIRESH SHARMA

S. BOHRA &amp; T. JOHN

D. SHARMA &amp; S. KAPOOR

T. JOHN

**INTER-SCHOOL EVENTS****1. MINIS**

STATE BANK MINIS CHILDREN FOOTBALL TOURNAMENT

MINIS 'A' LOST TO SANWAL IN SEMI-FINALS (3-1).

BEST BACK

SUKRA BOHRA

DUA SPECIAL

J. P. SATHI

**2. JUVENILE**

H.N. PANDEY INDEPENDENCE CUP CHILDREN FOOTBALL TOURNAMENT

JUVIES 'B' LOST IN QUARTER-FINALS TO AMTUL'S PUBLIC SCHOOL (1-6)

JUVIES 'A' LOST IN FINALS TO AMTUL'S PUBLIC SCHOOL IN FINALITIES (3-4)

BEST PLAYER

D. SATHI

**3. BASANT LAL SHAH MEMORIAL JUNIOR TOURNAMENT (UNDER - 18)**

FINALS ST. JOSEPH'S COLLEGE (A TEAM) VS AMTUL'S PUBLIC SCHOOL

WINNING TEAM

ST. JOSEPH'S COLLEGE (SCORE 5-1)

BEST PLAYER OF THE TOURNAMENT

S. TEWARI

MOST PROMISING PLAYER

G. SAIGAL

PLAYER OF THE MATCH

R. SATHI

BEST PLAYER (B TEAM)

R. SYAL

GOA SPECIAL  
BEST COACH OF THE TOURNAMENT

BUPA GILL (B TEAM)  
MR. M. D. PALMER

#### 4. INTER SCHOOL BASKET BALL

FINALS ST. JOSEPH'S COLLEGE VS AMTUL'S PUBLIC SCHOOL  
WINNING TEAM ST. JOSEPH'S COLLEGE (SCORE 38-34)  
MOST PROMISING PLAYER W. DOOR  
BEST PLAYER OF THE TOURNAMENT J. CREE

#### 5. OPEN 5-A- SIDE FOOTBALL TOURNAMENT ORGANISED BY THASS CLUB NAINITAL

PLAYED THREE GAMES WON ONE  
AWARDS MOST DISCIPLINED TEAM  
MOST PROMISING PLAYER LOPSAK DOORJ

### JUNIOR COMPUTER EXHIBITION RESULTS, 2000

#### INDIVIDUAL PERFORMANCE IN CLASS I-II

1. CHAITANYA SHARMA	CLASS I	FIRST
2. KALPINDERI RAWAT	CLASS I	SECOND
3. DEVESHISH LATWAL	CLASS I	THIRD

#### INDIVIDUAL PERFORMANCE IN CLASS IV-V

1. M. K. SAH	CLASS IV A	FIRST
2. D. P. SINGH & MD. SAUD	CLASS VB	SECOND
3. KAVI NANDA	CLASS IV B	THIRD
BEST CLASS OVERALL PERFORMANCE		CLASS VB
SPECIAL PRIZE FOR MAXIMUM REPRESENTATION		CLASS I

### SENIOR COMPUTER QUIZ (CLASSES 9 & 10), 2000

FIRST	CLASS 9 A	R. DRAUNQ, U. MEHROTRA, M. SATTI, T. JAGATI, T. KAFALTIYA.
SECOND	CLASS 10 A	A. VERMA, L. JOSHI, A. AGARWAL, R. SRIVASTAV, D.V.S. BATHORE
THIRD	CLASS 10 B	D. PANT, S. SHRESTHA, D. LAMBA

### ON THE SPOT PAINTING COMPETITION ORGANISED BY SHARDA SANGH, NAINITAL

ST. JOSEPH'S COLLEGE SHARED THE OVER - ALL TROPHY (MIDDLE GROUP) WITH ST. MARY'S CONVENT.

#### INDIVIDUAL WINNERS

FIRST	S. KAWAT (7A)	SECOND	M. KANDPAL (7 A)
CONSOLATION	S. SAH (4 A)	CONSOLATION	R. KANDPAL (5 B)

## CAMLN ART CONTEST, 1999

### BEST ENTRIES

GROUP A	A. KILAN, V. PANT
GROUP B	N. PANDEY, K. KHAN
GROUP C	S. SAH, M. PANDE
GROUP D	P. SAH, K. JOSHI
GROUP E	Y. KAFALTIA, R. MEHROTRA

### STATE LEVEL WINNERS

GROUP D	FIRST	R. MEHROTRA
GROUP E	FIRST	K. JOSHI

(ONLY THREE STUDENTS IN NAINITAL WON STATE-LEVEL AWARDS)

## ROTARY CLUB PAINTING CONTEST

WINNERS - A. BHAKINI, S. SAH

## HONOURABLE MENTIONS

B. S. BISHT - CLASS 1 - GOLD MEDAL IN A LOCAL KARATE CONTEST.

A. GURURANI (S B) WON A PRIZE FOR PARTICIPATING IN THE AXIL DHARTIYA - SKATING COMPETITION ORGANISED BY KUMAON SARDOGSTAV.

## SEVEN DAY STANDARD ROCK CLIMBING COURSE (ORGANISED BY NAINITAL MOUNTAINEERING CLUB)

### CERTIFICATES AWARDED

P. SAH	(S A)	GRADE A
K. NANDA	(S B)	GRADE A
A. S. GILL	(S A)	GRADE B
S. MUNGALI	(S A)	GRADE B

## ALBERT BARROW MEMORIAL ALL-INDIA ESSAY WRITING CONTEST (OPEN TO STUDENTS OF CLASSES 9-12 IN ALL ISC SCHOOLS)

DEEPTANGAN PANT (10 B) - WON SECOND PRIZE

## SNOOKER JUNIOR TOURNAMENT (UNDER 18) (HELD IN BOAT HOUSE CLUB)

NUMBER OF PARTICIPANTS : 22

### SEMI-FINALISTS

N. DAYAL	(S B)
A. S. GILL	(S A)

**EDMUND RICE TRIANGULAR MEET, 2000****ST. COLUMBA'S SCHOOL, NEW DELHI****FOOTBALL TEAM**

- |                                  |                    |
|----------------------------------|--------------------|
| 1. ANIMESH BISHT                 | 2. GURUKARAN DAPWA |
| 3. ZAMAN KHAN                    | 4. DIKSHANT DAHAL  |
| 5. YIVIK TALWAR                  | 6. U.R.S. BISHT    |
| 7. AMAN KHAN (CAPTAIN)           | 8. VIPUL DESAI     |
| 9. TRAVIS SWEENEY (VICE CAPTAIN) | 10. TENZING LODO   |
| 11. VAIBHAV TEWARI               | 12. SUNIL AITWAL   |
| 13. DRUSHYA SHAH                 | 14. DIOYUAI SINGH  |
| 15. ABDULLAH REHMAN              | 16. ASHISH BHATTIA |
| 17. STEPHEN CHAIN                |                    |

**TABLE TENNIS TEAM**

- |                    |                   |
|--------------------|-------------------|
| 1. AMJAD ABBAS     | 2. MUKUL SATI     |
| 3. SHASHANK KAPOOR | 4. DIKSHANT DAHAL |

**BADMINTON TEAM**

- |                 |                |
|-----------------|----------------|
| 1. SUNIL AITWAL | 2. ZAMAN KHAN  |
| 3. AMAN KHAN    | 4. VIPUL DESAI |

*The heights by great men reached and kept  
Where not attained by sudden flight,  
But they, while their companions slept,  
Were toiling upward in the night.*

-HENRY WADSWORTH LONGFELLOW

# SCHOLARS



**2000**

# FIRST IN CLA



▲  
Mrinal  
Karkidhyal  
1

Neelabh  
Pandey 3



▲  
Harshad  
Sharma 3A



▲  
Riju Bhatt  
5A

Snehl Joshi  
5B



Musin  
Gossain 7A



Yogendra Kulkarni  
7B



Nipun Pandey  
8B

▲  
Mukul Sati  
8A



# SS IN 2000

Arushi Kumar

9B



Manik Pande

4B



Nitish Samrat

4A



Bhaskar

Pande 7A



Aditya Negati

6B



Mohit

Kandpal 6A



Harshvardhan

Jain 7B

thayat



Deepangra

Pant 9B



Abhinav Verma

9A



Abhinav Sah (D)

6D





# ST. JOSEPH'S COLLEGE, NAINITAL

## RESULTS I.C.S.E. 2000

CENTRE No. / No. Name	ENG	HIN	HOD	MAT	SCI	ECO	CTS	COM	ART	P.E.D.	SUPV	CLASS RA	
												RES	RES
1. ALEY MEER	720	892	892 BB	824		783		802				B	PCA
2. KOND BHATT	824	882	844 CC	720	884 CCB	848						A	PCA
3. RICHAN BHATT	780	882	740 BC	783	882 BBA		802					A	PCA
4. DHEERAJ P. S. BISHT	802	882	740 BC	820	783 BBB				802			A	PCA
5. NITHESH BISHT	884	783	884 CC	828	885 CCB		783					B	PCA
6. HIMANSHU BIRJAS	882	882	783 BC	783	892 CAB		783					B	PCA
7. C. S. CHAUDHARI	743	783	824 CC	843	888 DCC				743			A	PCA
8. RITESH DARYAL	844	783	824 CC	883	824 CCB		882					B	PCA
9. ANISHDH DODIA	885	882	884 CC	844	884 CCB				821			B	PCA
10. CLIFFORD GAUSTALN	882	882	740 BC	884	844 CCB			841				A	PCA
11. HARSH GUPTA	882	882	882 AB	882	882 BBB	821						A	PCA
12. SIDDARTH JAIN	844	720	884 CC	824	884 CCB			801				A	PCA
13. SAURASH JOSHI	884	783	882 BB	821	882 CBA			881				A	PCA
14. AMHURST JYALA	783	801	740 BB	882	882 BAA	882						A	PCA
15. KUNAL KAPOOR	783	844	783 BB	743	882 CAB		783					A	PCA
16. S. KATHIYAT	882	882	882 AB	882	882 CAA		882					A	PCA
17. MRYANK KATYAL	821	882	801 AB	841	882 BBA			801				A	PCA
18. NAWAZ YAR KHAN	828	884	887 BC	887	887 DCC			824				B	PCA
19. SHASHANK KURPITI	882	882	882 BB	881	881 BAA		882					A	PCA
20. MANISH MAHESHWAR	882	882	882 BB	882	783 CBB		882					B	PCA
21. GAURAV MALHOTRA	783	882	740 BC	882	723 CBB			841				A	PCA
22. PRATEEK MISHROTRA	743	822	740 BC	743	884 CCB		882					B	PCA
23. RUCHIR MISHROTRA	888	884	824 CC	824				783	882			B	PCA
24. SUDIT MITTAL	783	783	882 AB	882	783 CBB	841						A	PCA
25. MOHT MUNDALI	743	882	884 BC	843	885 DCC		783					B	PCA
26. NISHANT MUNDALI	743	882	882 BB	882	892 CAB		882					B	PCA
27. ANUSHMAN S. NANGIA	832	882	740 BB	882	783 CBB		882					A	PCA
28. SHREYAS NANGIA	801	882	882 AB	801	821 BAA		821					A	PCA
29. VAISHAV S. NAYAL	884	882	882 BB	884	783 CBB			881				A	PCA
30. HARSH PANDE	884	882	882 BB	882	723 CBB	743						B	PCA
31. GURDESH PANT	884	882	882 AB	783	884 CCB			841				B	PCA
32. PRATEEN PANT	783	882	882 BB	824		801		882				B	PCA
33. VAISHAV PRASAD	884	824	885 CC	483	887 DCC		783					A	PCA
34. DIVYENDRA S. RAWAT	884	783	884 BC	828		783		783				B	PCA
35. VIKRAM RAWAT	884	882	884 BC	723	844 CCB			882				B	PCA
36. ANANT SAINI	888	783	884 CC	888	844 CCB	783						A	PCA
37. NITIN SAINI - I	823	783	783 BB	743	844 CCB			882				B	PCA
38. NITIN SAINI - II	824	783	824 CC	483		884		783				B	PCA
39. RAHUL SAINI	888	882	888 CC	888	828 DCC			783				B	PCA
40. ABHISHEK SHARMA	824	783	885 CC	808	885 DCC			884				B	PCA
41. JAYANT SHARMA	783	882	882 BB	882	783 CAB		882					A	PCA
42. ALISH SHERETHA	824	884	884 CC	882		723		801				B	PCA
43. AMIT PRAKASH SINGH	821	801	801 AB	841	821 BAA		821					A	PCA
44. HARSH V. SINGH	848	844	888 CC	827	887 DCC			783				B	PCA
45. RAJSHANKER SINGH	723	783	884 CC	448	884 CCB			841				A	PCA
46. VAIBHAV SINGH	884	783	885 CC	844	824 CCB	882						B	PCA
47. MANU TEJARI	834	882	885 CC	888	827 DCC			882				B	PCA
48. ROHIT TEJARI	884	821	821 AB	882	882 BAA		821					A	PCA
49. SARAT K. VERMA	824	743	885 CC	884			885		885			B	PCA
50. PARISHK. YADAV	743	882	882 BB	882	723 CBB		882					B	PCA
51. ADARSH A. SODHUKI	483	884	448 CC	885		843		884				A	PCA
52. ANURAG ANAND	882	882	783 BB	743	882 CBA	783						A	PCA
53. MANPREET S. ANAND	882	882	783 BB	882		783		841				B	PCA

54	ELUG-CHIMP B. ANAND	844	785	805 CC	318	804	785		A	PCA
55	ARUN BISHI	844	832	824 CC	828	805		832	B	PCA
56	CHETAN SINGH BISHI	887	880	882 BB	743	783 CBB	841		A	PCA
57	HARISH SINGH BISHI	884	882	884 CC	487	448 BDC	884		A	PCA
58	WAGEL BISHI	888	883	885 CC	887	888 CCG		785	B	PCA
59	SHARAD BISHI	888	728	884 CC	887		888	882	A	PCA
60	VIKRANT SINGH BISHI	891	892	883 AB	882	882 CBA	743		A	PCA
61	KAILASH CHAKRA	884	783	884 CC	887	885 DCC	884		A	PCA
62	RAH CHAKLES	743	881	783 BB	882	743 CBB		832	B	PCA
63	GOULIN MARK COBLINO	885	888	888 CC	824			881	A	PCA
64	SALTAM COJARE	885	885	885 DD	448		723	783	A	PCA
65	EDWYGO FERNANDES	884	884	845 DC	888	427 BCC	884		B	PCA
66	FAHD MATLOUS	881	783	882 BB	723	783 CBB	881		A	PCA
67	KOMAR GUPTA	884	783	884 CC	888	884 BBB	887		A	PCA
68	KOMAR GUPTA	887	882	882 AD	783	882 BAA	881		A	PCA
69	KIRAN JAIN	832	882	882 BB	884	882 CBB	884		A	PCA
70	PHARUS JOSH	785	882	785 BC	783	783 CBB	783		A	PCA
71	VINASH JOSHI	883	882	882 BB	237	882 BAA	881		A	PCA
72	KRISHNA KANDPA	884	883	885 CC	832	884 CBB	882		A	PCA
73	ANIL KHANNA	881	882	783 BB	783	882 CAA	882		A	PCA
74	ADHWAN K. KUNDRA	882	882	783 BB	844	884 CCB	881		A	PCA
75	SUDHANSHU KOTLIA	881	881	882 AB	783	783 CBB	882		A	PCA
76	CHINMAY LOHAR	882	882	882 BB	783	882 BAA	882		A	PCA
77	MOHIT MATHURIA	883	883	883 CC	884	885 DCC		783	A	PCA
78	MAYANK MEHRA	743	882	883 CC	888	488 DCC		783	B	PCA
79	NEELISH MIS-PA	883	743	885 CC	887		843	788	A	PCA
80	SUNNY NARANG	743	783	885 CC	884		884	882	A	PCA
81	PANCAJ NEGI	723	743	884 BB	487		844	783	B	PCA
82	UTPAL NARDE	783	882	743 CB	783	783 BBB	743		A	PCA
83	NEELAM NARDE	881	881	881 AB	783	881 BAA	881		A	PCA
84	PANCAJ PANT	888	783	888 DD	487	888 CCC	884		A	PCA
85	SHARADUL PRASADH	884	882	844 CC	783	884 CCB	844		A	PCA
86	PETIN SAH	884	882	885 CC	888	885 CCB	888		B	PCA
87	SANJAY SAH	783	882	783 BB	881	783 CBB	882		A	PCA
88	SUNIL SAH	743	882	884 CC	884	882	882		A	PCA
89	VAISHAV SAH	884	882	783 BC	884	783 CBB	743		A	PCA
90	VIRAS SAH	783	882	783 BB	783	783 CBB	884		A	PCA
91	VIKRANT SAH	881	882	783 AB	783	882 CBA	882		A	PCA
92	CHITAN SAH	881	882	832 BB	783	783 CBB		881	A	PCA
93	SALURSH-SATI	883	882	832 AB	881	783 CBB	881		A	PCA
94	SHASHANK SINGHAR	783	783	783 BC	743	427 BCC	783		B	PCA
95	SHASH S-LIPAL S.	882	883	743 CB	844	884 CCB	723	743	B	PCA
96	ANIL SINGH	884	723	884 CC	743	885 CCC			B	PCA
97	VAISHAV TANDON	884	882	888 CC	888		783	832	A	PCA
98	ABHINAV TENDRA	783	783	884 CB	884		882	783	A	PCA
99	LOKESH TEWARI	883	882	783 BB	884	884 BBB	882		A	PCA
100	NEELISH TEWARI	783	884	844 CB	883	845 DCC	844		B	PCA

SCHOOL TOTALS

ENTERED : 100

APPEARED : 100

PASSED : 100

"CONGRATULATIONS TO ALL THE STAFF AND STUDENTS"



The altar for Brother Beddoe's farewell Mass.



Dr. Beddoe being welcomed to the farewell function.



The end of another Academic Year - Ready for Home!

## .....AND THAT IS LIFE!

(The following reflection was shared with the school by the incoming Principal, Mr. James M. Paul, on the occasion of the special farewell assembly for the outgoing Principal, Brother M. Deddee).

*I am standing on the seashore,*

*A ship at my side spreads her white sails to the morning breeze and  
starts for the blue ocean.*

*She is an object of beauty and strength and I watch her until at  
length she hangs like a speck of white cloud come down to mingle  
with the waves.*

*Then someone at my side says :*

*"There! She's Gone!"*

*Gone? Where?*

*Gone from my sight ....that is all.*

*She is just as large in mast and hull and spar as she was when she  
left my side and just as able to bear her load of living freight to the  
place of destination.*

*Her diminished size is in me, not in her.*

*And just at the moment when someone at my side says : "There!  
She's Gone!", there are other eyes winching her coming and other  
voices ready to take up the glad shout : "There she Comes!"*

*And that is life ....*

The teachers then enjoyed a time of fellowship and a special lunch with Brother Beddoe. The highlight of the day was the evening's entertainment presented by the boarders who have always occupied a special place in Brother's heart.

The variety entertainment, which had been prepared by the boys themselves, was a delightful mixture of plays, poems and songs. The meaningful poems were heartrending and we could feel the sadness among the boys. However, Jason D'Souza's inspired dance to "Ek Pal Ka Jeena" and a hilarious skit in English by the seniors helped to revive our drooping spirits. A specially worded farewell song to the tune of "The Carnival is Over" expressed our sentiments nostalgically as the choir assured Brother that "We will always love you...even though you'll be far away."

As we come to the end of this millennium we will have fond memories of Brother Beddoe and we appreciate all that he has done to make SEM a happier place to live in.

*Abhigya Varma and Srikanth - Ten A - Report on the special farewell assembly*



On Monday, 27th March, the staff and students of SEM bid farewell to Brother Beddoe at a formal assembly held specially in his honour.

The assembly opened with Mr. J. Paul, the Principal-designate, requesting Brother to present book awards to students for outstanding academic work in 1999. In his introductory speech, Mr. Paul thanked



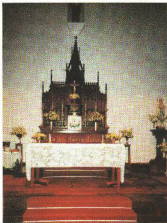
Brother for his help and guidance during the year as he had prepared to take over the reins of office from him. He noted that what had impressed him most about Brother was his genuine love for the boys of SEM.

Students and teachers then shared their thoughts and feelings, wishing Brother success and happiness in whichever sphere his duties would take him.

Brother Beddoe then delivered an emotional speech in which he expressed his appreciation to the older brothers who had inspired and guided him. He thanked the teaching and non-teaching staff for their dedication and support. He said he was leaving SEM with a sense of fulfilment. He would always cherish the joy and happiness given to him by the boys. He advised the students to enjoy SEM to the full and to make it a place worthy to live in.

The occasion was solemn one, tinged with sadness. We will remember Brother Beddoe as a strict disciplinarian yet one who cared for the students. His tenure has left an indelible mark on SEM.

## THE SCHOOL CHAPEL



## DEBATES IN ENGLISH



S. Rawat  
7A



B. Pandey  
8A



A. Croet  
10



A. Bisht  
9A



## DEBATES IN ENGLISH

*Mukul Sarf - 9A - reports on the SENIOR SCHOOL DEBATE*



After a long span of time, Mr. James Paul, our new Principal, reinitiated debates in our school.

The senior debate was held on the 5th May. The senior classes were divided into two categories : class 9A competing against 9B and classes 10A and 10B competing against each other. Two speakers, one speaking for and one against the motion represented the classes.

Class nine had a go at their topic first which was: "INDIA NEEDS MORE MOTHER TERESAS AND FEWER SHAH RUKH KHANS." After that, it was the class tens' turn to take the stage. Their topic was: "IN ORDER TO BE SUCCESSFUL, ONE CANNOT AFFORD TO BE HONEST."

In the end both the A sections emerged victorious with ANIMESH BISHT being declared the best speaker in the class nine group and JONATHAN CREET in the class ten group. On moral considerations it was a fair result with honesty prevailing over dishonesty and Mother Teresa over the Shah Rukh Khanis. A special word of thanks to Mr. Paul for providing us a platform to enhance our speaking skills and to our teachers for their help and guidance.

*Bhaskar Pande - 8A - reports on the MIDDLE SCHOOL DEBATE*



On short notice, participants from classes seven and eight prepared for their debate - a new introduction to our co-curricular programme.

The sevens had to debate on the advantages and disadvantages of living in a large family while the eights were to argue on the practicality of including co-curricular activities in school.

On the 6th of May students of classes gathered in the school auditorium to witness the debates. The participants were full of zeal and pitched arguments followed. In both the cases, those against the motion dominated. Classes 7A and 8A were ultimately declared victorious. SAURAV RAWAT was nominated as the best speaker in class seven owing to his fluency and strong rebuttals while BHASKAR PANDE was declared the best speaker in the eights' group.

The debate was a golden opportunity for the participants to develop their speaking skills and we thank our teachers for their encouragement and guidance.

## RAM NAUMI

*Abhigya Varma - Ten - A*



A special assembly was held on 10th April, to focus on the importance of Ram Naumi, one of the most significant festivals in India, as it is the birthday of Lord Ram.

A short programme was organised by the Hindi department, guided by Mrs. R. Puri, Mrs. P. Joshi and Mrs. Tomar. The programme was aimed at explaining to the students the virtues of Lord Rama's life.

I had the privilege of delivering the opening speech in which I tried to point out the highlights of Lord Rama's exemplary character. He was an ideal son, a devoted student and a noble, efficient and just ruler.

Bhajans were sung by Anshuman Sarjori (7A) and Siddharth Bhatt (5A). Anshuman impressed with his very soulful voice and Siddharth was charming.

At the end of the assembly, Mr Puri appreciated the efforts of the teachers and students. He hoped that such assemblies would become a regular feature of life at SEM, as it is important for us to be aware of the rich cultural and spiritual heritage of our country.

## CENTENARY CELEBRATIONS : ST. FRANCIS HOMES

*Savit Marney - Eight - A*



St. Francis Homes, which is a close neighbour to SEM, is run by the monks of the Capuchin order and has been closely involved with the school for a hundred years. The resident monks are chaplains to the school and provide moral and spiritual guidance to the staff and students. It was fitting, therefore, that the school be involved in its centenary celebrations which ended on 30th April.

Earlier, Christian students and staff were invited to attend separate spiritual retreats and recollections organised specially for them. However, the climax of the celebrations was on the 30th, commencing with the blessing of the new grotto at the gate of the Homes, by His Lordship, the Bishop of Bareilly, Anthony Fernandes. He also celebrated the solemn Mass, which followed under a beautiful shamiana in the grounds of the Homes. His message of the gospel was an inspiration to all those who had gathered for the occasion from Nairital and other places.

This was followed by a variety entertainment in the St. Mary's Convent auditorium, presented by members of the Parish, including those from the schools in the area. The boys of SEM presented a medley of songs in English, a group dance, a solo dance by Jason D'Souza and, finally, a hilarious skit in English called "Doctor, Doctor."

The celebrations ended with a sumptuous dinner hosted by the Fathers of St. Francis Homes.



*Sports Day*

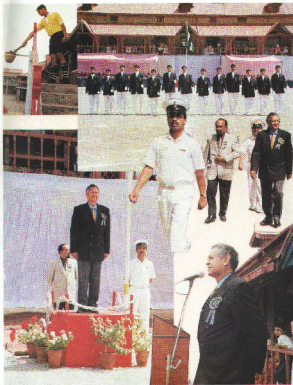


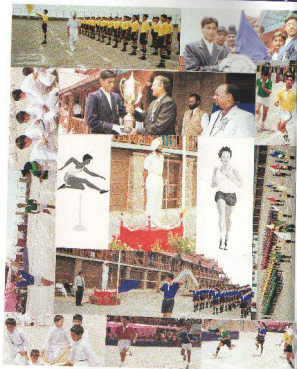


2000



# ANNUAL ATHLETIC SPORTS 2000





# ATHLETICS 2000

The athletic season at SEM is traditionally a fortnight of hectic activity culminating in a grand spectacle of colour, discipline, coordination and physical skill. The 113th Athletic Season - the final of this millennium - proved no different.



## **Major Guest - 84 - Reports on the OPENING CEREMONY**



On 8th May the ceremony marking the opening of athletic fortnight began with a colourful assembly of athletes of the four houses on the first field. The chief guest, Captain S. K. Koley of the Indian Navy, currently serving as the Group Commander of the NCC Group Headquarters Nainital, arrived at precisely 3.00 p.m. to conduct a formal inspection of the four houses. The boys stood frozen to attention as Captain Koley went around, sharing a few words with some of the boys.

Karan Sharma, proudly bearing the school banner, led the athletes in the opening march-past. The snappy "eyes-right" was worth watching. The house captains and vice-captains then took part in the torch relay with the games lamp being lit by Karan. He went on to lead the athletes in swearing an oath to participate in the fortnight-long athletic meet in loyal competition in the spirit of true sportsmanship.

Captain Koley, in his brief speech, praised the boys for their discipline and smartness. He then declared the 113th sports fortnight of SEM officially open.

## **Amanjeet Singh Sood - 108 - Reports on the ATHLETICS FINALS**

The finals of the 113th annual athletic sports meet was held on 20th May. The weather gods and the elements were in our favour. A large gathering of parents, former students, well wishers and students from neighbouring schools thronged the first field witness the show.

Once the chief guest - VICE-ADMIRAL (Retd.) A.R.TANDON PVSM AVSM VSM - arrived and was ushered to his seat, the opening march past of athletes began. The traditional march past was made more glorious this year by the presence of the PIPES AND DRUMS BAND of the KUMAON REGIMENT CENTRE. The boys marched with an extra spring in their strides. The judges did not find it easy to make a decision but finally Gandhi House was awarded the marching shield.

The athletic events then followed in quick order. The athletes gave of their best for the honour of their houses, cheered on by their supporters. Close finishes were the order of the day. Principals of neighbouring schools kindly consented to give away the prizes at the end of each set of events.

Then followed the Drill Displays, with every class of the school being represented in one item or another. The DUMBBELL DRILL of classes 5, 6 and 7 drew loud applause, as did the catchy EUBHYTHMICS item presented by the seniors.

The final march just brought down the curtain on an eventful day. As per tradition, a large number of former students of SEM participated in the final march past.

Svcrank, declared the "Best Man" in the A division, was also judged the most outstanding athlete of the meet. R. Syal, P. Dube, P. Pandey, P. Sah and S. Massey were also declared champions of their respective divisions. NEHRU HOUSE was the athletic champion of 2000.

We would like to record our special thanks to Brigadier Rajeshwar Singh DSM, Commandant of the Kumaon Regimental Centre, for making the Pipes and Drums Band of the Centre available to us on sports day.

## SCHOLASTIC BOOK FAIR

Haroon Singh - Form A



SEM's quaint auditorium was transformed at the end of May. Instead of the usual rows of red and blue moulded plastic chairs, the hall sported a festive look with bright halogen lamps throwing light on row upon row of portable bookracks. The books on display were a colourful cocktail of horror, popular fiction, classics and "how-to" books on a variety of subjects. The occasion : a book fair and sale presented by one of the country's leading publishers of children's literature: SCHOLASTIC INDIA.

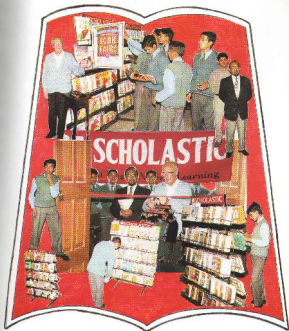
The exhibition took place on the 25th, 26th and 27th May. Mr. Paul, our Principal, who had arranged for the exhibition, hoped that the display would motivate students - and their parents - to take a greater interest in good books and reading, by exposing them to a range of high-quality publications.

Throughout the three days of the exhibition boys of various classes trooped into the hall in an organised way to view the books and buy some. The books were a feast for the eyes. A large number of parents were also seen visiting the fair, at the invitation of the principal.

Neighbouring schools were also invited to the exhibition. The boys of Annals School and the girls of St. Mary's convent attended.

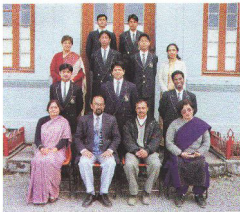
Though some complaints were heard about the exorbitant prices of some of the books, on the whole the book fair was a grand success and has surely motivated many of us to read books, which enhance our knowledge and creativity.





## Scholastic Book Fair

# EDITORIAL BOARD - 2000



3rd Row : Svetank, J. Creet

2nd Row : Mrs. P. Rathore, S. Shrestha, K. Negi, Mrs. J. Gill

1st Row : G. Lamba, U. Rathore, V. Singh

Sitting : Mrs. R. Pant, Mr. J. Paul, Mr. D. Nath, Ms. N. Rana



Mr. E. D'Gama

The Editorial Board thanks Mr. E. D'Gama and Mr. S. Manna for their help in typing manuscripts.



Mr. S. Manna

## A SEMINAR ON "TRUE LEADERSHIP"

Anupam Agarwal - Ten A

Rajat Agarwal - Ten B



Mr. David Mooney, the leader of a Delhi-based American social-service group called "THE FAMILY" conducted an inspiring seminar for classes nine and ten in the school auditorium on 25th July. The seminar, on the theme of "THE TRUE LEADER" was an instructive inter-active experience, using music, songs, skits and group discussion to deliver the message that greatness can be acquired.



The seminar began with a lovely song whose words were "My friend, will you be the one?" The words of the song which was delivered with professional enthusiasm and skill by David's team : Simona, Lisa and others, truly inspired us. David then went on to tell us about the combination of qualities that go into the making of a true leader.

We learned that a leader should have good human relations. He must be extremely self-less; his actions must be for the benefit of those he leads and not for personal gain. A leader is honest, willing to admit his mistakes and is alert towards service. Another quality of the leader is his willingness to do hard work: "Genius is one percent inspiration and ninety-nine percent perspiration."

All these qualities of a true leader were illustrated by wonderful short skits and songs. The music was outstanding and conveyed the message to us in a lively way.

In the end the audience was divided into four groups: GO-GETTERS, VISIONARIES, BRAVEHEARTS and INNOVATORS. Each team was required to prepare and perform a short skit illustrating one of the qualities of a true leader. This exercise was enjoyed immensely.

This was a fruitful seminar and will help in moulding our characters. It was interesting, instructive and exciting. It has inspired us to try and grow into true leaders.

## COMPUTER QUIZ 2000

Abhigna Verma - Ten A



This year the annual Computer Quiz was held on the 10th August. The competing teams were from classes nine and ten. Each of the four teams consisted of five members who had been selected after a screening test.

When the long-awaited day arrived, it was very gloomy and overcast; dark nimbus clouds shrouded the sky and it rained heavily. However, this did little to dampen the spirits of the quizzers of SEM and every member of the quiz teams arrived almost on time, though some of them were wet.

The quiz began at 8.30 a.m. and was conducted very efficiently by Mr. Andrew Nelson, our senior computer instructor. Right from the outset there was cutthroat competition but in the end class 9A walked away with the crown and all the honours. Classes 10A, 10B and 9B came second, third and fourth respectively.

The event was of prime importance for class 10 because based on their performance in this quiz, two students from among them were to be selected for the quiz team to represent the school at the COFAS 2006 (COMPUTER FAIR AND SEMINAR) to be held in the City Montessori School, Lucknow, later in the year.

All those who witnessed the quiz were unanimous that it was a most exciting and enjoyable event with the audience quite vocal in their support of their respective teams.

*Tanvir Jagati, a member of the winning team from 9A adds a personal note:*



A heavy downpour delayed the start of the quiz and I reached school just as the contest was about to begin. We (the 9A team) took the lead in the first round, closely followed by 10B. We managed to maintain our lead over the 2nd and 3rd rounds but were almost overtaken by 10B in the fourth. In the last round we were neck to neck with 10B and the excitement was unbearable. However, thanks mainly to the effort of Mukul Sati we soon regained a commanding edge over the others and held on to it till the end. It was great teamwork by the quizzers of 9A!

## GENERAL QUIZ 2006

*Abhigya Verma - Ten A*



The General Quiz was held on 10th August, immediately after the Computer Quiz. The highlight of the event was that it was organised and conducted by students of class ten, members of the newly formed QUIZ CLUB. Classes 6, 7, 8 and 9 participated in the quiz, with classes 6 and 7 competing together and classes 9 and 10 pitted against one another. After an exciting morning of quizzing on a variety of topics, class 7A emerged the winners in their contest while 9A won victorious in the senior division. It was an enriching experience for the participants

as well as the boys who conducted the quiz.

Deepmagan Pant, Arun Bharti, Gaurav Lamba, Aditya Chaudhary and Abhigya Verma officiated as the quizmasters for the occasion with our Principal, Mr. J. Paul conducting the video round. There were some initial hiccups but overall it was a reasonable show.

The general quiz was the culmination of a series of events conducted by the QUIZ CLUB, which made a modest beginning at the start of the year. The club consists of students who are interested in general knowledge and quizzing from classes 6 to 10 who are guided by students of class ten. It is hoped that the club will further the purpose of its formation and will continue to generate an interest in quizzing among the students of SUM.

# INTER - CLASS QUIZ 2000



D. Puri



A. Mall



A. Choudhary



A. Verma



G. Lumba

# INDEPENDENCE DAY

*Deepjyoti Paul - Ten B*



The 15th of August is a significant day in the life of our country. In SFM it is traditionally a time to reflect on the sacrifices made by our freedom fighters and to reaffirm our loyalty and faithfulness to our country.

Independence Day 2009 dawned cloudy, with a light drizzle. Nevertheless the staff, the boarders and the whole of class ten assembled at the college front at 8:30 a.m. to participate in a brief flag-hoisting ceremony.



Minaculously the weather cleared just as the function began with the Principal, Mr. J. Paul, unfurling the national flag. This was followed by the singing of the National Anthem.

In his brief address the Principal reminded us that though India had won its political freedom more than fifty years ago, the struggle for real freedom still continues - freedom from poverty, illiteracy, unemployment, narrow-mindedness. He said this struggle would have to be continued by the youth of our country. Mr. Paul also emphasised the growing need for institutions like SKM to reach out to others of our local community who are not as privileged as those who work and study here. Finally he exhorted us to take pride in being Indian.

As the rain began to come down the audience scampered to the school auditorium for the second part of the morning's programme.

The highlight of this programme was a Public Speaking Contest in Hindi featuring seven contestants from class ten. Organised by the Hindi department, the contest proved to be a great success with every speaker displaying great confidence and eloquence as they delivered passionate speeches on themes appropriate to the occasion. ARUN BHATT emerged as the best speaker, with DEEPTANGAN PANT and VIKRAM SENGH finishing second and third respectively.

The speeches were interspersed with a variety of inspirational songs, poems and prose recitations which emphasised patriotism, unity and integrity, presented by students from classes two to nine.

On the whole, the morning's programmes served to inspire us and brought to mind the famous lines of Jawaharlal Nehru : "The time has come when India's misfortunes have ended and we look forward to a bright future."

## UNDER - 18 FOOTBALL TOURNAMENT

*Amanjeet Singh Sethi - Ten B*



THE BHARAT SHAH MEMORIAL FOOTBALL TOURNAMENT - more popularly known as the UNDER-18 TOURNAMENT - is a major event held on the " flats " in August each year and attracts football teams from the schools in and around Nainital.

This year SKM fielded two teams and both did exceptionally well. The college B team made it to the semi-finals finally losing to the college A team, which played brilliant football throughout the tournament to ultimately enter the finals. Anand's Public School, on the other hand, scraped into the final, edging past Birla Vidya Mandir 1 - 0

The final match was a crucial one. SEM vs Antula is always a match that stretches the nerves with both teams hankering to gain honour. However, this year the match was one-sided and SEM won comfortably 5 - 1. ROHIT SATHI was declared the "Man of the Match." SANDEEP TEWARI, who captained the team with cool efficiency, was adjudged the "Man of the Tournament". GAUTAM SAIGAL was recognised as "The most promising player of the Tournament" while BIRPRATAP SINGH GILL earned the Dsa Special award and RAJAT SYAL was declared the "Best Player of the B team."



The players thank MR. M. PALMER for his efficient coaching and encouragement and we hope that in years to come SEM will continue to win many more such tournaments.

## TEACHERS' DAY

*Wangchen Dorji - Ten A*

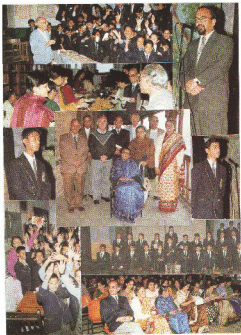


This year, 5th September, (Teachers' Day) fell on a Tuesday and a programme was conducted in the auditorium in honour of the SEM teachers. The programme was conducted by the boys of class ten with gentle suggestions and guidance from Mr. J. Menezes and Ms. D. Shah.

The programme began at 9:00 a.m. with Saurav Shrestha and Abhishek officiating as compères. Wangchen Dorji opened the proceedings with a devout prayer, in which he asked God to bless "our teachers - the shapers of our dreams and destinies". This was followed by an eloquent speech by Svetlana in which he paid tribute to the efforts of our wonderful teachers. The boys of class 6 then presented a song dedicated to the teachers. In lighter vein, Kundan Negi and some junior boys presented a selection of amusing jokes, which were well received. Selected class ten boys then chose the occasion to express their appreciation and love for their teachers who were then presented with tokens of their students' gratitude and affection. The last item on the programme was a poem by Jonathan Cress: "Teachers, hear me." Then on behalf of all the students of SEM, Saurav Shrestha wished Mr. Menezes a very special "Teachers' Day" - the last one he would be spending at SEM, as he was due to retire this year.



## TEACHERS' DAY 2000



## SEM at COFAS 2000

*Deepangana Pant and Rohit Saxi - Class Ten*



COFAS NEO-MILLENNIUM, the International Computer Fair and Seminar 2000 was organised and conducted by the City Montessori School, Lucknow, from 12th to 16th September. 41 computer wizards from schools all over the country and abroad participated in the event this year. SEM was represented by Abhigya Verma, Svetank, Arun Bhatt, Rohit Saxi and Deepangana Pant.

The event was declared open on 12th September by Mr Jagdish Narayan, Deputy Secretary for State Affairs, as a cheerful and enthusiastic crowd greeted the introductory marchpast by the teams along with their team leaders. Entertainment programmes and fireworks made the opening evening more memorable. The various competitions were held from the 13th to the 16th. The contests included cartoon-making, collage-making, use of PAINTHRUSH, computer programming, public speaking, science-fiction writing, composing and delivering of jingles and a general quiz - all related to the world of computers.

After four days of eventful competition, the event concluded with a closing ceremony and prize-distribution on the 16th. Little Rock Indian School, Karnataka, bagged the championship trophy for both the school and college sections.

Even though our teams did not win any awards, COFAS 2000 was an exhilarating learning experience for us. Apart from being enlightened about the latest technology and trends in the computer world, the event also gave us the opportunity to interact with boys and girls from various reputed institutions of India. We were exposed to the future of computers in India. We had a chance to listen to various dignitaries and imbibed good values from their speeches.



We are grateful to our Principal, Mr. Paul, and to Mr. A. Nelson, our computer instructor and team leader, for providing us with this opportunity. We also thank all the teachers who helped us to prepare for this event.

**MR. ANDREW NELSON**, a member of the school's computer faculty and team leader to COFAS 2000, adds:

SEM participated in COFAS 2000 after a gap of one year. Computer students of class ten vied with one another enthusiastically during an extensive process of selection. Deepjaganth Puri and Abhigya Verma were selected for the quiz team after rigorous written and oral selections. The same two proved to be the school's best programmers and were chosen for the SORTEK competition. Rohit Sati's artistic skills earned him the coveted slot for Cartoon and Collage making and the Paintbrush Creatik Contest. Mr. Meneses and Ms. Deepa Shah helped us select our orator, Svyatank, for the speech contest on the subject: "E-Commerce - Posing new challenges". Arun Bhatt was chosen for the Science-Fiction Writing contest and the entire team of five put their heads together to write and compose the jingle, "Computers here, there and everywhere" for the jingle contest.

The team did fairly well in Lucknow, scoring the highest in the written round of the general quiz and participating enthusiastically in all the other events. Each member of the team has definitely benefited by the exercise of working together as a team to prepare for and participate in the event. They returned from the programme considerably richer in knowledge and experience.

The COFAS team would like to thank in a very special way Mr. Paul, Mr. Meneses and Ms. D. Shah for their help and support.

## INTER-SCHOOL BASKETBALL

*Jonathan Cress - Ten A*



The Annual Inter-school Basketball tournament was held in the month of September.

We prepared ourselves for this tournament in the course of fifteen days, during which time we had to also participate in other sporting activities as well as cope with our second term examinations. However, we worked hard and did our best every time we were on the court.

We lost our first match to CRST, 25-29. Then, in spite of us putting up a good fight Ambala Public School beat us narrowly in our second encounter, 38-39. However a change of fortune came our way and our third match, against Birla Vidya Mandir, saw us through to the finals as we won 36-21 and our aggregate of points was the highest.

The finals were held on 28th September and expectations were high. The match was a closely-contested one with Aritul's - the more experienced side - enjoying an



initial advantage. At the end of the first half, Amtul's were ahead: 18-14. During most of the second half the SEM team hit back and spent a lot of time around the Amtul basket but failed to score. Amtul's pulled away, soon taking a lead of ten points. But in the last quarter luck shone on SEM. The ball began to find the basket and within one minute from full-time we were trailing by three points: 32-35.

Then, suddenly, Wangchen Dorji sank a magnificent three-pointer to help us draw level. In the dying seconds of the game we scored another two points to take the game away from our opponents.

Wangchen was judged "The most promising player of the tournament", while the captain of the team, Jonathan Crest, was awarded the "Best Player of the Tournament" trophy.



Everyone was thrilled with the outcome of the tournament, as we had not expected to win it. Our victory was testimony to the determination and dedication of the team and the hard work put in by our young coach, Fareed Ahmad.

## A WORD FROM THE PRINCIPAL



If the universal debate about whether the year 2000 marked the end of the old millennium or the beginning of a new one seemed to leave us cold here at SEM, perhaps it had something to do with the fact that we had our own unique little milestone to celebrate. For the first time since 1892, the Principal's office in 2000 would be occupied by a non-clergyman. This was indeed the end of an era and the beginning of a new one at SEM.

Understandably, there were fears, doubts and apprehensions about this innovation in leadership, but by God's grace and the openness and professionalism of all concerned, the transition has been smooth and uneventful and, as this edition of the College Review will testify, the academic year has been as full and fruitful as ever.

Full credit for the effective transfer of leadership to a lay-man must go to our dynamic and progressive Governing Council who prepared the ground for the change with foresight and wisdom. I have received tremendous support and guidance from them and from the senior brothers in residence whose collective wisdom and experience have been a guiding light to me in the course of the year. I wish to express my sincere gratitude to the staff at SEM who have taken the change in their stride and have kept the machinery of the school functioning without a hiccup.

I would also like to salute, at this time, the Christian Brothers who established this institution over a hundred years ago and have served it with selfless dedication since

## THE COLLEGE FETE

Mohit Kandpal - *Sevent A*



The annual college fete is always the highlight of all the co-curricular activities in SEM. This year the fete was held on 24th October and was organised by the X<sup>th</sup> class under the supervision and guidance of our teachers. Each class was responsible for a games-at-skill stall while food stalls were set up by "outside" parties.

There was a definite festive air in the school as the day of the fete neared. Colourful posters and charts were prepared, gifts were bought and plans were made. The morning of the 24th was a busy one. The boys started decorating their stalls by 8:00 a.m., each class competing with the others to make their stalls more attractive and colourful.

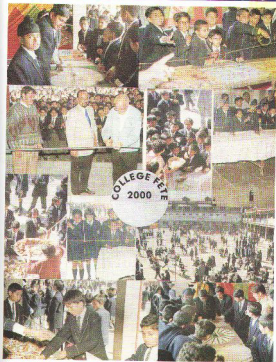
Brother T.P. Fitzpatrick inaugurated the fete at 10:00 a.m. amidst loud cheering. The first field wore a festive look with streamers and colourful walls all around it. A large gathering of parents, friends and students of neighbouring schools joined the students of SEM in making a bee-line for the food stalls which offered mouth-watering fare: pastries, mimos, pizzas, chowmein, ice-cream and soft drinks.

The games stalls attracted large crowds as well for there was a wide variety of games where you could try your luck or skill and attractive prizes to be won. Class Ten enjoyed running the "requests" stall and kept things lively with a non-stop selection of popular music.

There was a lot of fun, laughter and gaiety. Everyone seemed to be having a rollicking time. It was with some disappointment that the fete finally closed at about 2:00 p.m. There is no doubt that the fete this year was a stupendous success.

As part of the fete, a special "Lucky Ticket" draw was conducted with superb gifts as prizes for the lucky winners. The actual draw of winners took place on the 15th November. The entire profits of the fete and the lucky draw has been donated to the school's poor fund - to be used for various charitable purposes.





## THE 5TH EDMUND RICE SPORTS MEET- DELHI - 2000

*Travis Sweeney and Vipul Desai - Nine A*



We arrived in Delhi on October 20th to participate in the annual Delhi tournament. We were to compete against two other Christian Brother schools: St. Columbas, Delhi and St John's Chandigarh, in football, badminton and table tennis.



Our football team, captained by Aman Khan (Travis Sweeney - Vice-captain), had a little trouble adjusting to playing on grass, and our first game, against St. John's, ended in a one-all draw. We were disappointed with our performance and practised hard for the rest of the evening.

The whole of St. Columbas turned up to cheer their team the next morning when they played us. It was a tough match but we won by a solitary goal. St. Columbas defeated St. John's - also by a lone goal - to meet up with us in the finals which we won by three goals to one - a sweet victory.

We came second in the badminton and table tennis contests. However, this, along with our football victory, ensured that we returned to Nainital with the over-all trophy. We were back on home ground on the 24th, which was also the day of our school fete - a satisfying reward for our thrilling success in Delhi.





## THE CHRISTMAS CONCERT

Jason D'Souza - *Kiran B*



This year SFM took a break from its usual annual opera but presented a short dramatic programme on a Christmas theme on November 18th.

The programme began with a one-act play, directed by our Principal, Mr. J. Paul, called "FIT FOR A KING." Benjamin, the son of an innkeeper in Bethlehem, befriends a couple who have travelled all the way from Nazareth to participate in a census. However, he cannot persuade his father to provide them a room in the inn for Bethlehem is crowded and all the rooms are taken. So Benjamin takes them to the stable - and that is where Jesus is born, for the couple is none other than Mary and Joseph, the foster parents of the Son of God.

The play, with a mixture of humour and pathos, brought out this famous Christmas story in a memorable way. Despite a shortage of rehearsals, the cast performed brilliantly with Kevin Massey taking on the challenging role of Benjamin with great enthusiasm.

The second presentation was a pageant depicting the angel Gabriel announcing God's plan concerning the birth of Jesus to Mary and Joseph and the circumstances leading to the Nativity. The presentation was a great challenge as it was done in mime with a narrator providing a commentary. Mrs. J. Gill and Mrs P. Rathore succeeded in bringing out fine performances from their cast along with very effective costuming and lighting.





Adding a very special flavour of Christmas to the whole programme were the beautiful carols and Christmas songs delivered by the school choir under the guidance of Brother Ballantyne and Mrs. J. Stephens.

It was truly a blessed evening for all who participated and attended.



## FAREWELL TO MR. MENEZES

*Jonathan Creet - Ten A*



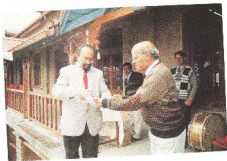
Even though the 16th of November was sunny Thursday morning, the mood prevailing in the hearts of the staff and students was a sad one. This was the morning we had assembled to bid farewell to our most beloved teacher, Mr. Joe Menezes, who was retiring this year.

The assembly began with a prayer by Jonathan Creet. This was followed by brief speeches by Sandeep Thandi, Tarun Surya, Deepthangam Part and Arun Bhatt who expressed the sentiments of the students: "Apart from being a wonderful teacher, Mr. Menezes has always been compassionate and loving. Whether training future Ramanujans in his Math classes or budding Peles and Marudomas on the games field, he has always been encouraging and enthusiastic."

Mrs. Lata Shah, speaking on behalf of the staff, pointed out that Mr. Menezes "has been instrumental in strengthening the roots and shaping the careers of all the students he has taught." Describing Mr. Menezes as a man of "great moral fibre", Mrs. Sah spoke of him being ever willing to help staff members who came to him for guidance.

Mr. Palmer recounted some amusing anecdotes about Mr. Menezes and then described him as "the most loved and popular member of the teaching staff of SEM, whose pleasing personality and gracious acceptance of his daily chores have been a great source of inspiration to each of us."





Mr. Rohit Fude, a member of the teaching staff and a former student of the school, recalled Mr. Meneses' "patient guidance, his mastery of the subject, his skill in imparting knowledge and, more important, the motivation he provided students to give of their best. He was always fair in all his dealings with us, his students."

Following the recitation of a nostalgic poem by Udai Rathore and Vikram Singh, the principal, Mr. J. Paul, expressed his gratitude to Mr. Meneses for his support and encouragement during this, his first year as principal. On behalf of students, past and present, Mr. Paul thanked Mr. Meneses for the many years of selfless and dedicated service to the school. Mr. Paul said that Mr. Meneses' association with the school, both as a student and staff member, extends over half a century; that though he will no longer be with us physically, his spirit and influence will continue to be felt here.

Mr. Meneses then delivered a brief but touching farewell speech and the assembly came to an end with the singing of the college anthem - and never was it sung with more feeling and emotion.

We wish Mr. Meneses a powerful and happy retired life and thank him once again for being a guiding light to staff and students alike.

# INTER-CLASS ELOCUTION CONTEST

## AUGUST 2000



A. Virmani

**3B****4A**

G. Nayal



R. Rhatt

**7A****9A**

A. Bisht



# INTER-CLASS SINGING CONTEST

AUGUST 2000



# PRIMARY ART EXHIBITION



them. These men, of great vision and foresight, gave of themselves unreservedly, building not only walls and structures that have withstood the test of time, but have laid down the values and traditions unique to a Christian Brother institution, that form the bedrock upon which we must continue to build.

And now, as we look ahead to a new year, I call upon all who make up the family of St. Joseph's College, to live up to the noble standards set by those who have blazed the trail ahead of us. Times have changed, educational theories and practices are in flux, social and cultural mores shift and blur with bewildering regularity, but there are enduring truths and values to which we must remain true.

These values and ideals are embodied in the life and example of the founder of the Congregation of Christian Brothers : Edmund Ignace Rice, whose compassion for the underprivileged and the marginalised and whose selfless dedication to the cause of education has shaped the lives of generations of young men all over the world.



Sunrise at SEM



# CHILDRENS' DAY

14 NOVEMBER 2000



## NOVEMBER 14<sup>th</sup> – A DOUBLE BONANZA!

*Jonathan Paul - Nive A*



November 14<sup>th</sup>, 2000 was doubly special for the boys of classes nine and ten as on that day two very significant celebrations were carried out. First of all, along with the rest of the country, we enjoyed **CHILDRENS' DAY**. However, it was also the day when class nine organised the traditional farewell for the outgoing class ten.

The day began with a unique entertainment programme presented by our talented staff for the benefit of the students. Interestingly, the programme was held in the undercroft, a makeshift stage having been constructed at one end of it. The show began with a hilarious skit presented by the staff who were in colourful attire and full of enthusiasm. The skit was a take-off on the popular nursery tale of Rapunzel, with Mr. Joe Meneses giving a memorable portrayal of the central character. The rest of the staff then made a grand appearance dressed in colourful costumes as they impersonated popular characters from nursery rhymes. Mr. Dogra then presented a Hindi song in his unique style and the programme ended with a group song by the staff who received a tumultuous ovation from the excited audience.

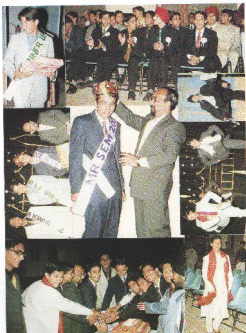
The celebrations for Childrens' Day ended with all the students receiving a special treat.

Quietness descended on the campus as most of the dayscholars headed for home, but for the boys of classes nine and ten, there was more excitement in store. The organisers in class nine ran helter-skelter tending to last-minute preparations, but finally, at about 10:30 a.m., it was time to begin. Our teachers trooped into the hall and our seniors soon made their appearance, looking elegant and dashing in their formal attire. They were welcomed at the door with the traditional aarti and soon the entertainment was underway. Opening with a short prayer song, the organisers took the assembled gathering through a fun-filled morning of dances, songs and skits.

And then came the main event! The selection of MR. SEM. Contestants paraded around the auditorium with the grace and elegance of professional models, scrutinised carefully by the judges, Mr. G. Chapman, Ms. V. Stevens and Ms. A. Singh. Ten semi-finalists emerged after the first round and this group was finally reduced to five finalists. This elite group was then subjected to the question round : they were asked the advantages and disadvantages of the internet. On the basis of their answers, Faiz Ali Khan was adjudged the second runner-up while Jonathan Croot earned the first runner-up spot. The man of the moment – MR. SEM 2001 – turned out to be none other than **DREPTANGAN PANTI**!

The morning came to an end finally with some games, a sumptuous lunch and then, as icing on the cake, a trip to town. It was a day which will remain etched on the hearts of everybody involved for years to come.

# Class Ten Farewell 2000

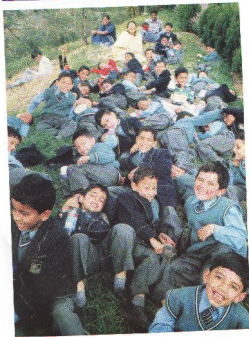


DEEPTANGAN PANT - Mr. SEM

## CONFIRMATIONS 2001



14 Catholic boys received the Sacrament of confirmation on October 5th from the Bishop of Doreilly, Anthony Fernandes



Class One - At the Zoo

# EXCURSIONS

## FAREWELL



**BROTHER M. BEDDOE**  
Principal of SEM 1993 - 2000

*Wherever we are, it is but a stage on the way to somewhere else;  
and whatever we do, however well we do it, it is only a preparation  
to do something else that shall be different.*

**-ROBERT LOUIS STEVENSON**

## FAREWELL



**Mr. Joe Meneses**

Taught Mathematics and English at SEM from  
1977 to 2000



**Mrs. Y. Tahir**

Art Teacher at SEM from 1964 to 2000



**Mr. J. P. Sah**

Senior Accountant 1967 to 2000





## 2000 DIARY

FEBRUARY	24TH	ICSE boarders returned.
MARCH	1ST	ICSE examinations commenced.
MARCH	3RD	Staff meeting.
MARCH	6TH	All boarders returned.
MARCH	7TH	2000 Academic session began.
MARCH	9TH	SPECIAL ASSEMBLY. Installation of School Prefects.
MARCH	13TH	SPECIAL ASSEMBLY. Prize books and certificates awarded to meritorious students of 1999 Farewell to Mrs. Y. Tahir and Mr. J.P. Shah who retired this year.
MARCH	17TH	Holiday - ID.
MARCH	21ST	Holiday - HOLL.
MARCH	24TH	Primary School Computer Exhibition.
MARCH	25TH	No classes. FAREWELL FUNCTIONS FOR BROTHER REDDOE.
MARCH	27TH	SPECIAL ASSEMBLY. FAREWELL TO BROTHER REDDOE.
MARCH	28TH	Brother Reddoe left school. Mr. J. Paul assumed charge of the school.
MARCH	31ST	Book exhibition and sale Daughters of St. Paul Publications.
APRIL	10TH	Special Assembly - RAM NAUMI. Athletics practice began.
APRIL	12TH	Holiday - RAM NAUMI. Mr. Vikram Srivastava - IG of Police (Security) Past pupil of SEM (1967) visited the school.
APRIL	14TH	Holiday - AMBEDKAR'S BIRTH ANNIVERSARY. St. Francis Homes Centenary celebrations. Recollection for Catholic pupils.
APRIL	19TH	Easter leave from 3:00 p.m.
APRIL	21ST	Good Friday.
APRIL	23RD	Easter Sunday. Boarders' picnic to Ranikhet.
APRIL	24TH	Boarders returned.
APRIL	30TH	St. Francis Homes Centenary Celebrations. Catholics attended the closing ceremony.
MAY	1ST	Holiday - St. Joseph's Day.
MAY	5TH	SPECIAL ASSEMBLY- Edmund Rice Day. Debates in English - Classes 9 and 10.
MAY	6TH	Debates in English - Classes 7 and 8.
MAY	8TH	Athletics - Opening Ceremony. Chief guest : Capt. S. S. Kallay, NCC Commandant.